विचार दृष्टि

वर्ष : 3 अंक : 9 अक्टूबर-दिसम्बर : 2001 रुपये : 15

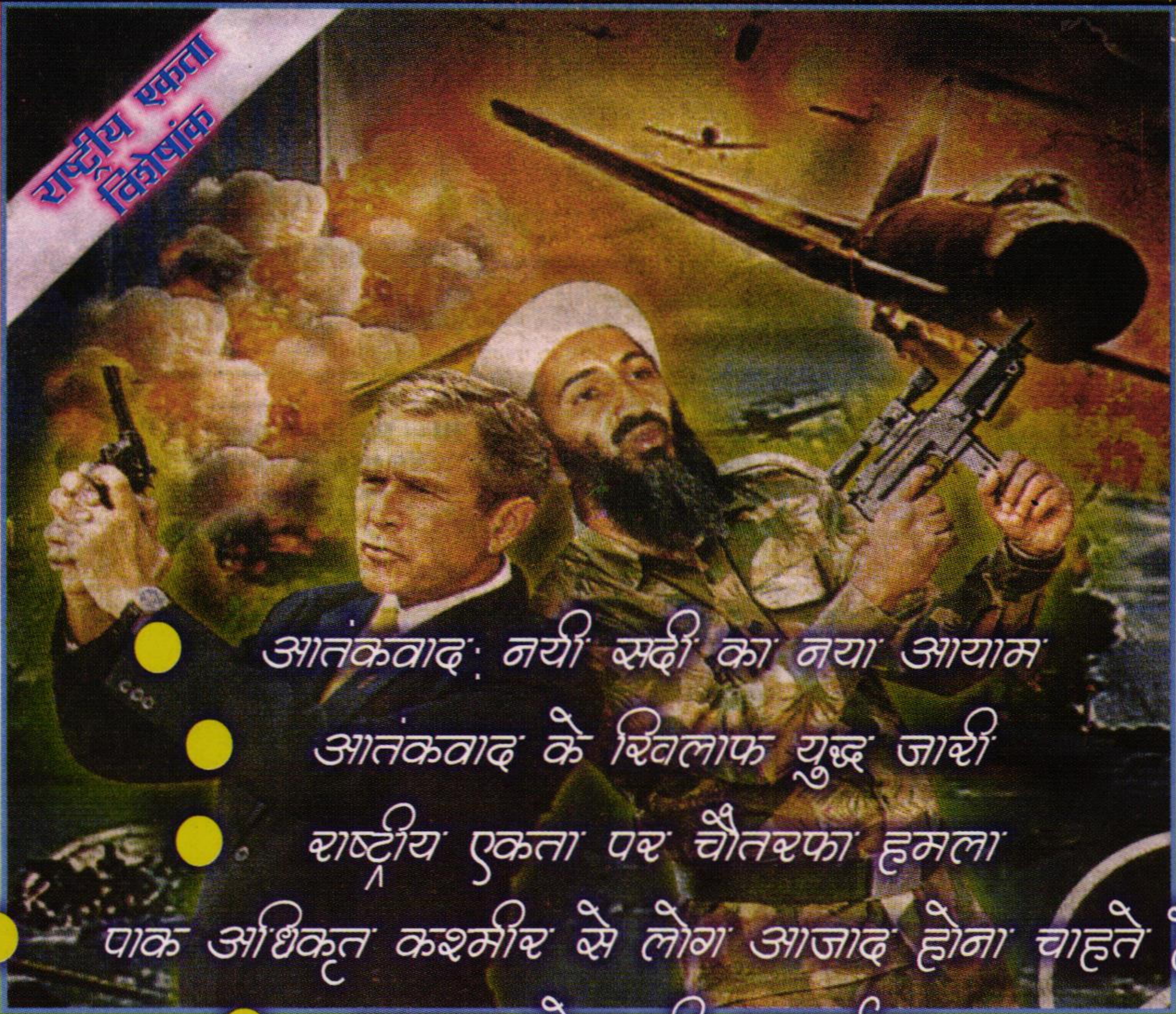

- आतंकवाद: नयी सदी का नया आयाम
- आतंकवाद के खिलाफ युद्ध जारी
- राष्ट्रीय एकता पर चौतरफा हमला
- पाक अधिकृत कश्मीर से लोग आजाद होना चाहते हैं
- सरदार पटेल की अन्तर्कथा : मणिबेन की डायरी से
- आजादी के ज़ब्त तराने

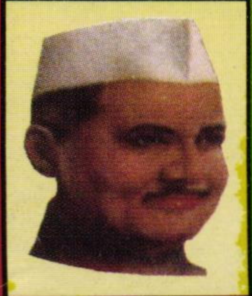

पटना स्नातक निर्वाचन क्षेत्र
के एक
भरोसेमन्द उम्मीदवार

श्री जय प्रकाश सिंह

अधिवक्ता औरों से इनका व्यक्तित्व क्यों भिन्न है-

किसान परिवार के होने के नाते

•सौम्य स्वभाव और व्यवहार कुशल

•वायदों में नहीं, कर्म में विश्वास

•बेरोजगार स्नातकों की समस्याओं से वाकिफ

•स्नातकों की पीड़ा और उनके दर्द को करीब से देखा

•सम्मानित वृत्ति के होने के नाते समाज के प्रति उनका बड़ा उत्तरदायित्व

संगठन से लगाव–

•छात्र जीवन में कॉलेज के अथलेटिक्स सचिव

•अलका संगीत महाविद्यालय, दानापुर के संयुक्त सचिव

•देवरानी कुँवर कन्हाई सिंह कल्याण समिति के अध्यक्ष

•पटना जिला अधिवक्ता संघ के 97 से अबतक अध्यक्ष

तब क्यों नहीं, आप इन्हें ही चुनें?

•आपकी आवाज बनेंगे, आपके दुःख दर्द सहेंगे।

•मन में कुछ कर गुजरने की तमन्ना है, एक संकल्प है।

•ऐसे ही मर्यादित व समर्थ उम्मीदवार को अपना बहुमूल्य मत देकर विधान पार्षद में हम अपना प्रतिनिधि भेजें।

संपर्क स्थलः– 103,पवनपुत्रा अर्पाटमेंट, फ्रेजर रोड, पटना। निवासः– गँाधी नगर, दानापुर, पटना।

फोनः0612–420629

मतदाता
पटना स्नातक निर्वाचित क्षेत्र

विचार दृष्टि

(राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित त्रैमासिकी)
वर्ष-3 अक्टूबर-दिसम्बर, 2001 अंक-9

-----पत्रिका परिवार -----

संपादक व प्रकाशकः : सिद्धेश्वर
E-mail- sidheshwarprasad@hotmail.com
कार्यकारी सम्पादक : डॉ० शिवनारायण
सह संपादक : कामेश्वर मानव
सहा.संपादक : मनोज कुमार
संपादन सहायक : अंजलि
विधि सलाहकार : न्यायमूर्ति श्री बी०एल०यादव
शब्द संयोजन : शशि भूषण, दीपक कुमार
साज-सज्जा : दिलीप कुमार सिन्हा
प्रकाशकीय कार्यालयः दिल्ली
ई०'50, एफ०एफ० सी०, झंडेवालान
रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055
विज्ञापन व प्रसार कार्यालयः दिल्ली
सुधीर रंजन, प्रबन्ध सम्पादक
कुमारटेक कम्प्यूटर्स, यू०-207, शकरपुर,
दिल्ली-92, दूरभाषः 2230652

ब्यूरो प्रमुख

मुम्बईः वीरेन्द्र याज्ञिक ☎ 8897962
कोलकाताः जितेन्द्रधीर ☎ 4692624
चेन्नईः डॉ० मधु धवन ☎ 6262778
तिरूवनंतपुरमःडॉ०रति सक्सेना ☎ 446243
बैंगलूरः पी०एस०चन्द्रशेखर, ☎ 6568867
भुवनेश्वरः शशिभूषण मिश्र
हैदराबादः डॉ० ऋषभदेव शर्मा
अहमदाबादः वीरेन्द्र सिंह ठाकुर ☎ 2870167

प्रशासकीय कार्यालयः

'दृष्टि' 6, विचार विहार, यू-207,शकरपुर
विकास मार्ग, दिल्ली-110092
फोन-011-2230652,फैक्स-011-2225118

संपादकीय व पत्राचार कार्यालयः

'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1, दूरभाष-228519
मुद्रकः प्रोलिफिक इनकारपोरेटेड
एक्स-47, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेज-2, नई दिल्ली-20

मुख्य वितरकः

कुमार बुक सेन्टर, ए०-67, क्रिश्चन कॉलोनी, पटेल चेस्ट, नई दिल्ली
दूरभाषः 7666084(p.p)
मूल्यः एक प्रति 15 रुपये
आजीवन सदस्यः1000 रुपये

रचना और रचनाकार

	पृष्ठ
पाठकीय पन्नाः	2
सम्पादकीयः	3
विचार प्रवाहः	5
भगवाकरण नहीं, भारतीयकरण- डॉ० वैद्यनाथ शर्मा	5
संस्मरणः	7
जिन्होंने जीवन को तराशा नहीं	7
राष्ट्रीय एकताः	8
आजादी के ज़ब्त तराने- जितेन्द्र धीर	8
राष्ट्रीय एकता पर चौतरफा हमला- डॉ० राधाकृष्ण सिंह	10
साम्प्रदायिकता राष्ट्रीय एकता में रोड़ा- गुलाबचन्द कोटाड़िया	12
राष्ट्रीय एकता एवं मीडिया- रत्नेश कुमार गौतम	14
देश की एकता के बाधक तत्व- डॉ० एन० चन्द्रशेखरन नायर	16
जलते-प्रश्नः	18
आजाद होना चाहते हैं पाक अधिकृत. राधेश्याम तिवारी	18
व्यंग्यः	20
सिर पटकने की कला- डॉ० रमाशंकर श्रीवास्तव	20
साहित्य-समाचारः	21
आवरण कथाः	26
मलयालम साहित्य और राष्ट्रीय चेतना- नृपेन्द्र नाथ गुप्त	26
साहित्यः	28
कहानी- एक हवेली की उर्मिला शुक्ल	28
सम्मानः	30
कोफी और नॉयपाल को नोबेल	30
गतिविधियां	32
दिल्ली में गबन पर संगोष्ठी	32
काव्य-कुंजः	36
गिरीश चन्द्र, विराट, जगदीश, मधु	36
शख्सियतः	39
राष्ट्रपिता गाँधीः महात्मा क्यों?- कृष्ण कुमार विद्यार्थी	39
पूरे कश्मीर के हिमायती थे पटेल.... डॉ० रामसिया सिंह पटेल	41
जे०पी०का सपना जो पूरा नहीं हुआ नीतीश कुमार	43
हम रहें या न रहें पर यह देश.....	45
राजनीतिक नजरियाः	
जार्ज फर्नांडीस पुनः रक्षा मंत्री	46
सेल्वन नए मुख्य मंत्री	46
सांसदों ने वेतन-भत्ते बढ़ाए	47
कला-संस्कृतिः	49
भारतीय संस्कृति में एकता........ अमर नाथ 'अमर'	49
समाजः	51
मामला एक टॉपर का ए०के०विश्वास	51
आतंकवादः	52
आतंकवाद के खिलाफ युद्ध जारी	52
मियां की जूती मियां के सिर	53
अमन का दुश्मन लादेन	54
न्याय जगतः	56
उच्चतम न्यायालय का फैसला	56
समाचार विश्लेषणः	57
देश को मजबूर नहीं मजबूत सरकार	57
प्रफुल्ल को दूसरी शादी की सजा	57
जनता ने विद्रोह का बिगुल फूंका	58
आम की गुठलियों से स्वागत	59
गांव-जवारः	60
किसानों का हक छीनने की साजिश	60
धरती की माटी- कृष्ण कुमार राय	61
श्रद्धांजलिः	62
एक और आवाज खामोश हो गई	62
समदर्शी भावना से ओत-प्रोत	63

पत्रिका-परामर्शी

1. डॉ० बालशौरि रेड्डी, चेन्नै
2. डॉ. श्यामसिंह 'शशि', दिल्ली
3. श्री गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव, अहमदाबाद
4. श्री जियालाल आर्य, पटना
5. प्रो. रामबुझावन सिंह, पटना
6. श्री जे. एन. पी. सिन्हा, दिल्ली
7. कविवर गोपी वल्लभ सहाय, पटना
8. श्री बाँकेनन्दन प्रसाद सिन्हा, पटना

रचनाकार के विचारों से पत्रिका-परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं।

पत्रिका उत्तरोत्तर अग्रसर

विचार दृष्टि का नया अंक मिला। अनुगृहित हूँ। पत्रिका उत्तरोत्तर आगे बढ़ रही है और निश्चित रूप से इसकी सामग्री, गुणवत्ता एवं इसके कलेवर में आशातीत सुधार हुआ है। विश्वास है शीघ्र हीं यह हिन्दी की श्रेष्ठत्तम पत्रिकाओं के समकक्ष खड़ी हो सकेगी। आप अकेले इस अभियान को चला रहे हैं यह आप के ही भगीरथ मनोबल के कारण है। हम सब सौभाग्यशाली हैं कि आप जैसा खेवनहार इस पत्रिका को प्राप्त हुआ है। आपको अनेक साधुवाद।

गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव, अहमदाबाद

महत्वपूर्ण घटनाओं पर प्रतिक्रिया

सादर वन्दे। **विचार दृष्टि** का जुलाई-सितंबर अंक मिला पढ़ने पर प्रसन्नता हुई। महत्वपूर्ण घटनाओं पर प्रतिक्रिया पढ़कर बड़ा संतोष हुआ। जब जब पत्रिका प्रकाशित हो एक प्रति भेजने का कष्ट करें।

वीणा जैन, बैंगलोर

पत्रिका में सब कुछ अच्छा

विचार दृष्टि के जुलाई-सितम्बर 2001 अंक की प्रति आदरणीय प्रो० रामबुझावन बाबू के सौजन्य से मिली। आप सब-कुछ समेट कर अच्छी पत्रिका निकाल रहे हैं। **तथागत अवतार तुलसी** पर इस पत्रिका में छपे सारे अखबारों में छपे-किस पर यकीन किया जाये? कृष्णकुमार की कहानी मार्मिक है। उन्हें बधाई! आपकी पत्रिका से मैं प्रसन्न हूँ। इसमें सब-कुछ अच्छा है। आपकी पत्रिका दीर्घायु हो, मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

डॉ० दीनानाथ शरण, पटना

मरुस्थल में मरुद्यान

'पाला' में आपसे भेंट हुई। आपने कृपापूर्वक **'विचार दृष्टि'** की प्रति भेंट की। अब पढ़ पाया हूँ, इसलिए प्रतिक्रिया भेज रहा हूँ। साज-सज्जा एवं सामग्री की दृष्टि से अति संपन्न यह पत्रिका दिल्ली से प्रकाशित अन्य पत्रिकाओं से सफलतापूर्वक टक्कर ले सकती है। इसमें राजनीति के साथ, साहित्य, कला संस्कृति एवं काव्य-कुंज जैसे स्तंभ मरुस्थल में मरुद्यान जैसे हैं। सर्वदृष्टि से जीवंत पत्रिका के संपादन/प्रकाशन हेतु मेरी बधाई स्वीकारें।

हिन्दी के प्रति आपकी चिंता, सेवाएं एवं कार्य प्रणम्य हैं।

चन्द्रसेन विराट, इन्दौर

इसने साहित्यिक पत्रिका की गरिमा बढ़ाई

यह देखकर सच्चे अर्थ में प्रसन्नता हुई कि यह त्रैमासिकी पाठकों के रुचि-वैविध्य से युक्त सामग्री की व्यापकता एवं कला वरेण्य मुद्रण की मोहकता जैसे अपने गुणों से राष्ट्रीय ख्याति ही नहीं, वरन् सीमान्त पारगामिनी ख्याति के स्पर्श की क्षमता से सम्पन्न हो गई है। इस पत्रिका ने न केवल बिहार की, अपितु समग्र हिन्दी संसार की साहित्यिक पत्रकारिता की गरिमा बढ़ाई है। सफल और सार्थक सम्पादन के लिए पत्रिका-परिवार को शतशः साधुवाद!

डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव, पटना

पत्रिका का राष्ट्रीय स्वरूप

आपके कुशल संपादन में **विचार दृष्टि** में निरन्तर निखार आता जा रहा है। देश की ज्वलंत समस्याओं पर आपका बेबाक सम्पादकीय बड़ा ही मार्मिक और विचारोत्तेजक होता है। उत्तर भारत के साथ ही अब आपने दक्षिण भारत की भी राजनीतिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों को अपनी पत्रिका के दायरे में समेटकर पत्रिका को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान कर दिया है जो निश्चित ही एक सराहनीय कदम है। अंक-8 में आर्थिक उदारीकरण पर आपके गंभीर चिंतन ने बेहद प्रभावित किया। अंक-7 में आपका बहुप्रतीक्षित लेख 'रेणु के उपन्यासों में आंचलिकता' भी पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ। रेणु की रचनाओं में आपकी गहरी पैठ है, बड़ी उपयोगी जानकारी प्राप्त हुई। बधाई!

कृष्ण कुमार राय, वाराणसी

गलीच में जिंदा रहने की कला

विचार दृष्टि अंक 8 की अनेक रचनाएं तथ्य परक, विचारोत्तेजक सारगर्भित हैं जो पाठक को बहुत आगे तक सोचने को मजबूर कर देती हैं। 'आरक्षण 80 प्रतिशत लोगों के लिए धोखा', 'आर्थिक उदारीकरण के दौर में ....', 'कबीर का समय और समाज', 'गलीच में जिन्दा रहने की कला' आदि विशेष रूप से उत्कृष्ट और पठनीय हैं। 'गदर के बहाने धर्मान्ध मानसिकता' सही दृष्टिकोण है साम्प्रदायिक विषाक्तता से मुक्ति का।

वर्तमान राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, साहित्यिक समस्याओं का 'विचार दृष्टि' अपने दृष्टिकोण से अध्ययन कर मानवतावादी हल प्रस्तुत करने का प्रयास कर रही है। उत्कृष्ट सम्पादन के लिए हार्दिक बधाई स्वीकार करें।

डॉ० राम सिया सिंह, सतना, म०प्र०

जरा इनकी भी सुनें

1. ओसामा बिन लादेन के खिलाफ सबुत पक्के।
-पाक राष्ट्रपति जनरल परवेज मुशर्रफ

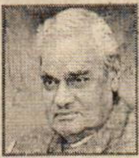

2. पाक समझ ले, हमारे सब्र की भी सीमा है।
-अटल बिहारी वाजपेयी, प्रधानमंत्री

3. भारतीय संस्कृति के प्रशंसक और आलोचक हैं नायपाल
-हिन्दी के वरिष्ठ कथाकार निमर्ल वर्मा

4. अटल और मुशर्रफ दोनों देशों के बीच की समस्याओं के समाधान के लिए संजीदा कोशिशें करें।

- संयुक्त राष्ट्र महासचिव कोफी अन्नान

5. भारत के सब्र का प्याला कब भरेगा?
- फारूक अब्दुल्ला, मुख्यमंत्री

6. लादेन ने दो बार मेरी हत्या की कोशिश की थी।
- बेनजीर भुट्टो

7. लादेन को हवाले कर दो हमले रोक देंगें।
- अमरीकी राष्ट्रपति जार्ज बुश

8. अदालत के फैसले से राबड़ी सरकार पर कोई खतरा नहीं।
- लालू प्रसाद, पूर्व मुख्यमंत्री बिहार

आतंकवाद : नयी सदी का नया आयाम

यों तो आतंकवाद एक ऐसा पुराना रोग है जिससे विश्व के अधिकतर राष्ट्र जूझते रहे हैं किन्तु इस बार पिछले 11 सितम्बर को विश्व के सर्वशक्तिशाली देश अमरीका स्थित न्यूयार्क के विश्व व्यापार केन्द्र के दो टावरों तथा वाशिंगटन स्थित रक्षा मंत्रालय के पेंटागन भवन को दो अपहृत विमानों द्वारा आतंकवादियों ने हमले कर उन्हें जिस प्रकार ध्वस्त किया उससे सम्भवत: पूरे विश्व को यह अहसास हो गया है कि अब आतंकवादी पूरी मानवता पर हावी हैं। जिस प्रकार भिन्न-भिन्न तलों से चार विमानों का अपहरण हुआ और उन इमारतों को भेदने के लिए उन्हें इस्तेमाल किया गया, इसके लिए निश्चित रूप से प्रभूत साधनों, प्रशिक्षण, अनुशासन, प्रतिभा एवं सजग योजकता की आवश्यकता है। कहना नहीं होगा कि यह आतंकवाद की तदर्थ घटनाओं से भिन्न है। आतंकवाद ने नयी सदी में नया आयाम ग्रहण कर लिया है। यह आतंकवादी अपराध की घटना नहीं वरन् आतंकवाद युद्ध पिपासा का इज़हार है। इस आतंकवादी हादसे ने अपहृत विमान का अणुबम के समान भयानक उपयोग कर डाला। सुरक्षा के सभी परम्परागत तरीकों की ब्यूह रचना को भेद दिया गया है। सारी अमरीकी खुफिया तंत्र और सुरक्षा एजेंसियां अपने राष्ट्र के स्वाभिमान एवं बर्बादी का मूकदर्शक बनकर देखती और हाथ मलती रह गयीं। अमरीकी इतिहास में 11 सितम्बर का मंगलवार दिन एक ऐसे काले दिन के रूप में याद किया जाएगा, जिस दिन अपनी तथाकथित अत्याधुनिक रक्षा प्रणाली की डींगें हांकने वाले अमरीकी रक्षा प्रणाली की धज्जियाँ उड़ाते हुए कुछ आत्मघाती आतंकवादियों ने एक मामूली से समय में उसके लगभग 20 हजार ऐसे लोगों को मौत के घाट उतार दिया जो समाज के सर्वोत्तम व्यक्ति कहे जाते थे। आश्चर्यजनक रूप से इतिहास की समय-शिला पर 21 वीं सदी की प्रथम कालिमा के सघन अंधेरों को पूरी दुनिया ने देखा और एक स्वर से स्वीकार किया कि आतंकवाद अब पूरे विश्व के अमन के लिए खतरा है।

इस बात से कोई इंकार नहीं कर सकता कि अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद अब विश्वव्यापी चुनौती है। नयी सदी एक साथ कई चुनौतियों को लेकर उपस्थित हुई है। अभी तक हम केवल भूख,गरीबी, बेकारी, यातना और पाखंड से ही लड़ रहे थे, किन्तु अब तो साम्प्रदायिकता, जातिवाद, नस्लवाद और भूमण्डलीकरण के नाम फैलाए जा रहे मनुष्य विरोधी तंत्र के साथ-साथ आतंकवादियों का भी मुकाबला करना है। भारत तो पिछले दो दशक से आतंकवादियों का दंश झेल रहा है। पहले पंजाब, फिर कश्मीर, मुंबई ही नहीं, पूर्वांचल के कई क्षेत्रों में आतंकवाद का घिनौना चेहरा उजागर होता रहा है और वहाँ सैकड़ों-हजारों लोगों को कत्लेआम किया जा रहा है। कश्मीर विधान सभा पर हमला कर उग्रवादियों ने लगभग 42 लोगों को मौत के घाट उतार दिए,यह ताजी घटना है। भारत बार-बार अमरीका के आगे गुहार-मनुहार में लगा रहा कि इस तरह का आतंकवाद बन्द किया जाए, फिर भी अमरीका के कानों पर जूँ तक नहीं रेंगा। लेकिन आज उसे पता चला कि हिंसा का दर्द कैसा होता है। अमरीका ने बबूल के जो पेड़ दुनिया के तमाम हिस्सों में लगाए थे, उनके काँटे अब उसे चुभने लगे हैं। आतंकवाद की गंभीरता उसे तब समझ में आयी जब आतंकवाद ने उसके द्वार पर दस्तक दी। दरअसल अमरीका को यह पता नहीं था कि आतंकवाद गरीब-अमीर में फर्क नहीं करता। अमरीका में हुए आतंकवादी हमले से अब यह सिद्ध हो गया है कि कोई देश कितना शक्तिशाली क्यों न हो वह आतंकवाद के अभिशाप से तबतक कारगर तरीके से नहीं निपट सकता जबतक उसे विश्वव्यापी दृष्टि से नहीं देखा जाएगा। मुझे ऐसा नहीं लगता कि मात्र **लादेन** जैसे खूंखार आतंकवादी के मार गिराने से इस समस्या का निदान निकल आएगा क्योंकि उसके जैसा हजारों छोटे-मोटे लादेन पैदा हो गए हैं जो विश्व के कोने-कोने में अपनी आतंकवादी गतिविधियों से दहशत फैला रहे हैं।

आज विश्व को हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई या इनके धर्म से कोई खतरा नहीं है। खतरा है तो उस उन्माद से जो धर्म की झीनी चादर ओढ़कर व्यक्ति को धर्मान्ध बना देता है, उसे गुमराह कर देता है। उन्माद जब बोलता है तो सिर चढ़कर बोलता है। इसे किसी धर्म, जाति या मजहब से क्या लेना-देना? आम जनता चाहे किसी भी राष्ट्र की हो, इस्लामी हो या गैर इस्लामी वह आतंकवाद की समर्थक नहीं हो सकती। क्योंकि आतंकवाद के जबड़े हर जगह अतंत: जनता को ही चबाते हैं। धार्मिक कट्टरता किसी भी रूप में फलदायी नहीं होती क्योंकि यह एक ऐसी राक्षसी प्रवृति है जो पहले दूसरों का खून चुसती है फिर अपनों का ही चूसना शुरु कर देती है। 1980 के दशक में पंजाब ने उन्माद को झेला। 1992 में कुछ उन्माद-ग्रस्त लोगों ने अयोध्या में मस्जिद गिरा दिया। आज से लगभग चार माह पूर्व त्रिपुरा में संघ प्रचारकों की हत्या हुई। एक उन्मादी ने उड़ीसा में एक पादरी और दो बच्चों को जिन्दा जला दिया। कश्मीर में आए दिन हिन्दुओं और मुस्लिमों की हत्यायें हो रही हैं। कैसे बाँधेंगे इन लोगों को एक परिभाषा में? ये लोग कहाँ नहीं

हैं? कभी कोई **खुमैनी** हो जाता है, कभी **सद्दाम** तो कभी **लादेन**।

भौतिक बम से ज्यादा खतरनाक मानवीय संवेदनाओं का बम बन जाना होता है। भारतीय समाज के साथ-साथ अन्तर्राष्ट्रीय समाज आज जितना असंवेदनशील है, उतना शायद पहले कभी नहीं रहा है। बढ़ती हुई मानवीय असंवेदनशीलता, दिन-व-दिन संकीर्ण होती राजनीति राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय एकता के आधारों को भयानक रूप से कमजोर बना चुकी हैं। समय के आइने में यदि हम देश-विदेश की घटनाओं पर नजर डालते हैं तो बीतते समय के साथ आइना टूटता नजर आता है। टूटे हुए आइने में तमाम छोटे-मोटे भयानक घृणित चेहरे स्पष्ट उभरकर सामने आते हैं। देश व दुनिया के हर कोने में हर दिन कुछ न कुछ ऐसा होता रहता है, जिससे राष्ट्रीयता ही नहीं पूरी मानवता को गहरा आघात पहुँचता है।

कुछ इसी भाव से प्रेरित होकर राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित इस वैचारिक पत्रिका का इस बार **राष्ट्रीय एकता विशेषांक** निकालने का निर्णय लिया गया। प्रयास यह हुआ है कि राष्ट्रीय एकता के सन्दर्भ में विभिन्न विषयों पर देश के सुप्रसिद्ध चिन्तकों व विचारकों की चिन्तनधारा को सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किये जाएं। साथ ही इसी विशेषांक से शुरू किया जा रहा है एक नया स्तम्भ - **जलते प्रश्न**, जिसके तहत समसामयिक घटनाओं पर अपनी पैनी दृष्टि डाल रहे हैं सुपरिचित पत्रकार, कवि व साहित्यकार **राधेश्याम तिवारी**। भारतीय ज्ञानपीठ के बाद इन दिनों वे **दैनिक भास्कर** के सम्पादकीय में अपनी सेवाएं अर्पित कर रहे हैं।

हाँ, तो हम बात कर रहे थे आतंकवाद की। अमरीका में हमले के बाद कई देशों में खुशियाँ मनाई गईं। खुशियाँ मनाने वाले लोग निश्चित रूप से बीमार हैं, रूग्न हैं। इनका इलाज होना ही चाहिए। जब मनुष्य के हाथ कमजोर हो जाते हैं तो प्रकृति अपनी लीला प्रारम्भ करती है। माध्यम बुश बनें या और कोई इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। आतंकवाद के खिलाफ अफगानिस्तान में 7 अक्टूबर से शुरु युद्ध का अभियान जारी है। वैसे भी योजना के पहले चरण में इस अभियान को नाम दिया गया- **ऑपरेशन नोबेल ईगल**। जैसे-जैसे विभिन्न फौजी दस्तों की तैनाती का काम आगे बढ़ा, इसका नाम बदलकर **ऑपरेशन इनफिनिट जस्टिस** रख दिया गया। आक्रमण शुरू होने पर इस अभियान को **ऑपरेशन एंड्योरिंग फ्रीडम** कहा जा रहा है। आतंकवाद के खिलाफ यह अमरीकी अभियान न्याय के लिए उठाया गया कदम है ताकि आतंकवादी भविष्य में ऐसी हरकत करने का साहस न कर सकें। अमरीकी राष्ट्रपति **जॉर्ज बुश** के अनुसार इस युद्ध के पीछे एक मानवीय दृष्टिकोण भी है। इसी दृष्टि से इसे **न्याय युद्ध** भी कहा गया है। हलॉकि यह भी सच है कि औपनिवेशिक मानसिकता वाले देश सदैव **न्याय युद्ध** का अपने मतलब के लिए उपयोग करते रहे हैं। इतिहास इसका साक्षी है। आज भी अमरीका अफगानिस्तान पर हमला कर तालिबान से खुंखार आतंकवादी **ओसामा बिन लादेन** को सौंपने की रट लगा रहा है और उसके सौंपे जाने पर हमले बन्द करने की बात करता है। तब यह प्रश्न स्वाभाविक है कि एक लादेन के पकड़े जाने पर क्या आतंकवाद का खात्मा हो जाएगा। दूसरी ओर इस युद्ध को लम्बे समय तक चलाने की बात भी की जा रही है। इस स्थिति में क्या इससे दुनिया भर में तबाही और हिंसा नहीं फैलेगी? इस पर भारत को बड़ी गंभीरता से सोंच-विचार कर अपना कदम आगे बढ़ाना है। वैसे युद्ध किसी भी कीमत में फायदेमंद नहीं होता क्योंकि उसमें अधिकतर निरपराध लोग ही मारे जाते हैं। किन्तु मानवता की रक्षा के लिए यदि युद्ध अनिवार्य हो जाए तो उसे लड़ना भी जरूरी हो जाता है, परन्तु जिस मानवता की रक्षा के लिए उसे लड़ा जा रहा है, वह उसके खात्मे का कारण न बन जाए इसका ख्याल रखा जाना चाहिए।

आतंकवाद कहाँ-कहाँ पनपता है, कहाँ-कहाँ इसे संरक्षण मिलता है, कहाँ इसका प्रशिक्षण दिया जाता है, भारत को इसका पूरा अनुभव हो चुका है। अमरीका को इस युद्ध में भारतीय अनुभवों का लाभ उठाकर ऐसी नर्सरियों को जड़मूल से नष्ट करना होगा तभी इस युद्ध की सार्थकता सिद्ध होगी। इस क्रम में अमरीका व ब्रिटेन द्वारा पाकिस्तान स्थित जैश-ए-मोहम्मद सहित 39 आतंकी संगठनों को प्रतिबंधित करने का कदम सराहनीय है। इधर कश्मीर के आतंकवादियों के खिलाफ की जा रही कार्रवाई के लिए भारत लगातार दबाव बनाने में सफल रहा है जिसका सीधा असर पाक राष्ट्रपति जनरल मुशर्रफ पर पड़ा है। यही कारण है कि अमरीका भारत से कश्मीर के मामले को ऐसी परिस्थिति में न उठाने के लिए अनुरोध करता रहा है। अमरीका के विदेश मंत्री **कोलिन पावेल** की पाक और भारत यात्रा भी सम्भवत: भारत तथा पाकिस्तान के बीच तनाव कम करने और सम्बन्ध सुधारने के ख्याल से दबाव पैदा करने के लिए हुई। दरअसल अमरीका ऐसे समय में जहां पाकिस्तान को कहीं से भी मुसीबत में डालने की स्थिति में नहीं है, वहीं भारत को नाराज नहीं करना चाहता है। इन सब घटनाओं से इतना तो स्पष्ट है कि अमरीका द्वारा आतंकवाद के खिलाफ अफगानिस्तान में लड़ी जा रही लड़ाई की समाप्ति तक भारत को कश्मीर पर किसी प्रकार की बयानबाजी या सैनिक कार्रवाई न करने के लिए समझाने का प्रयास जारी है। उधर केन्द्रीय गृहमंत्री लाल कृष्ण आडवाणी ने भी जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद की समस्या को भारत की अपनी समस्या मानते हुए उसका समाधान भी अपनी ताकत से करने की जो बात कही है वह स्वागतयोग्य है। हाँ, एक बात का और ख्याल रखना होगा कि जिस आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई लड़ी जा रही है वह इस्लामी आतंकवाद से लड़ी जा रही है, न की इस्लाम से। जेहाद की आड़ में हिंसक कार्रवाई को अंजाम देना इस्लाम ही नहीं किसी भी मज़हब में कहीं नहीं लिखा है।

भगवाकरण नहीं, भारतीयकरण

❑ डॉ० वैद्यनाथ शर्मा

भगवाकरण शब्द पिछले कुछ वर्षों से मूल शब्द 'भगवा' का राजनीतिकृत विशुद्ध एक राजनीतिक शब्द बन गया है जो पिछले कुछ महीनों से भारतीय राजनीति के मंच पर हंगामेदार मुद्रा में राजग विरोधी राजनेताओं, साँसदों, विधायकों एवं राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं द्वारा उछाला जा रहा है। इस शब्द ने हाल के कुछ महीनों में राजग विरोधी खासकर भारतीय जनता पार्टी विरोधी जोरदार और आक्रामक अभियान के एक विस्फोटक शब्द का रूप ले लिया है। कुछ वर्षों पूर्व इसी 'भगवाकरण' शब्द के अग्रज 'साम्प्रदायवाद' शब्द ने भारतीय राजनीति के मंच पर हँगामेदार तहलका मचाया था और आज भी उस शब्द के प्रयोग की सार्थकता कुछ लोगों के लिए यथावत बनी हुई है, लेकिन जनसामान्य की दृष्टि में वह उतना सार्थक और महत्वपूर्ण नहीं रह गया है।

भगवा शब्द भारत के सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक जीवन-रूपों से जुड़ा शब्द है। इस शब्द के साथ एक शब्द ध्वज भी जुड़ा हुआ है जिसके गौरवमय स्वरूप और प्रभाव को लोग जानते हैं।

आज राजनीतिक गलियारों और मंचों पर भगवाकरण शब्द का प्रयोग पाठ्यपुस्तकों का भगवाकरण, शिक्षा का भगवाकरण, इतिहास का भगवाकरण एवं अकादमिक संस्थानों का भगवाकरण आदि के रूप में किया जा रहा है। दूसरी ओर वामपंथी दल, वामपंथी बुद्धिजीवी, वामपंथी विचारक, वामपंथी शिक्षाविद् और वामपंथी इतिहासकार और इतिहास-विशेषज्ञ इस शब्द को हर जगह उछाल-उछाल कर इस शब्द को एक भूत की तरह खड़ाकर इसका प्रयोग एक राजनैतिक गाली के रूप में कर रहे हैं। इस माहौल में मीडिया को भी प्रचार-प्रसार और विज्ञापन का एक तथाकथित हथियार मिल गया है।

भगवा शब्द क्या, कब और कहाँ?

भगवा शब्द भारत के सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक जीवन-रूपों से जुड़ा शब्द है। इस शब्द के साथ एक शब्द ध्वज भी जुड़ा हुआ है जिसके गौरवमय स्वरूप और प्रभाव को लोग जानते हैं। भगवाध्वज विशुद्धरूप से भारतीय महिमामंडित आदर्शजीवन दर्शन से जुड़ा शब्द है। भगवान श्रीकृष्ण ने कुरूक्षेत्र के मैदान में जिस रथ पर आरूढ़ होकर अर्जुन को कर्मशील, सही और स्वस्थ जीवन का जो संदेश दिया था उस विजय-रथ में लगा गौरवमंडित ध्वज यही भगवाध्वज था। राष्ट्रसपूत महाराणाप्रताप और छत्रपति शिवाजी के शौर्य, प्रताप और साहस का प्रतीकध्वज यही भगवाध्वज था। आर्यावर्त भारतभूमि के गौरवमय अतीत के प्रकाश-पुण्य पंथ-संबंधी अवधारणा से जुड़ी सामाजिक और सांस्कृतिक संस्था राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा पूजित राष्ट्रध्वज यही भगवाध्वज है। इस रूप में यह भगवा शब्द हमारी राष्ट्रीय, संस्कृति की गौरव-गरिमा का वाहक एक लक्षणा तथा व्यंजनामूलक शब्द है। लेकिन दुर्भाग्य की बात यह है कि अटल बिहारी वाजपेयी के प्रधानमंत्रित्व काल में इनके विरोधियों ने इस शब्द को सम्प्रदायवाद शब्द के पर्यायवाची शब्द के रूप में सर्वत्र उछाला है जिसका उपयोग और प्रयोग राजनीतिक गाली का ही एक रूप है। ऐसे लोग इस शब्द का उपहास कर रहे हैं क्योंकि वे मानते हैं कि यह शब्द रूढ़िवादिता, साम्प्रदायिकता और धर्मान्धता का प्रतीक है। वे यह मानते और इस बात की वकालत करते हैं कि केन्द्र में स्थापित वाजपेयी जी के नेतृत्व वाली राजग सरकार खासकर मानव संसाधन मंत्री मुरली मनोहर जोशी की शिक्षा मंत्री के रूप में निभाई जा रही भूमिका विशुद्ध रूप में भारतीय शिक्षा- पद्धति, संस्कृत-ज्योतिष शास्त्र-अध्ययन-अध्यापन के स्वरूप और इतिहास तथा दर्शन की दृष्टि को रूढ़िवादिता, साम्प्रदायिकता और धर्मान्धता की ओर ले जाने का प्रयास है। इन लोगों के विरोध के इन स्वरों ने विशुद्ध रूप से एक राजनीतिक प्रचार का रूप ले लिया है।

शिक्षा का भगवाकरण

मुरली मनोहर जोशी के शिक्षा मंत्रित्व काल में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद ने राज्यपरिषदों के सहयोग से राष्ट्रीय पाठ्य क्रम का एक प्रारूप तैयार किया है। पाठ्यक्रम के स्वरूप का यह निर्माण-कार्य वर्तमान केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री द्वारा लादा गया कोई सुनिश्चित योजनातहत क्रियाशील कार्य नहीं है। 1986 में तत्कालीन प्रधान मंत्री राजीव गाँधी के काल और 1992 की राष्ट्रीय शिक्षानीतियों में इस बात का स्पष्ट उल्लेख है कि हर पाँच साल में पाठ्यक्रम का पुनर्आकलन और संशोधन होना चाहिए। इसी बीच इस संदर्भ में यह तथ्य ध्यातव्य है कि मानव संसाधन विकास मंत्रालय के कार्यों से जुड़ी संसदीय स्थायी समिति ने 1999 में जो 61वीं रिपोर्ट दी थी, उसमें मूल्यों पर आधारित शिक्षा के लिए स्पष्ट आग्रह किया गया था। इस समिति में सभी प्रमुख राजनैतिक दलों के प्रतिनिधि , सदस्यों के रूप में शामिल थे। इस समिति के अध्यक्ष काँग्रेस के वयोवृद्ध नेता शंकर राव चौहान रहे हैं। यहाँ यह विचारणीय है कि मूल्यों पर आधारित शिक्षा का अभिप्राय क्या है? वस्तुत: मूल्यों पर आधारित शिक्षा का अर्थ तो यही है न कि जो शिक्षा शन्ति, प्रेम, न्याय, सत्य, अहिंसा, सद्भाव, करुणा, नीति, ईमानदारी आदि से जुड़ी हो, वही शिक्षा मूल्यों पर आधारित शिक्षा कही जाएगी। ऐसी शिक्षा से ही मानव व्यक्तित्व का सही और सम्यक विकास संभव है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद् ने इसी आलोक में नवम्बर 2000 में राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की एक रूप रेखा राष्ट्रीय विमर्श के लिए प्रस्तुत

की। ज्योंहि इसकी प्रस्तुति हुई कि राजग विरोधियों और वामपंथियों ने शिक्षा का भगवाकरण, शिक्षा का भगवाकरण चिल्ला-चिल्लाकर भगवाकरण का एक भूत खड़ा कर दिया। उनकी दृष्टि में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद् द्वारा प्रस्तावित भारतीय मूल्यों पर आधारित पाठ्यक्रम की यह रूप रेखा विशुद्ध साम्प्रदायिक है जो शिक्षा स्वरूप का साम्प्रदायिककरण कर रही है।

यह बात विचारणीय है कि अँग्रेजों के शासनकाल से चली आ रही शिक्षा की पद्धति और पाठ्यक्रमों में स्वतंत्र भारत की नवचेतना के आलोक में भारतीय मूल्यों पर आधारित तथ्यों के समावेश से नवपरिवर्तन लाना और शिक्षा के माध्यम से भारतीय जीवन-दर्शन के शाश्वत मूल्यों के उद्घाटन का प्रयास करना शिक्षा का भगवाकरण या साम्प्रदायिकताकरण करना कैसे हो सकता है। यह प्रयास तो भारतीय राष्ट्रीयकरण प्रयास के रूप में स्वागतयोग्य होना चाहिए। "विडंबना यह है कि जो लोग मजहब की आड़ लेकर शिक्षा-व्यवस्था चला रहे हैं उनपर कोई आरोप लगाने का साहस तथाकथित प्रगतिशील राजनीतिज्ञ नहीं कर पाते, लेकिन जिस क्षण कोई भी भारतीय मूल्यों के अनुरूप शिक्षा-व्यवस्था के पुनर्गठन की बात करता है, उसकी आलोचना होने लगती है। ऐसी आलोचना करनेवाले लोगों को यह समझना और जानना चाहिए कि भारतीय जीवन-मूल्य शाश्वत मूल्य हैं जिसे रूढ़िवादिता, साम्प्रदायिकता, अंधविश्वास और बौद्धिक संकीर्णता से कोई लेना-देना नहीं है, लेकिन "यह दुर्भाग्य की बात है कि भारतीय मूल्यों को सही परिप्रेक्ष्य में देखने और समझने की शक्ति हम खोते जा रहे हैं" और 'रामचरितमानस' ऐसे विश्ववंद्य ग्रंथ को हम साम्प्रदायिक ग्रंथ और विश्वकवि तुलसीदास ऐसे शीर्षस्थ कवि को हम सांप्रदायिक कवि के रूप में उछालने में तनिक भी नहीं हिचकते हैं और अपने को प्रगतिशील समझने का दंभ भरते हैं। ऐसे लोगों की दृष्टि में तो राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भी सांप्रदायिक नेता कहे जा सकते हैं क्योंकि उन्होंने भी अंग्रेजों द्वारा लादी और थोपी हुई शिक्षा पद्धति की जगह भारतीय मूल्यों पर आधारित नई शिक्षा-पद्धति लागू करने की वकालत करते हुए कहा था-"वर्तमान शिक्षा में छात्र-छात्राओं को अपनी सभ्यता जंगली, अंधविश्वासी और व्यवहारिकता शून्य बनाकर पेश की जाती है। इस शिक्षा की रचना ही उसे उसकी परंपरागत भारतीय संस्कृति से पृथक करने के लिए हुई। यदि शिक्षित युवकों से अनेकानेक संपूर्णत: अराष्ट्रीयकृत नहीं होते तो कारण यही है कि उसमें प्राचीन संस्कृति का मूल गहरा है जिसको निर्मूल करने वाली विपरीत शिक्षा भी पूर्णत: निर्मूल नहीं कर सकी। यदि मेरी सत्ता होती तो मैं अधिकतर वर्तमान पाठ्य पुस्तकों को नष्ट कर देता।"महान प्रगतिशील संत स्वामी विवेकानंद का शिक्षा के संदर्भ में यह कथन भी क्या सांप्रदायिक कहा जा सकता है?" The ideal is that we must have the whole education of our country spiritual and secular and it must be on national times through national methods as far as practical. "

क्या ज्योतिष और वैदिक गणित की शिक्षा भी भगवाकरण का प्रयास है? ज्योतिष और वैदिक गणित की शिक्षा के प्रचार और प्रसार के कार्य को भगवाकरण का प्रयास बताया जा रहा है। लोगों द्वारा किया जा रहा दोषारोपण सत्य से परे है। लोगों को जानना चहिए ज्योतिष शास्त्र का विषय विशुद्ध रूप से एक उपयोगी विज्ञान है जिसकी पढ़ाई भारत के साथ-साथ बाहर के देशों के विश्वविद्यालयों में भी वर्षों पूर्व से हो रही है। अभी इस देश में 18 ऐसे विश्वविद्यालय हैं जहाँ ज्योतिष की पढ़ाई दशकों पूर्व से हो रही है। भारत से बाहर के कई अन्य ऐसे देश हैं जहाँ विधिवत इस विषय की पढ़ाई वर्षों पूर्व से चल रही है। आज ज्योतिष की शिक्षा अमेरिका,जर्मनी तथा ब्रिटेन आदि कई देशों में दी जा रही है। कैपलर कॉलेज अमेरिका में ज्योतिष में एम०ए० की डिग्री दी जा रही है। लेकिन भारत में यदि इसकी विधिवत शिक्षा देने के लिए पाठयक्रम तैयार करने का प्रयास किया जा रहा है तो उसे भगवाकरण का प्रयास कहा जा रहा है। इस दुराग्रहपूर्ण कथन की क्या सार्थकता हो सकती है? वैदिक गणित के संबंध में भी यही दुराग्रहपूर्ण सोच क्रियाशील है। इस बीमार सोच वाले तथाकथित प्रगतिशील छिद्रान्वेषियों को यह जानने का प्रयास करना चाहिए कि वैदिक गणित एक ऐच्छिक विषय के रूप में पाठ्यक्रम में शमिल किया गया है जो ऐन्सियेंट हिस्ट्री विषय की तरह ऐन्सियेंट मैथमेटिक के रूप में विषयगत आधारभूत विषय की तरह ग्राह्य में हैं।

इतिहास परिषद की भूमिका एवं इतिहास का भगवाकरण:

इतिहास परिषद की भूमिका और इतिहास विषय की शिक्षा को भी इस संदर्भ में आलोचना का विषय बनाकर इस तथ्य को काफी शोरगुल के साथ उछाला जा रहा है कि सरकार गलत तरीके से देश के इतिहास को लिखवा रही है। ऐसे आलोचकों को यह जानना चाहिए कि इस देश में वाजपेयी की सरकार ने नहीं, अपितु 1972 में केन्द्र में सत्तासीन सरकार ने ही इतिहास परिषद की स्थापना की थी और उसे "राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में स्वतंत्रता के पूर्व का इतिहास दस खंडों में प्रकाशित करने का दयित्व सौंपा था और इस कार्य के लिए उस परिषद के नाम चालीस लाख रुपये आवंटित किए गए थे। कुछ वर्षों के बाद लगभग ढ़ाई करोड़ रुपए खर्च होने के बाद 1940-46 के राजनैतिक घटनाक्रम का इतिहास के रूप में तथाकथित प्रगतिशील इतिहासकारों द्वारा विवरण प्रस्तुत किया गया।" तत्कालीन राजनैतिक आंदोलन के प्रस्तुतीकरण के संदर्भ में जो विवरण परोसा गया उसके अनुसार 1939-40 के दो वर्षों में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में राष्ट्रपिता गाँधी की भूमिका का विवरण 46 प्रपत्रों में और कम्युनिस्ट पार्टी की तथाकथित राष्ट्रीय भूमिका का विवरण 762 प्रपत्रों में प्रस्तुत किया गया है। इस तथ्य को भारत का हर बुद्धिजीवी अच्छी तरह जानता है कि स्वतंत्रता संग्राम में बापू की भूमिका क्या थी और कम्युनिस्ट पार्टी की क्या थी? इस तरह के दोषपूर्ण और झूठे विवरण की तरह कई अन्य ऐसे महाझूठे विवरणों से भरे इतिहास के पुनर्लेखन के लिए किये गये प्रयास को भगवाकरण के प्रयास की संज्ञा दी जाय तो यह बुद्धि की बलिहारी नहीं तो और क्या है?

वस्तुत: मार्क्सवादी चिंतन से प्रभावित लोग इस बात को मानते ही नहीं है कि भारत का प्राचीन इतिहास या अतीत बहुत गौरवशाली था और इसकी संस्कृति पाँच हजार वर्षों से भी ज्यादा पुरानी है और इस देश का ज्ञान-विज्ञान की उपलब्धियों के क्षेत्र में बड़ी ही शानदार भूमिका रही है। यही कारण है कि वे भारतीयकरण के हर राष्ट्रीय और सांस्कृतिक प्रयास को भगवाकरण का प्रयास मान बैठते हैं। उनकी यह गलत सोच एक सुनियोजित राजनैतिक सोच के रूप में पहले भी कार्य करती थी और आज भी कर रही है। मार्क्स से प्रभावित ऐसे तथाकथित चिन्तकों, बुद्धिजीवियों और राजनेताओं को विश्व प्रसिद्ध महान वैज्ञानिक और अणु शक्ति के प्रथम साक्षातकर्ता **आइंसटीन** की इन पंक्तियों को पढ़ना तथा समझना चाहिए कि-"हम भारतीयों के बहुत ऋणी हैं जिन्होंने हमें गिनना सिखाया,

जिसके बिना कोई वैज्ञानिक खोज संभव ही नहीं है।" प्रसिद्ध पुस्तक **स्टोरी ऑफ सिविलाइजेसन** में उसके लेखक **डूरेन्ट** के इस कथन को मार्क्सवादी चिन्तक क्या अर्थ लगाएंगे-"भारत समस्त प्रजातियों की माँ है। संस्कृत भारतीय भाषाओं की माँ है। वह माँ है हमारे दर्शन की, हमारे गणित की, वह माँ है इसाई धर्म में समाहित तमाम आदर्शों की। वह माँ है लोकतंत्र की। बहुत अर्थों में वह माँ है हम सबकी।" विश्व चर्चित लोकप्रिय पुस्तक **'सीक्रेट लुक्स ऑफ इस्ट'** के लेखक **मैक्समूलर** को क्या वे साम्प्रदायिक और भगवावादी चिन्तक कहेंगे जिन्होंने उस पुस्तक में यह लिखा है-" हम सारी दुनिया को देख जाएं यह पता लगाने के लिए कि कौन सा वह देश है जो सभी तरह की संपत्तियों, शक्तियों, सुन्दरताओं की प्रकृति-प्रदत्त विरासत से परिपूर्ण है। पृथ्वी पर स्वर्ग है वह। वह भारत है।" क्या **विलियम जेम्स** की इस पंक्तियों में भी उन्हें भगवाकरण का भूत दिखाई पड़ता है?-"प्राचीन भारतीय ग्रंथों और वेदों से हमने शल्य चिकित्सा की कला, औषधि-विज्ञान, संगीत भवन-निर्माण आदि बहुत सी चीजें सीखी है। यह सब संस्कृति, धर्म विज्ञान, नैतिकता, कानून, ब्रह्माण्ड शास्त्र आदि का इन साइक्लोपीडिया है।"

इन विदेशी विद्वानों की सम्मतियों के आलोक में वामपंथी विचारकों को अपने दुराग्रहपूर्ण विचारों, सोच और सम्मतियों में सुधार लाना चाहिए और अपनी झूठी गालबजाने वाली प्रकृति से मुक्ति पाने का सही प्रयास करना चाहिए। हम भारत देश के नागरिक हैं। हमारी शिक्षा, संस्कृति, राजनीति तथ्य अर्थनीति विषयक दृष्टि को अंधविश्वास, दुराग्रहपूर्ण मतवाद तथा अंधानुकरण की प्रकृति से मुक्त होना चाहिए। हमारी शिक्षा, इतिहास, दर्शन और संस्कृति विषयक कोशिशों का एक ही लक्ष्य होना चाहिए-मानवतावादी साये में पलनेवाले राष्ट्रीय चरित्र का विकास। भारतीयकरण की आधारशिला पर ही वैश्वीकरण की अटारी अपनी सार्थकता का सही परिचय दे सकती है।

संपर्क: पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष
मगध विश्वविद्यालय
बोधगया (बिहार)

सीताशरण शर्मा: जिन्होंने जीवन को तराशा नहीं, बल्कि उसकी अनगढ़ता में जीवन देखा

❑ *सिद्धेश्वर*

किसी व्यक्तित्व की पहचान उसके आचरण और चिंतन से होती है। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा से जुड़े सीताशरण शर्मा के आचरण और चिंतन का कायल उनका हर शुभेच्छु व सहकर्मी है। स्व० शर्मा जी ने जीवन को तराशा नहीं, बल्कि उसकी अनगढ़ता में जीवन देखा, सुन्दरता देखी। समय-समय पर चेन्नै तथा बैंगलोर में आयोजित संगोष्ठियों में व्यक्त उनके विचार तथा विभिन्न विषयों पर उनके उद्गार याद दिलाते हैं कि जब तक मनुष्य के पास अतीत की यादें हैं, वर्तमान का चिंतन है और भविष्य के सपने हैं तब तक दुनिया जिन्दा है। जाने-अनजाने उनके शब्द, उनके ये विचार, उनके जज़बात हमारे मानस-पटल पर आज भी उभर आते हैं।

यों तो मैं यह दावा नहीं करता कि सीताशरण शर्मा जी से मैं बहुत वर्षों से परिचित था परन्तु आज से लगभग डेढ़-दो वर्ष पूर्व जब मैं दक्षिण रेलवे के बैंगलोर रेलवे मंडल कार्यालय के राजभाषा हिन्दी से सम्बन्धित कार्यों के निरीक्षण के सिलसिले में बैंगलोर गया तो वहाँ राष्ट्रीय विचार मंच की कर्नाटक इंकाई के गठन हेतु आयोजित एक बैठक में उनसे मेरी मुलाकात हुई। बैठक की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करते वक्त जब वे मुझसे राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित मंच के उद्येश्यों से अवगत हुए तो ऐसा लगा जैसे मैंने उनके मन की बात कह डाली। अपने अध्यक्षीय भाषण के पूर्व ही शर्माजी के प्रस्ताव पर बैठक में उपस्थित बैंगलोर के प्रबुद्धजनों ने सर्वसम्मति से मंच की कर्नाटक इकाई के गठन से सम्बन्धित प्रस्ताव को पारित कर कार्यकारिणी का गठन किया। सच मानिए उसी दिन से हम दोनों एक दूसरे की राह पर चलने को अग्रसर हुए। दूसरी बार जब फिर बैंगलोर की एक विचार संगोष्ठी में हम दोनों की मुलाकात हुई, तब से **'मंच'** व **'विचार दृष्टि'** क प्रचार-प्रसार में वे काफी दिलचस्पी लेने लगे। उनके इस स्वभाव की वजह से हम उनके और करीब आए।

फिर उनके पारिवारिक तथा व्यक्तिगत जीवन में बहुत कुछ मुझे जानने का मौका मिला। शर्माजी ने गरीब की तकलीफ और तनावों को बहुत करीब से महसूस किया था। पारिवारिक तनाव और तनातनी के माहौल में ही वे साहित्य सृजन करते रहते थे। दो ही बार के मिलन में मुझे उनसे अपनेपन और खुलेपन का अहसास हुआ। उनके साहित्य और उदगार में भी उनका खरापन और साफगोई साफ झलकती थी।

पिछले दिनों 25 जूलाई, 2001 को जब मैं चेन्नै के दौरे पर था, सीताशरण शर्मा के निधन का मुझे समाचार मिला। मैं बड़ा मर्माहत हुआ। चेन्नै और बैंगलोर के साहित्यिक-सांस्कृतिक परिवेश को बनाने में उन्होंने विशेष भूमिका अदा की। उनके शेष मित्र चेन्नै और बैगलोर में उस गर्मजोशी और स्निग्धता को कबतक और कितना बचाए रखेंगे, जो उन्होंने अपनी साहित्यिक प्रतिभा और जिंदादिली से प्रदान की थी, यह तो समय ही बताएगा लेकिन उनकी चाह और उनकी रचनाएं उस स्निग्धता और उनके स्वभाव की निश्छलता की जरूरत को अपनी पूरी शिद्दत से रेखांकित जरूर करती रहेगी। जबान और अदब के क्षेत्र में शर्मा जी ने जिन संभावनाओं की तलाश की, जैसी राहें निकालीं, जैसी इन्द्रधनुषी धारा बहाई, उससे हिन्दी अदब की आबरू बनी हुई है, उसकी शान कायम है।

अपने समकालीनों में शर्मा जी एक मात्र ऐसे साहित्य सेवी और गांधीवादी चिंतनधारा के पोषक थे जिन्होंने आधुनिकता को अपने पास फटकने नहीं दिया। **सादा जीवन उच्च विचार** को पूर्णत: उन्होंने अपने जीवन में चरितार्थ किया। जीवन को उन्होंने उसकी सम्पूर्णता में चाहा, जिससे लोक व जीवन के प्रति उनका राग, उनका भावबोध दूसरों से अधिक गौरवान्वित हुआ। उनके अन्दर नया देने की ललक नहीं, बल्कि नए के प्रभाव से स्वयं को बचाने की उनकी कोशिश जरूर रही और उसमें वे सफल भी रहे।

आज वे हमारे बीच नहीं हैं परन्तु उनके विचार, उनका साहित्यिक अवदान और उनके आचरण मौजूद हैं, जो उन्हें अमरता प्रदान करेंगे। उनकी स्मृति को नमन।

आजादी के ज़ब्त तराने

❑ जितेन्द्र धीर

भारत की स्वाधीनता का रोमांचकारी इतिहास आजादी के लिए किये गये बलिदानों और संघर्षों की अमर गाथा है। सदियों की नारकीय गुलामी के बाद आज़ादी हमें कितनी कठिनाइयों से मिली और इसे हासिल करने के लिए जो कीमत इस देश ने चुकायी है उसका गवाह हमारी स्वाधीनता का इतिहास है।

यह दुःखद है कि आज़ादी के बाद की हमारी पीढ़ी स्वाधीनता आंदोलन के इतिहास को लगभग भूलती जा रही है। 'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है', और **'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है'** के दृढ़ निश्चय व अपराजेय भावना के साथ देश ने स्वाधीनता की जो लड़ाई लड़ी, और जिसमें अंग्रेजी सरकार ने अपने घुटने टेक दिये, वह हमारी भावनाओं की मार थी। अंग्रेजों के शोषण, उत्पीड़न और उनकी गुलामी से मुक्ति की भावना तो इस देश के सभी लोगों में थी लेकिन इस मुक्तिकामी चेतना को जाग्रत करना, इस भावना को स्वर देना, हमारी आजादी की लड़ाई में जीत का पहला कदम था।

ध्यातव्य है, "1200 से 1947 तक यह देश परतंत्र रहा। 18वीं शती में मुसलमानों का आधिपत्य समाप्त हुआ तो 19वीं शती में अंग्रेजों ने अपना राज्य स्थापित कर दिया। इनके अस्त्र- शस्त्र वैज्ञानिक थे। इन्होंने सारे देश को लगभग निःशस्त्र कर दिया था इसलिए इनका सफल सामना नहीं हो सकता था। 1857 में उत्तर भारत में सैनिकों और कुछ जनता ने इनसे संग्राम किया किन्तु संगठन व शस्त्र बल के अभाव में संग्राम सफल नहीं हो सका। भारत की स्वतंत्रता का स्वप्न 1900 के आस-पास दिखाई देने लगा था। लार्ड डलहौजी के बंगभंग और दमनचक्र ने एक नयी चेतना उत्पन्न कर दी। उन्नीसवीं सदी के मध्य भाग में शस्त्र-शक्ति का प्रयोग कर असफलता ही हाथ लगी लेकिन एक नये प्रकार की शक्ति का प्रयोग आरंभ हुआ जिसे आंदोलन व प्रचार कहते हैं। यह प्रचार सार्वजनिक संस्थाओं और समाचार पत्रों द्वारा किया जाता था।"

देशभक्ति व स्वाधीनता का स्वर मुखरित करते आजादी के तराने जनता की भावना को जगाने में पूर्ण सक्षम थे। इनकी शक्तिमत्ता से पूर्व परिचित अंग्रेजी सरकार यह बात अच्छी तरह जानती थी। अंग्रेजी हुकूमत ने आजादी के तरानों को अपने लिए खतरनाक माना और इन्हें ज़ब्त कर लिया।

राष्ट्रीयता और स्वाधीनता की भावना के प्रचार-प्रसार में तत्कालीन भारतीय प्रेस ने अपनी अविस्मरणीय भूमिका निभायी। *'जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो'* उन दिनों एक मुहावरा सा बन गया था। इस देश के हर हिस्से से समाचार पत्रों का प्रकाशन हुआ। जुझारू तेवर के साथ, बिना किसी भय या हिचकिचाहट के उन दिनों की पत्रकारिता ने पुरज़ोर ढंग से अंगरेजी शासन का खुल कर विरोध किया।

जनमानस में स्वाधीनता की भावना को दृढ़ से दृढ़तर करने में तत्कालीन राष्ट्रीय साहित्य की महती भूमिका रही है। राष्ट्र प्रेम और स्वाधीनतामूलक विचारों के साहित्य का सृजन देश के कोने-कोने में हो रहा था। असमिया के लक्ष्मीकांत बेज़बरूआ, उर्दू के अलताफ हुसैन हाली,' बंगला के बंकिम चन्द्र(जिनका बन्देमातरम् आजादी का मंत्र बन गया था)', तमिल के सुब्रह्मण्यम भारती, हिन्दी के भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ,'भारतीय आत्मा' के रूप में प्रसिद्ध माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्राकुमारी चौहान आदि प्रमुख राष्ट्रवादी साहित्यकारों के अतिरिक्त अनेक ज्ञात-अज्ञात रचनाकार विभिन्न विधाओं में राष्ट्रीय साहित्य रच रहे थे।

इसी के साथ-साथ उन दिनों करीब-करीब सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं में राष्ट्रीय आंदोलन विषयक 'आजादी के तराने' रचे जा रहे थे, जिन्हें इस देश की कोटि-कोटि जनता गाया करती थी। इन गीतों को गाते हुए आजादी के दीवाने हंसते-हंसते मौत को गले लगा लिया करते थे। देशभक्ति व स्वाधीनता का स्वर मुखरित करते आजादी के तराने जनता की भावना को जगाने में पूर्ण सक्षम थे। इनकी शक्तिमत्ता से पूर्व परिचित अंग्रेजी सरकार यह बात अच्छी तरह जानती थी। अंग्रेजी हुकूमत ने आजादी के तरानों को अपने लिए खतरनाक माना और इन्हें ज़ब्त कर लिया, किन्तु ऐसा करके भी अंग्रेजी-प्रशासन अपने लक्ष्य में सफल न हो सका। आज़ादी के तरानों को जनता ने कंठस्थ कर लिया था। ये गीत तो जनता के दिलों-दिमाग में अपना घर बना

चुके थे। सारे देश में ये तराने प्रचारित-प्रसारित हो चुके थे। लोग संगठित होकर इन्हें गाते थे।

आजादी के जब्तशुदा तरानों और उन दिनों के प्रमुख राष्ट्रवादी साहित्यकारों के सन्दर्भ में कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान का नाम विशेष रूप से स्मरणीय है जिनके प्रसिद्ध काव्य 'झांसी की रानी' को अंग्रेजों ने जब्त कर लिया था। 'अंग्रेजों भारत छोड़ो', का उद्घोष करती, प्रस्तुत है 'झांसी की रानी' काव्य की कुछ पंक्तियां- **'सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी ।**

बूढ़े भारत में भी आयी फिर से नयी जवानी थी

गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी

दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।

स्वाधीनता आंदोलन के दिनों में अंग्रेजी सरकार द्वारा जब्त किये गये कुछ अन्य महत्वपूर्ण गीतों में कानपुर निवासी श्यामलाल गुप्त 'पार्षद' का सुप्रसिद्ध 'झंडा गीत', विजयी विश्व तिरंगा प्यार/झंडा ऊंचा रहे हमारा ', 'भारतीय आत्मा' पंडित माखन लाल चतुर्वेदी रचित देश प्रेम की भावना को अभिव्यक्त करती 'पुष्प की अभिलाषा' शीर्षक कविता, श्री सोहनलाल द्विवेदी का 'खादी गीत',क्रांतिकारी अमर शहीद अशफाकउल्ला का 'आह्वान' शीर्षक गीत-'कस ली है कमर अब तो कुछ करके दिखायेंगे/आजाद ही हो लेंगे या सर ही कटा देंगे', कुंवर प्रताप चन्द्र 'आजाद' का 'बांध ले बिस्तर फिरंगी', जां निसार अख्तर का 'मैं उनके गीत गाता हूँ, सुप्रसिद्ध शायर अली सरदार जाफरी का 'आगे बढ़ेंगे: शहीद राम प्रसाद 'बिस्मिल' का 'आजादी','हमारी ख्वाहिश' (सरफरोशी की तमन्ना), स्वामी नारायणानंद 'अख्तर' का 'आजादी या मौत' उर्दू के प्रसिद्ध उर्दू के प्रसिद्ध कवि व शायर इकबाल का 'हिन्दोस्तां हमारा ','मेरा वतन',कविवर शैलेन्द्र चतुर्वेदी का 'चरखे की प्रतिज्ञा', डा० ज्ञान सिंह वर्मा का 'वतन के वास्ते' कविन्द्र रवीन्द्र की 'भारत प्रशस्ति', पण्डित कन्हैया लाल दीक्षित 'इन्द्र' और विश्वनाथ शर्मा के 'बन्देमातरम्' शीर्षक गीत, प्रणयेश शर्मा कृत 'फांसी', शातिर नामक शायर द्वारा भारत की प्रशस्ति में लिखा गया 'हिन्दोस्तां हमारा' खुजंदी का 'सागर निजामी का 'अहद' त्रिभुवन नाथ आजाद 'सैनिक'का 'विदेशी वस्त्र', दिनेश का 'स्वेदेशी', 'प्रेमी' का 'शहीदों का संदेश' के अतिरिक्त भी कई अन्य ज्ञात-अज्ञात कवि-शायरों के आजादी के तराने हैं।

इन गीतों का जन्म अंग्रेजों के पाशविक अत्याचार, जुल्मो सितम, जलियांवाला बाग कांड, बंग भंग आदि घटनाओं के साथ हुआ। वैसे तो अंग्रेजी सरकार स्वाधीनता आंदोलन के आरंभ के समय से ही तरह-तरह के हथकंडे अपना कर भारतवासियों की स्वाधीनता की भावना को कुचल देने में लगी रही लेकिन वह आजादी के दीवानों का मनोबल न तोड़ सकी। 13 मार्च 1919 के रोलट एक्ट के हद्यविदारक जलियांवाला बाग कांड के पश्चात् सन् 1920 में असहयोग आंदोलन का सूत्रपात्र हुआ। स्वाधीनता आंदोलन के काल विभाजन के अनुसार सन् 1920 से 1947 तक का समय स्वाधीनता संग्राम के उत्कर्ष का काल है। अंग्रेजों का दमनचक्र जितना ही बढ़ता गया उसी हिसाब से हमारी आजादी की लड़ाई भी तीव्र से तीव्रतर होती गयीं। 'आजादी की इस लड़ाई में रामप्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्र लाहिड़ी, रोशन सिंह, अशफाकउल्ला, भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरू आदि को फांसी दे दी गयी। चन्द्रशेखर आजाद भी शहीद हो गये। यतीनदास 63 दिनों के अनशन के बीच शहीद हो गये। अँग्रेजी हुकूमत की इस बर्बरता ने जन-मानस को सचेत कर दिया। यह सन् 1930 ई० से 31 के मध्य का समय था। नौजवानों का खून खौल उठा। इन गीतों का स्वर गूंज उठा था। अब क्या था। नवयुवक गली-कूचे में फांसी का फंदा पहनने के लिए तैयार होकर घूमने लगे। उनके मुंह से अनायास ही ये गीत निकल पड़ते। इन गीतों का अधिक प्रचार-प्रसार विभिन्न आन्दोलनों व कांडों के समय हुआ। चौराचौरी, काकोरी, जलियावाला बाग काण्ड, पूर्ण स्वराज्य, बंगभंग आंदोलन, नमक सत्याग्रह, असहयोग आन्दोलन, भारत छोड़ो आन्दोलन के समय ये गीत बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्ध हुए।'

इसी अवधि (सन् 1920-40) में इन गीतों का प्रकाशन भी हुआ। 'हिन्दी में इन गीतों की पुस्तकों का प्रकाशन मुख्यत: ई० सन् 1922,1923, 1928, 1929, 1930, 1931, 1932 एवं 1940 में हुआ।' हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं में भी इस तरह के गीतों की पुस्तकों का प्रकाशन हुआ। विभिन्न भारतीय भाषाओं में प्रकाशित 445 गीतों की पुस्तकों को अंग्रेजी सरकार ने जब्त किया। 'भारत सरकार के राष्ट्रीय अभिलेखागार के 26 जून 1982 के रिकार्ड के अनुसार जब्तशुदा गीतों की पुस्तकों की संख्या इस प्रकार है: 'बंगला-4, गुजराती-22, हिन्दी-264, कन्नड़-3,मराठी-3, उड़िया -1, पंजाबी-22, सिन्धी-9, तमिल-19, तेलुगु-10, उर्दू-58 । इस सन्दर्भ में यह भी उल्लेखनीय है कि अन्य भाषाओं के गीत भी देवनागरी लिपि में लिखे गये थे। पंजाबी, बंगला के अधिकांश गीत देवनागरी लिपि में लिखे गये थे। यहाँ यह भी रेखांकित करने योग्य है कि, 'हिन्दी की कुल 264 पुस्तकों में से लगभग 500 से अधिक मूल गीत हैं जिन पर प्रतिबन्ध लगा।'

आजादी के इन जब्तशुदा तरानों के स्वदेशी प्रेम, विदेशी वस्तु बहिष्कार, खादी प्रेम, मुक्तिकामी चेतना, स्वाधीनता की अदभ्य लालसा, देशभक्ति, हमारी राष्ट्रीय एकता और स्वाधीनता संग्राम में हुए विभिन्न राष्ट्रीय आंदोलनों का स्वर स्पष्ट रूप से मुखरित हुआ है। वस्तुत: ये गीत हमारी एकता और अखंडता के अनमोल स्वर हैं, हमारी राष्ट्रीय थाती हैं।

सम्पर्क: ब्यूरो प्रमुख 'विचार दृष्टि'
क्यू-283, मुदियाली रोड,
गार्डन रीच, कोलकाता-700024

राष्ट्रीय एकता पर चौतरफा हमला: एक विश्लेषण

❑ डॉ० राधाकृष्ण सिंह

किसी भी राष्ट्र का काम कभी खत्म नहीं होता है। लोगबाग आते-जाते रहते हैं। पीढ़ियां बदलती रहती हैं। लेकिन राष्ट्र बना रहता है। हमें इस बुनियादी बात को कभी नजरअंदाज नहीं करना चाहिए कि हम चाहे जो भी नीति अपनाएं, यदि देश में शांति नहीं रही तो हम कुछ नहीं कर सकेंगे।

दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है कि आज देश में शांति भंग करने के बहुविध प्रयास चल रहे हैं, जिससे राष्ट्रीय एकता एवं सुरक्षा को गहरा आघात पहुंचा है। हम अपने छोटे-छोटे स्वार्थों को पूरा करने में भारत और भारतवासियों को भूल रहे हैं। हम देशद्रोह के अपराधी जैसा आचरण कर रहे हैं। हमें यह समझ लेना चाहिए कि भारत की रक्षा, सुरक्षा और भारतवासियों की खुशहाली व तरक्की ही हमारा सबसे बड़ा लक्ष्य है। यह प्रभावी ढंग से तभी सिद्ध हो सकता है जब हम आपस में झगड़ना बंद कर दें और जिन समस्याओं से घिरे हैं, उनका लोकतांत्रिक तरीके से शांतिपूर्वक हल करने की कोशिश करें।

राष्ट्रीय एकता को भारी खतरों का सामना करना पड़ रहा है। नग्न आंखों से जो खतरे दृष्टिगोचर हो रहे हैं, वें हैं- क्षेत्रीयता की प्रबल भावना, जातिवाद, भाषावाद, सांप्रदायिकता,आर्थिक असमानता, नैतिक पतन और भ्रष्टाचार, राजनीतिक दलों की बहुलता, कुशल नेतृत्व का अभाव, दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली इत्यादि। इन कारक तत्वों के कारण आज देश में गृह युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो रही है।

यह विडंबना है कि प्रौढ़ लोग विचित्र रूप से अपने को उपखंडों और समूहों में बांट रहे हैं। वे संकीर्णता की दीवारें खड़ी कर रहे हैं। वे समझ रहे हैं कि दीवार की दूसरी तरफ अजनबी हैं, जिनको फूटी कौड़ी भी पसंद नहीं करना है। क्षेत्र,भाषा,रंग,दल,रीति-रिवाज आदि भावनाओं के आधार पर ये दीवारें खड़ी की गयी हैं। इस प्रकार लोग अपने ही बनाये कैदखाने में स्वत: कैद हो जाते हैं। भारतीय समाज में विभिन्न स्तर पर आयी दरारों के लिए अलगाववादी प्रवृतियां ही जिम्मेवार हैं।

राष्ट्रीय एकता को भारी खतरों का सामना करना पड़ रहा है। नग्न आंखों से जो खतरे दृष्टिगोचर हो रहे हैं, वें हैं- क्षेत्रीयता की प्रबल भावना, जातिवाद, भाषावाद, सांप्रदायिकता,आर्थिक असमानता, नैतिक पतन और भ्रष्टाचार, राजनीतिक दलों की बहुलता, कुशल नेतृत्व का अभाव, दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली इत्यादि। इन कारक तत्वों के कारण आज देश में गृह युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो रही है। बाह्य एवं आतंरिक संकटों का सामना तभी हो सकता है, जब हम राष्ट्रीय एकता एवं प्रेम की मजबूत भावना से आबद्ध हों। अगर हम बिखरे रहेंगे, तो हमारी देशी आजादी को भी खतरा हो सकता है। राष्ट्रीय एकता के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण साधन है। यही कारण है कि शिक्षा के उद्देश्यों, पाठ्यक्रमों एवं प्रशिक्षण

की योजनाओं के निर्धारण में राष्ट्रीय एकता पैदा करनेवाले तत्वों को शामिल किया गया है। इन तत्वों को अन्य कारकों की तुलना में ज्यादा महत्व दिया गया है।

राष्ट्रीय एकता सम्मेलन (1961) में राष्ट्रीय एकता प्राप्त करने के लिए अनेक सुझाव दिये गये। इस सम्मेलन में जोर दिया गया कि भारतीय स्वतंत्रता के इतिहास के छात्रों को विशेष रूप से पढ़ाया जाये। राष्ट्रीय एकता के विकास के लिए सभी जातियों, संप्रदायों और राज्यों में अधिक से अधिक मेल रखनेवाली पढ़ाई- लिखाई को प्रोत्साहित किया जाये। सन् 1961 में डॉ० संपूर्णानंद की अध्यक्षता में गठित **'भावात्मक एकता समिति'** ने भी राष्ट्रीय एकता पर बल दिया। इस समिति का परामर्श था कि भारत के धर्म-निरपेक्ष राज्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शैक्षिक पाठ्यक्रम में परिवर्तन किया जाये। इलेक्ट्रॉनिक एवं प्रिंट मीडिया के माध्यम से भावात्मक एकता में वृद्धि की जाये। प्राथमिक स्तर की कक्षाओं में राष्ट्रीय गीतों, कविताओं, आदि पर बल दिया जाये। माध्यमिक स्तर की कक्षाओं में सामाजिक-राष्ट्रीय एकता पैदा करनेवाले

सामाजिक विषयों का पठन-पाठन कराये जायें। विश्वविद्यालय स्तर पर विभिन्न प्रदेशों की भाषाओं, कलाओं, संस्कृतियों और साहित्यों के अध्ययन को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाये। शैक्षिक पर्यटनों, शिविरों, संगोष्ठियों, त्योहारों के आयोजनों से उनके बीच भावात्मक एकता पैदा हो सकती है।

राष्ट्रीय एकता के लिए कोठारी शिक्षा आयोग (1964-66) ने अनेक महत्वपूर्ण परामर्श दिए। आयोग ने देश में समान स्कूल(common school) समान पाठ्यक्रम और सम्यक भाषा-नीति पर जोर दिया। आज देश में दो तरह की शिक्षा चल रही है। गरीबों और अमीरों के लिए अलग-अलग तरह के विद्यालय चल रहे हैं। सरकारी और निजी विद्यालयों के पाठ्यक्रम अलग-अलग हैं। अच्छी शिक्षा अभिवंचित या निर्धन वर्ग को नसीब नहीं है। राष्ट्र की एकता तोड़नेवाली अंग्रेजी भाषा का बोलवाला बढ़ रहा है। हिंदी समेत अन्य भारतीय भाषाओं को प्रोत्साहित करने की बजाय उनकी अस्मिता समाप्त करने का प्रपंच रचा जा रहा है। शिक्षा मंहगी होती जा रही है। जबकि इसे नि:शुल्क होनी चाहिए।

कोठारी शिक्षा आयोग ने 'त्रि-भाषा-सूत्र' के माध्यम से राष्ट्रीय एकता की कड़ी को मजबूत करने का प्रयास किया। देश की अपनी राष्ट्रीय भाषा 'हिंदी' का सम्यक विकास किया जाना चाहिए। खासकर अहिंदी प्रांतों में, ताकि राष्ट्रीय एकता की भावना का संचार हो सके। भारतीय भाषाओं के अध्ययन से वहां के निवासियों के प्रति अपनत्व बढ़ता है। आयोग का मानना था कि वैज्ञानिक प्रवृत्ति, सहिष्णुता, साझे संस्कृति के सम्मान आदि से लोकतंत्र मजबूत होता है। राष्ट्रीय चेतना के विकास के लिए सांस्कृतिक धरोहरों का ज्ञान आवश्यक है। जहां तक राष्ट्रीय एकता के अवरोधक तत्वों का सवाल है, अर्थिक गैरबराबरी के कारण समाज में आतंकवाद का जाल फैलता जा रहा है। खासकर भूमि संघर्ष बढ़ रहा है। भू-नाकेबंदी हो रही है। किसानों और खेतिहर मजदूरों के बीच तनाव बढ़ रहा है। हिंसा और प्रतिहिंसा का माहौल पैदा हो गया है। आज उत्पादन बढ़ाना देश की सबसे बड़ी जरूरत है। लेकिन उत्पादन का समुचित वितरण भी आवश्यक है। धन सिर्फ चंद घरानों में एकत्र होने से राष्ट्र की तरक्की में रूकावट आती है। आर्थिक असमानता के कारण राजनीतिक जनतंत्र भी क्षत-विक्षत हो गया है। वर्गविहीन समाज की स्थापना का सिद्धांत अपनी राह से भटक गया है। आज के लोग भूखमरी, असमानता और तकलीफों को बर्दाश्त करने के लिए तैयार नहीं है। राष्ट्रकवि **रामधारी सिंह दिनकर** के शब्दों में,-

"शांति नहीं तब तक,
जब तक नर का सुख भाग न सम हो।
नहीं किसी को बहुत अधिक हो,
नहीं किसी को कम हो।"
'रोटी और आजादी में कोई वैर नहीं
किंतु भूख बेताव हुई तो आजादी की
खैर नहीं।'

भारतीय समाज में भ्रष्टाचार विकराल रूप लेकर बड़ी तेजी से अपना पैर जमा रहा है। लोकपाल विधेयक अभी तक खटाई में पड़ा है। भ्रष्टाचार में संलिप्तता की वजह से बड़े-बड़े राजनीतिक दिग्गजों को जेल और कोर्ट का चक्कर काटना पड़ रहा है। भ्रष्टाचार के आगोश में कार्यपालिका भी है। इस रोग ने राजनीतिज्ञों और अफसरों पर से लोगों का विश्वास उठा दिया है। कहना न होगा कि भ्रष्टाचार गांव-गांव तक पहुंच गया है। काली कमाई से काला धन उपार्जन करने की होड़ मची है। समाज सुविधाभोगी और सुविधाहीन- दो तबकों में बंट गया है। सुविधाहीन वर्ग घरेलू मोर्चे पर भी लड़ने में सक्षम नहीं है। राष्ट्र की सुरक्षा की कल्पना करना बेकार है। भूखी या सुविधाहीन सेना लड़ नहीं सकती है। सेना के पीछे खड़ी जनता यदि भूखी हो तो किसी काम की नहीं हो सकती। लिहाजा देश को गरीबी के दलदल से निकालकर दीर्घकालीन आर्थिक विकास के पथ पर लाना होगा। गरीबी अपने आप में अभिशाप है।

यह कहने में संकोच नहीं होना चाहिए कि **सरदार वल्लभ भाई पटेल** ने देशी रियासतों को मिलाकर मौजूदा भारत का मानचित्र तैयार किया था। हैदराबाद, कश्मीर, जूनागढ़, ग्वालियर, इंदौर, मालवा, नीलगिरि(बिहार), पटियाला, बड़ौदा, नवाब रामपुर (दिल्ली), नवाब भोपाल, आदि रियासतों को भारतीय गणराज्य का अभिन्न अंग बनाया गया। देशी राज्यों के एकीकरण से भारत को हर क्षेत्रों में बल मिला। लेकिन आज की राजनीति ने देश में पृथक राज्य की हवा चला रखी है। राज्यों के बंटवारे के कारण पड़ोसी राज्यों के बीच द्वंद्व चल रहा है। जमीन, जल, जंगल के स्वामित्व को लेकर पड़ोसी राज्यों की सरकारें कोर्ट का चक्कर काट रही हैं। जिस तरह से भूमंडलीकरण और बाजारवाद की आंधी आयी है उसमें मनुष्य के सोचने का मापदंड बदल रहा है। समाज और राष्ट्र के बजाय मनुष्य पूंजीनिवेशक के रूप में उससे कट रहा है। भारतीय समाज पर पाश्चात्य संस्कृति उपभोक्ता हावी हो रही है। लिहाजा, संस्कृति की आड़ में भी मानवीय मूल्यों का पतन और विखंडन हो रहा है। प्रकारांतर से इसका बुरा प्रभाव राष्ट्रीय एकता पर भी पड़ रहा है। संस्कृति का संबंध मनुष्य के आंतरिक विकास से है। यह विचारों और मनोवृतियों को व्यापक बनाती है।

यह सच है कि भारत में विषम प्रवृतियों और विशिष्टताओं का सुंदर संयोग हुआ है। यह संयोग भूगोल, भाषा धर्म, संस्कृति, आस्था, विश्वास अनेक स्तरों पर है। बावजूद, इसके हमारी दृष्टि संकीर्णता की अंध गलियों में जिजीविषा की रोशनी तलाश रही है। हमें सृजनात्मक विचारों और कर्मो के सहारे मानव समाज को एकता, शांति और समृद्धि प्रदान करना है।

सम्पर्क: 50ए/1605, बुद्धा डेंटल कॉलेज रोड, महात्मा गांधी नगर, पटना-20,
फोन: 0612-364157

साम्प्रदायिकता राष्ट्रीय एकता में रोड़ा

❑ गुलाब चन्द कोटड़िया

जब हम साम्प्रदायिकता की बात करते हैं तो पहले सम्प्रदाय पर विचार करें कि इस शब्द के अर्थ क्या हैं? सम्प्रदाय के कई मतलब हैं। मोटे तौर पर धार्मिक भावना, मान्यता, पंथ, धर्म, मजहब, विचार पद्धति, विश्वास, अभिमत, प्रणाली या मतावलंबन। आज साम्प्रदायिकता अधिकांशत: धर्म से ही संबंधित हो चुकी है। जहाँ धर्म की बात आएगी वहाँ कर्म की बात भी आएगी। विभिन्न धर्म की विभिन्न इकाइयां व मत-मतांतर के साथ अलग गुटबाजी चलती है। धार्मिक समन्वय होना कठिन है कारण एक धर्म की क्रिया या कर्म पुण्यशाली मानी जाती है वहीं दूसरे धर्मावलंवी पाप मानते हैं। उदाहरण के तौर पर एकेश्वरवाद व वहुदेवत्व धर्म। मूर्तिपूजा व मूर्ति को न मानने वाले। एक ही धर्म में कई इकाईयां बन चुकी हैं। सम्प्रदाय में से कई उप-सम्प्रदाय निकले हैं। मुस्लिम धर्म एकेश्वरवाद है तो उसमें सिया सुन्नी, अहमदी वगैरह के मतभेद हैं। जैन धर्म में मूर्तिपूजक हैं वहीं मूर्ति न माननेवाले स्थानकवासी व तेरापंथ है। मुख्य धर्म के ही दो पंथ हैं दिगम्वर और श्वेताम्बर। इसाइयों में कैथोलिक व प्रोटेस्टेंट। हिन्दू धर्म में तो वैष्णव के अलावा तैतीस करोड़ देवी देवतागण हैं।

यों देखा जाए तो कोई भी सम्प्रदाय अपने आप में बुरा नहीं होता। मेरा धर्म मेरा सम्प्रदाय, मेरे इष्टदेव, मेरी मान्यताएं मेरे रीतिरिवाज के बारे मे किसी को क्यों एतराज हो? सभी धर्म अपनी पंथ शैली का अनुसरण करे। इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती कि हर मनुष्य किसी न किसी सम्प्रदाय का सदस्य है आस्तिक या नास्तिक। यह कहना भी गलत नहीं होगा कि हमारी जितनी भी कौमें, जातियां या फिरके हैं साम्प्रदायिक ही हैं। जब एक सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदाय में दोष ढूंढकर खंडन मंडन शुरु करता है तब साम्प्रदायिकता का बदसूरत चेहरा दिखाई देता है। जबर्दस्ती धर्म परिवर्तन मतांतरण अपनी बात जोर बलबूते व तलवार की नोंक पर हो तो साम्प्रदायिकता जहर ऐसा उगलती है कि राष्ट्रीय एकता ही खतरे में पड़ जाती है। देश भी टूटते हैं व खूनखराबा भी होता है।

राष्ट्र क्या है? इसकी अवधारणा क्या है? हम राष्ट्र किसे कहेंगे? पहले राजवंश चलते थे। राष्ट्र का उदय लोकतंत्र से हुआ। हम राष्ट्र को मानव समुदाय की सामूहिक ईकाई मानते हैं। समुदाय या सामूहिक भाव मानव की प्रकृति ही नहीं जीवन का सिद्धांत भी है। जब हम राष्ट्र का वर्णन करते हैं तो राष्ट्र किसी एक वर्ग या जाति या व्यक्ति का नहीं बल्कि उन सब का है जो उसके नागरिक हैं और नागरिकों में ऊंच-नीच, जात-पात धर्म-भाषा, क्षेत्र, अमीर-गरीब का भेदभाव नहीं होता। संविधान नियम कानूनों के सामने सभी समान अधिकारी हैं। राष्ट्र-सिद्धांत आधुनिक समय में अपने अस्तित्व के लिए भी आवश्यक है। राष्ट्र का गौरव तभी बना रह सकता है जब हम एक सूत्र में बंधे रह कर अपने राष्ट्र के प्रति पूर्ण समर्पित बने रहें।

आज का यह दुर्भाग्य रहा कि उसका विभाजन धर्म के नाम पर हुआ। हिन्दू और मुस्लिम द्वि-राष्ट्र सिद्धांत ही गलत था। माहात्मा गांधी ने इसका जमकर विरोध किया था पर उनकी चली नहीं ; अन्त में थकहार कर उन्हें मानना पड़ा था। आज भारत पाकिस्तान को बने 54 साल हो चुके हैं। हमारा राष्ट्र एकता के सूत्र में नहीं बंध सका। यद्यपि यह 80% हिन्दू बहुल राष्ट्र है, जिसमें अल्प-संख्यक मुसलमान 15 करोड़ से अधिक हैं। जब भी साम्प्रदायिकता जोर मारती है तो दोनों धर्मवलम्बी ही लड़ते हैं। दंगे भड़कते हैं। हत्याएं नरसंहार होते हैं। यह सब कट्टरपंथियों के कारण होते हैं क्योंकि उनमें संवेदना की कमी के साथ साथ घृणा भी होती है। हमारा

जब एक सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदाय में दोष ढूंढकर खंडन मंडन शुरु करता है तब साम्प्रदायिकता का बदसूरत चेहरा दिखाई देता है। जबर्दस्ती धर्म परिवर्तन मतांतरण अपनी बात जोर, बलबूते व तलवार की नोंक पर हो तो साम्प्रदायिकता जहर ऐसा उगलती है कि राष्ट्रीय एकता ही खतरे में पड़ जाती है। देश भी टूटते हैं व खूनखराबा होता है।

धर्म ही ऊंचा बाकी सब नीचे तबके के हैं। राष्ट्र में विभिन्न धर्मावलंबी होते हैं। पाकिस्तान का जन्म ही साम्प्रदायिकता पर हुआ। दो राष्ट्र बने तब भयंकर रक्तपात हुआ। मानवता तक दहल उठी और आज भी पाकिस्तान ही सबसे बड़ा रोड़ा हमारे राष्ट्रीय एकता में अटकाता है।

6 फरवरी 1992 में बाबरी मस्जिद का टूटना इस एकता का सबसे बड़ा खतरा बन गया। दंगे हुए। बम विस्फोटों में सैकड़ों मारे गए। मंदिर और मस्जिद सब अपनी जगहों में खड़ी हैं। हिन्दू कट्टरवादियों को बाबरी मस्जिद को तोड़ने की जरूरत ही क्या थी? मुस्लिम आक्रांताओं ने अपने जमाने में कई हिन्दू मंदिरों को तोड़कर मस्जिदें बनाई क्योंकि वे निरंकुश राजा थे आज जब जनता का राज है तो सब को समभाव व समभावना से रहने की आवश्यकता है। एक धर्म हमारे धर्म का आदर नहीं करेगा तो कैसे चलेगा?

धर्म के नाम पर सदा जो भी युद्ध हुए, वे भयानक थे। ईसाईयों पर रोमन लोगों ने अत्याचार किए। मुस्लिम ईसाई झगड़े, मुस्लिम हिन्दू झगड़े। एक दूसरे पर क्रूर व्यवहार उत्पीड़न हुआ।

आज हमारी राष्ट्रीय एकता को सबसे बड़ा खतरा पाकिस्तान से ही है। आज के मुसलमान तो आज में ही रहना चाहते हैं और पाकिस्तान उनका स्वयंभू नेता बनकर मानों उनके लिए लड़ रहा है जो सर्वथा अनुचित तो है ही न्यायसंगत भी नहीं है।

कर दिया है अत: वे तो उसे भी मुस्लिम राष्ट्र के रूप में देखना चाहते हैं। अलगाव मनोवृत्ति व दलगत राजनीति के दुष्परिणाम हमें भुगतना पड़ रहा है।

राष्ट्रीय एकता की भावना बल नहीं पकड़ रही है। विविधता में एकता ढूंढ़ते हैं हम। प्रान्त,भाषा,जाति,मजहब रंग के आधार पर राष्ट्र को नहीं बांटा जाना चाहिए। मुस्लिम सम्प्रदाय तो था ही अब दलित सम्प्रदाय जोर पकड़ रहा है यही राजनीति के कारण समुदाय को एक रखना मुश्किल सिद्ध हो रहा है। यही कारण है सरकारें टूटती है, बनती हैं मिश्रित सरकारें राष्ट्रीय एकता के लिए भी बाधक हैं।

राष्ट्रीय एकता के लिए यह भी आवश्यक है कि हम एक दूसरे की भावनाओं का आदर करें।

आज हमारी राष्ट्रीय एकता को सबसे बड़ा खतरा पाकिस्तान से ही है। आज के मुसलमान तो आज में ही रहना चाहते हैं और पाकिस्तान उनका स्वयंभू नेता बनकर मानों उनके लिए लड़ रहा है जो सर्वथा अनुचित तो है ही न्यायसंगत भी नहीं है।

भारत और पाकिस्तान के बीच आज सबसे प्रमुख समस्या कशमीर की है। मुस्लिम बहुल राज्य होने के कारण पाकिस्तान उसे पाना चाहता है और भारत उसे अपना अभिन्न अंग मानता है क्योंकि जम्मू-कश्मीर का विलय भारत में हुआ था। पाकिस्तान ने कवाइली आक्रमणकारियों को भेजकर आजाद कश्मीर पर कब्जा कर लिया और उसके बाद हमसे पाने के लिए तीन-तीन युद्ध लड़ चुका है। हर बार मुँह की खाई, यहाँ तक कि उससे बांग्लादेश भी अलग हो गया। अब वह जेहाद के नाम पर आतंकवाद को बढ़ावा दे रहा है। नित्य निर्दोष नागरिकों की हत्याएं करवा रहा है। ताशकंद, शिमला व लाहौर समझौतों की इज्जत भी नहीं करता है। शांति के सारे प्रयास विफल सिद्ध हो रहे हैं।

धर्मांधता व आतंकवाद के कारण जम्मू-कश्मीर हिन्दुओं से लगभग खाली हो चुका है। इस समस्या का जब तक समाधान नहीं निकाला जाता है, तब तक हमारी राष्ट्रीय एकता कभी बनी नहीं रह सकती। पाकिस्तान की जिद्द कि कश्मीर हमें दे दिया जाए, किसी हालत में मानेगा नहीं। बातचीत द्वारा अन्य क्षेत्रों में सह अस्तित्व के सिंद्धांत पर चलना चाहता है, परन्तु पाकिस्तान हमें धार्मिक साम्प्रदायिक रंग देकर उलझा रहा है। कश्मीर की समस्या दोनों के लिए ऐसी हो गई कि जो न उगलते बनती है न निगलते। हमारी धर्मनिरपेक्षता वाला संविधान यहीं आकर अटक जाता है। सच पूछा जाए तो धर्मनिरपेक्षता सबसे खतरनाक शब्द है। पाकिस्तान ने तथा बांगलादेश ने स्वयं को मुस्लिम राष्ट्र घोषित

समभाव, सद्भावनाएं व समन्वय बना कर रखें। प्रत्येक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति में अपना हित माने। सम्पूर्ण राष्ट्र को अपना विशाल परिवार माने । अगर राष्ट्रीय एकता खतरे में पड़ती है तो देश भी नहीं बच सकेगा। अत: सर्वप्रथम हमें साम्प्रदायिक भावनाओं व मानसिकता में परिवर्तन लाना अत्यन्त आवश्यक है। सम्प्रदायवाद से हमें ऊपर उठना होगा। अगर यह नहीं होता तो मुस्लिम सम्प्रदायवाद कभी भी हमारी राष्ट्रीय एकता में रोड़े अटकाता ही रहेगा। दोनों देशों के नेताओं को किसी न किसी समाधान पर राज़ी होना ही पड़ेगा। अगर यह नहीं होता तो दोनों राष्ट्रों का अस्तित्व खतरे में पड़ सकता है।

सम्पर्क: 469, मिंट स्ट्रीट
चेन्नई- 600079

राष्ट्रीय एकता एवं मीडिया

❑ रत्नेश कुमार गौतम

राष्ट्रीय एकता की अवधारणा भारत में एक राष्ट्र के रूप में प्राचीन समय से है। आज के आधुनिक भारत का जो राजनैतिक मानचित्र है, वह पूरातन काल से ही भौगोलिक रूप में अपने आप में एक इकाई के रूप में स्थापित है। भारत की जो पहचान एक राष्ट्र के रूप में आज विद्यमान है, उसके बीज नहीं न कहीं अतिप्राचीन काल में ही रोपे जा चुके थे। इसके दो प्रमाण हैं, पहला महासागर जो कि पुरातन काल से ही इस नाम से जाना जाता है, और निश्चित रूप से यह नाम हिन्दुस्तान से आया है, यानि कि हिन्दुस्तान एक देश या राष्ट्र के रूप में उसी समय से अपनी पहचान कायम किए हुए है। दूसरा प्रमाण है कि भारतीय उपमहाद्वीप अपने आप में इस नाम से एक पहचान। इतिहास के मध्य काल में शंकराचार्य ने देश के चार कोनों पर चार मठ स्थापित कर यह प्रमाण दिया कि इन चारों धामों के बीच जो देश है, उसमें एक ही तरह की सभ्यता, एक ही तरह की संस्कृति है। अत: यह एक राष्ट्र है और इस भूखण्ड पर एक अंतर्निहित एकता लोगों के रहन-सहन तथा सोच में है।

प्राचीन काल से ही पूरे भारतवर्ष में रामायण, महाभारत, भगवद्गीता आदि महाकाव्यों का प्रचार-प्रसार हुआ है, और यह भी राष्ट्रीय एकता का एक प्रतीक है। इस प्रकार सर्वप्रथम प्रचार-प्रसार में जो माध्यम का प्रयोग हुआ, वह था एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति या व्यक्तियों तक वार्त्तालाप। कुछ समय तक संचार (कम्यूनिकेशन) का एक ही माध्यम रहा। उसके बाद लिखने की कला का विकास हुआ। भारत में भी सबसे पहले ताम्रपत्तों आदि पर ही धार्मिक ग्रंथ आदि लिखे गए। इस तरह यह दूसरा माध्यम विकसित हुआ। प्राचीन काल की (यह दोनों) मीडिया ने ही राष्ट्रीय एकता के बीज अंकुरित किए तथा कुछ हद तक पल्लवित किए।

'मीडिया' अंग्रेजी शब्द "मीडियम" का बहुवचन है। आज के युग में इसका मुख्य उद्देश्य है, जनसंचार (मास काम्युनिकेशन)। मीडिया अपने शाब्दिक अर्थो में सभ्यता की शुरूआत से ही उपस्थित है या अगर हम यह कहें कि सभ्यता की शुरूआत ही संचार-माध्यम के विकास से हुई। पहले इशारों को ही मनुष्य ने अपना संचार माध्यम बनाया। फिर बातचीत के काल का विकास हुआ उसके बाद हमने लिखना और पढ़ना सीखा फिर कागज और लेखनी का आविष्कार हुआ। छापाखाना एवं डाक व्यवस्था की खोज से जनसंचार की शुरूआत हुई। छापाखाना के आविष्कार के बाद समाचार-पत्रों ने संचार- माध्यमों की क्रांति की शुरूआत। कई सौ सालों के बाद रेडियो और सिनेमा की खोज ने इस जनसंचार क्रांति की गति को आगे बढ़ाया। पिछली सदी की दूसरी चौथाई की शुरूआत में टेलिविजन का भी आर्विभाव हुआ। व्यक्तिगत संचार के क्षेत्र में टेलिफोन ने पहले ही संचार में लगने वाले समय को बिल्कुल नगण्य कर दिया था। रेडियो और टेलिविजन ने वही काम जन संचार यानि मास कम्युनिकेशन के लिए किया। रेडियो या टेलिविजन में कई बार आप खबरों या किसी घटना को सीधे प्रसारण के माध्यम से उसी समय देख सकते हैं, जिस समय वे घटित हो रहे हैं, लेकिन रेडियो या टेलिविजन में जो कुछ प्रसारित किया जाता है, उसे श्रोता या दर्शक अपनी इच्छानुसार, दोबारा सुन या देख नहीं सकते। अत: समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं आदि का महत्व आज भी बना हुआ है। "न्यू मीडिया" यानि इंटरनेट, जनसंचार एवं व्यक्तिगत संचार का नवीनतम माध्यम है। पिछली सदी के अन्तिम दशक में इस नये माध्यम के द्वारा संचार के क्षेत्र में एक नई क्रांति का सूत्रपात हुआ।

भारत में मीडिया ने सामाजिक उत्थान के हर आयाम में अपना सहयोग दिया है। राष्ट्रीय एकता को उसका स्वरूप देने में भारत की मीडिया ने प्रमुख भूमिका निभाई। भारतीय मीडिया का राष्ट्रीय एकता को और प्रगाढ़ करने में महान योगदान रहा है।

भारत में मीडिया ने सामाजिक उत्थान के हर आयाम में अपना सहयोग दिया है। राष्ट्रीय एकता को उसका स्वरूप देने में भारत की मीडिया ने प्रमुख भूमिका निभाई। भारतीय मीडिया का राष्ट्रीय एकता को और प्रगाढ़ करने में महान योगदान रहा है। पुस्तकों, ग्रंथों आदि को मीडिया का प्राचीन स्वरूप तो हम पहले ही देख चुके हैं कि रामायण, भगवद्गीता आदि ग्रंथों ने कैसे भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को एक सूत्र में पिरोने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

सन् 1556 में गोवा के तट पर पुर्त्तगालियों द्वारा पहले छापाखाना या प्रिटिंग प्रेस की स्थापना की गई। 1780 में भारत के पहले समाचार-पत्र 'बंगाल गजट' का प्रकाशन हुआ। राजा राम मोहन राय ने 1822 में पहले पूर्णत: भारतीय समाचार-पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया। इसी के साथ पूर्णत: परिभाषित आधुनिक युगीन भारतीय मीडिया की शुरूआत हुई। भारतीय मीडिया ने अपने शुरूआती काल में सामाजिक सुधारों तथा कानूनी प्रक्रिया द्वारा बदलाव पर विशेष बल दिया। आधुनिक काल के शुरूआत से ही यहाँ के मीडिया ने भारत को एक राष्ट्र माना, यद्यपि खुलकर राष्ट्रीय एकता पर कुछ नहीं कहा गया, अंग्रेज विद्वान एवं प्रशासक भारत की राष्ट्रीयता एवं राष्ट्रीय एकता की अवधारणा की खिल्ली उड़ाते थे। उनके कथनानुसार

भारत में जो भी राजनीतिक ऐक्य आया था, वह अंग्रेजों का योगदान था।

परन्तु उन्नीसवीं सदी के अंत आते-आते भारतीय समाचार-पत्र धीरे-धीरे राष्ट्रीय एकता पर मुखर होने लगे थे, इसमें जो समाचार-पत्र या पत्रिकाएं भारतीय भाषाओं में छपते थे, उनका योगदान ज्यादा रहा। सन् 1905 के बंगाल विभाजन विरोधी आन्दोलन के बाद से जैसे-जैसे स्वतंत्रता-संग्राम सुदृढ़ और मजबूत हुआ, वैसे-2 समाचार-पत्र भी लोकप्रिय होते गए। इस काल में भारतीय माडिया अंग्रेजों के कुशासन के खिलाफ तो लिखती ही रही, साथ-ही-साथ राष्ट्रीय एकता पर भी इसका जोर बढ़ता गया। इस समय के समाचार-पत्रों ने स्वाधीनता-संग्राम के सभी आयामों पर जनता को एक तरह से शिक्षित करने का काम किया, राष्ट्र को इस संघर्ष के लिए तैयार करने और उसे एक सूत्र में पिरोने में, भारतीय प्रिंट मीडिया का महान योगदान रहा है। हमारे अधिकतर राष्ट्रीय नेताओं ने कोई न कोई अखबार या पत्रिका निकाल कर जन-जन तक अपनी बातें पहुँचाई। 1931 में आकाशवाणी की स्थापना हुई। इसी के साथ भारत में त्वरित जनसंचार के पहले माध्यम की शुरूआत हुई। 1947 तक तो यह अंग्रेजी सम्राज्य के काबु में ही रहा, आजादी मिलने के बाद से लेकर 1980 के दशक तक देश का यह प्रमुख इलैक्ट्रोनिक जनसंचार माध्यम रहा। रेडियो ने देश के दूरदराज के इलाकों को एक सूत्र में बहुत ही मजबूती से बांधा। इस काल में रेडियो ने हर शहर, हर गाँव में योजनाबद्ध विकास के सन्देश को पहुँचाया। इस माध्यम ने आम जनता का मनोरंजन तो किया ही साथ-साथ जानकारी भी बढ़ाई। रेडियो ने राष्ट्रीय एकता का संदेश लोगों को सीधे तौर पर पहुंचाया। फिल्म संगीत और किक्रेट का आँखो हाल आदि द्वारा जनता की पसंद भी एक सूत्र में रेडियों के ही माध्यम से ही जुड़ी।

1980 के दशक तक आते-आते रेडियो के स्थान को टेलीविजन ने ग्रहण कर लिया। वैसे तो भारत के पहले टेलीविजन चैनेल 'दूरदर्शन' की शुरूआत 1959 में ही हो गई थी, परन्तु 1980 तक इसका विस्तार बहुत ही सीमित रहा। 1982 के एशीयाड खेलों के बाद से दूरदर्शन का बहुत तेजी से विकास हुआ, धारावाहिक "हमलोग" से लोकप्रिय कार्यक्रमों की श्रृखंला की जो शुरूआत हुई, वो 'रामायण' और 'महाभारत' जैसे धार्मिक धारावाहिकों के आते-आते लोकप्रियता की हद तक पहुँच गई। इन धार्मिक धारावाहिकों के बारे में सबसे अच्छी बात यह रही कि इसके दर्शकों में केवल हिन्दू धर्म के नहीं, बल्कि सभी धर्मों के लोग थे। इन धारावाहिकों ने सच्चे अर्थों में देश के सभी लोगों को एक सूत्र में बांधा। इसके अलावा देशभक्ति और राष्ट्रीय एकता पर कई विशेष कार्यक्रमों द्वारा दूरदर्शन इस दिशा में अपना योगदान करता रहा।

भारतीय सेटेलाइट चैनलों की शुरुआत 1992 में हुई। इन चैनलों की लिंकिगं सुविधा होंगकांग या सिगाँपुर से हो रही है। शुरू में इनके बारे में कुछ लोगों को शंका थी। परन्तु इन भारतीय चैनलों ने भी अपने कार्यक्रमों द्वारा राष्ट्रीय एकता और देशभ्रक्ति को मजबूती दी। कारगिल युद्ध के समय तो इन सारे चैनलों ने जिस तरह से हमारी सेनाओं का उत्साह बढ़ाया और देशभक्ति की भावना का नए ढंग से संचार किया, इससे सारी शंकाए दूर हो गई।

न्यू मीडिया यानि कि इंटरनेट का माध्यम 1990 के दशक के मध्य से चर्चा में आया। चूंकि यह माध्यम अभी काफी नया है, इसलिए उसके राष्ट्रीय एकता के क्षेत्र में योगदान की समीक्षा करना थोड़ी जल्दब.जी होगी। वैसे यह मीडिया राष्ट्रीय एकता क्या, वैश्विक एकता में अपना योगदान कर रहा है। ग्लोबलाइजेशन यानि भूमंडलीकरण का यह सबसे महत्त्वपूर्ण माध्यम है।

इन सारे विकासों के बावजूद प्रिंट मीडिया आज भी अपनी महत्ता बरकरार रखे हुए है।

जनसंचार माध्यम के बिना राष्ट्रीय एकता की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इसलिए राष्ट्रीय एकता या किसी भी भावना, अवधारणा का प्रसार- विस्तार मीडिया के अभाव में संभव ही नहीं है। इस प्रकार हम देखते हैं कि राष्ट्रीय एकता के क्षेत्र में मीडिया का योगदान सर्वोपरि है।

सम्पर्क:-ड्यूटी रूम,
दिल्ली दूरदर्शन केन्द्र
संसद मार्ग, नई दिल्ली-110001

शुभ कामनाओं के साथ -

पोपुलर फार्मा

केमिस्ट एन्ड ड्रगिस्ट

न्यू मार्केट, पटना -800001

दूरभाष:- 226393

शुभ कामनाओं के साथ -

दी न्यू चोपड़ा

अंग्रेजी दवाखाना

न्यू मार्केट, पटना-800001

देश की एकता के बाधक तत्व

❑डॉ॰ एन॰ चन्द्रशेखरन नायर

देश की एकता में बाधा उपस्थित करने वाले अनेक तत्व होते हैं। देश की भौगोलिक स्थिति, विविध धर्म एवं सम्प्रदाय, अनेक भाषाएँ, अनेक प्रकार के आचार-विचार, एक सम्पर्क भाषा का न होना, प्रान्तीयता, आर्थिक एवं स्वत्वों की असमानता आदि तत्व कुछ-न-कुछ हद तक देश की एकता में बाधा उपस्थित कर सकते हैं। इनके अलावा देश की पराधीनता तथा विभिन्न बाहरी शक्तियों के प्रति राजनैतिक दलों का स्वार्थ सम्बन्ध भी देशीय एकता के लिए खतरा है।

उपर्युक्त विघटनकारी तत्वों के होते हुए भी देश की संस्कृति यदि प्रभावकारी अथवा आकर्षक है तो अलगाव के तत्वों को पाट देने में वह कभी-कभी सक्षम हो सकती है, ऐसा देखा जाता है। परन्तु, फिर भी देश की संस्कृति की भव्यता का उल्लंघन करके भी कभी-कभार देशीय एकता में खलबली पैदा की जाती है। स्नेह एवं विश्वास के विलोप से उत्पन्न एकता तथा भ्रातृत्व की यह विलोमक दशा कैसे शासन करती है, इस पर हम विस्तार से चर्चा करेंगे।

एक विशाल देश को एक इकाई के रूप में मान लेने में उस देश का भौगोलिक स्वरूप अत्यन्त सहायक मालूम होता है। जैसे तुषार-धवलित हिमवान से आच्छादित भारत की उत्तरी सीमा और अथाह समुद्रों से वलयित दक्षिणी, पश्चिमी और पूर्व सीमा भारत को एक इकाई के रूप में मानने में हमें विवश कर देती है। इस विशाल भूखण्ड को हमने भारत-जननी से संकल्प के रूपायित कर रखा है। यह भौगोलिक कलेवर देश का बाहरी स्वरूप है। अपने मातृ देश को बचाए रखने में, उसको अपमानित होने से संरक्षित रखने में हम सदैव जागरूक हैं। हमें अनुभव है कि चीन और पाकिस्तान ने हमारे देश पर आक्रमण किया है। और अब भी पाकिस्तान हमारे देश में अशान्ति पैदा करने, जन-जीवन अस्त-व्यस्त करने और हमारी आर्थिक व्यवस्था का सन्तुलन तितर-बितर कर देने पर तुले हुए हैं। यह हमारे लिए एक ज्वलंत समस्या बनी हुई है। लगता है, भारत को इस विदेशी राज्य के साथ सख्त व्यवहार करना पड़ेगा। देश-सीमा की समस्या का हल हमें चीन के साथ भी करना है। लेकिन चीन का विचार है कि परस्पर विश्वास से, विचार-विनिमय से उस समस्या का हल होगा। चीन के इस सभ्य और उचित अभिमत से हम भी सहमत हैं। यह नीति विश्व- संस्कृति को बल देने वाली भी है।

देशीय एकता का दूसरा बाधक तत्व देश में धार्मिक समभाव का अनादर होना है। आज भारत अनेक धर्मों का एक देश है। कई धर्मावलंबियों ने यहाँ शासन किया है उन्हीं ध र्मों का प्रभाव भी यहाँ पड़ा है। आज हमारा देश धर्मनिरपेक्ष माना जाता है। धर्मों का आपसी संघर्ष देश की एकता का अन्त कर डालता है। इसी प्रकार एक ही धर्म के विभिन्न सम्प्रदायों के बीच में भी संघर्ष होने की गुंजाइश है। इस प्रकार के संघर्ष भारत में भी हुए हैं। अयोध्या में वर्षों से हिन्दू और मुसलमान दोनो धर्म के लोग शान्ति के साथ निवास करते हैं। आज वहाँ बाबरी मस्जिद और राम मन्दिर के नाम पर संघर्ष बना रहता है। दोनों धर्म के लोगों में सौमनस्य तथा सद्भाव के साथ विचार होना है, और एक नतीजा निकाल लेना है। आखिर दोनों धर्मों के लोगों को रहना इसी मिट्टी में। किसी भी प्रकार का तनावपूर्ण व्यवहार सारे देश को तबाह कर डालेगा। देश की एकता में यह संघर्ष कितना भयानक रहेगा, यह सोचने की बात है। इसके साथ ही सवर्ण-अवर्ण, का भेद-भाव राष्ट्रीय एकता की जड़ उखाड़ देता है।

देशीय एकता में तीसरा बाधक तत्व प्रान्तीयता है। आज भी भारत में इस विघटन का स्वभाव देखने को मिलता है। मिट्टीट का पुत्तल नीति वस्तुतः एक घातक मनोभाव है, जहाँ अनेक प्रान्तों का एक विशाल देश है भारत। मद्रासी और कन्नड़वासी दोनों भारतीय हैं। उनकी समस्या भारत की समस्या है। उन्हें आपस में मैत्री का व्यवहार ही अपनाना पड़ेगा। इसके विपरीत जो भी मनोभाव हों, यह देश के लिए अहितकारी रहेगा। जब भारत

स्वाधीन हुआ तब दक्खिन के शासकों ने अपने को अलग-अलग स्वतन्त्र राष्ट्र घोषित करने की धृष्टता प्रकट की। पर उस समय **लौहपुरुष सरदार पटेल** ने ऐसा करने दिया होता तो आज भारत एक विशाल राष्ट्र के रूप में न रहता। आज भी वही मनोवृत्ति कतिपय लोगों में काम करती है। इसके विरूद्ध देशभक्तों एवं बुद्धिजीवियों को सचेत रहना है और सरकार को बल देना है। संकुचित प्रान्तीयता प्रेम, सभ्यता का द्योतक नहीं है।

देश की एकता में बाधक पहुँचाने वाला एक प्रमुख तत्व है, अलग- अलग प्रांतों का भाषा-प्रेम। इसका दोष एवं अनिष्ट परिणाम हम काफी देख चुके हैं। हमें वस्तुतः गौरव अनुभव करना चाहिए कि भारत में अनेक अच्छी भाषाएँ हैं। उन भाषाओं के गौरवशाली साहित्य हैं। अनेक विद्वाव एवं प्रतिभावान कवि इन भाषाओं के हुए हैं। इन्होंने देश की एकता के गीत गाए हैं। उन्होंने समझाया है कि हम भारतीय विश्व शान्ति के अग्रदूत हैं। तमिल भाषी सुब्रह्मण्या भारती, तेलुगु भाषी विश्वनाथ सत्यनारायण, कन्नड़ कवि कुवेंपु, मलयालम कवि उल्लूर, वल्लत्तोल और जी॰ शंकरकुरूप, बंगला कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर आदि देशीयता को प्रश्रय देने वाले कवि थे। हिन्दी भाषा के भी अनेक आधुनिक देशीय कवि हुए हैं। मैथिलीशरण गुप्त, सुमित्रानंदन पंत, जयशंकर प्रसाद, दिनकर आदि कवि कालिदास की परम्परा के कवि हैं। उन्होंने देश के एकत्व के बाधक तत्वों का खंडन किया है। समय समय पर उनकी चेतावनी और उद्बोधन से देश सांस्कृतिक चेतना प्रकट हुई है और उन्होंने देश को एकजुट होकर अपने गौरव को समझने का माहौल प्रदान किया है।

इस सन्दर्भ में यह कहना नितान्त आवश्यक है कि इन भाषाओं को गूँथकर एक सुन्दर माला बनाने की क्षमता वाली एक भाषी भी हो। नहीं तो, इन उच्च कोटि की भाषाओं का महत्व कैसे समझाया जा सकता है? भारत की अनेक भाषाओं

को, जन जीवन को परस्पर समझने के लिए वस्तुतः एक सम्पर्क भाषा की जरूरत तो है। उसी गौरवपूर्ण स्थान पर हिन्दी को प्रतिष्ठित करने का महत्वपूर्ण प्रयत्न किया था हमारे देशीय नेताओं ने। वहाँ तक ठीक हुआ। लेकिन, आज की, यानी स्वाधीनता प्राप्ति के 54 वर्ष बाद भी उसी हिन्दी भाषा को समुचित स्थान प्रदान करने में हमारी भारत सरकार समर्थ नहीं हुई है। इस उपेक्षाभाव के कारण भारत के शासन को एक दिन पछताना न पड़े यही कामना है।

देश की एकता में बाधा उपस्थित करने वाला एक प्रमुख तत्व देश की असमाजवादी व्यवस्था है। जिस देश में जनता को समाजवादी सुविधा न प्राप्त हो, वहाँ एकता का महत्व समझ में नहीं लाया जा सकता। इस तत्व को कार्यान्वित करने में सरकार की बड़ी जिम्मेदारी है। इस दिशा में भारत सरकार की जो कार्य योजनाएं चलती हैं, उन्हें देखकर बड़ा आनन्द होता है। जनता-जनार्दन के कल्याण-कार्यों में असंख्य योजनाएँ सरकार करती है। साक्षरता प्रयत्न से लेकर लोगों का स्वास्थ्य, निवास, खेलकूद, बाल-युवक वृद्ध-कल्याण पद्धतियाँ, सांस्कृतिक कार्यक्रम, स्त्रीजागरण, उचित शिक्षा-प्रणाली, किंबहुना मानव-मंगल के लिए जो भी जरूरी बात करनी है, उसकी पूर्ति में आज भारत सरकार क्रियाशील है। पीढ़ियों से बीते-गुजरे गिरिवर्गीय एवं अनुसूचित लोगों का उन्नयन भी बखूबी किया जा रहा है। वस्तुतः इन विशाल कार्यक्रमों से देश में एक प्रकार की समाजवादी व्यवस्था कायम हो सकती है और उसके परिणामस्वरूप देशीयता के बाधक तत्वों का निवारण भी हो सकता है। पर यह भी तब इन सब कल्याणकारी कार्य-व्यवस्थाओं पर स्वार्थमोही कतिपय व्यक्तियों का नियंत्रण न हो।

देश के प्रति प्रेम न होना एकता में बाधा पहुँचाना है। कुछ राजनीतिक दलों का विदेशियों एवं विधर्मियों से लगाव होता है, जिनसे हमें नुकसान होता है। यह लगाव स्वार्थपूर्ण अथवा गलत मानसिकता से हो सकता है। अथवा अन्तर्राष्ट्रीय कूटनीति से भी होता होगा। देश के प्रति निष्ठा या ममत्व रखने वाले कुछ लोग होते हैं। लेकिन ऐसे भी लोग होते हैं जो देशप्रेम का भाव न समझते हों, अथवा समझने पर भी स्वार्थवश उसका निषेध करते हों। ऐसे लोगों के कारण देश के नौजवानों की शिक्षाप्रणालियों एवं पाठ्यक्रमों में देशहित की समुचित सामग्री प्रस्तुत करने की नौबत ही नहीं मिलती। शिक्षा-क्रम में देश कुण्ठाग्रस्त बना रहेगा। नशीली वस्तुओं के उपयोग से असंख्य छात्र-छात्राएँ अपने जीवन को ही विपदाग्रस्त बना देते हैं। आज यह हमारे देश का एक अभिशाप बन गया है। देश की एकता एवं वृद्धि में सबसे खतरनाक तत्व यही है। दिशा-बोध का अभाव छात्रों को चिन्ताग्रस्त बना ही देता है।

उपर्युक्त अनेक राष्ट्र अहितकारी बातों को निष्कासित करने का एकमात्र मंत्र-पाठ है देशीयता-बोध और स्वस्थ मानसिकता। इसे सुलभ बनाने के लिए विचार में क्रांति लाना ज़रूरी है। जब विचार में क्रांति सम्भव है तब कोई व्यक्ति जाति, धर्म, सम्प्रदाय, प्रांतीयता और संकुचित भाषा प्रेम से मुक्ति पा लेगा। इसके लिए यदि ज़रूरी है तो एक राष्ट्रीय शिक्षा पद्धति तैयार की जानी चाहिए, जिससे निकट भविष्य अन्धकार से बच जाएगा। युवकों को भी तैयर करना ज़रूरी होगा। यह भी आवश्यक है कि छात्रों को मातृभाषा में शिक्षा दी जाए जिससे हिन्दी पर किया जाने वाला दोषारोपण निर्मूल होगा और देश में भाषा के नाम पर होने वाला सन्देह मिट जाएगा। आधुनिक वैज्ञानिक युग में चिन्तन, कथन और कर्म में एकरूपता लाना लाजिमी है। पर, भारत की लोकतन्त्र नीति एक स्तर तक नहीं पहुँची है। भारत की राष्ट्रीय एकता में यह कल्याणकारी नहीं है। देश की संस्कृति और सभ्यता तथा आर्थिक व्यवस्था में जब मेल हो, तभी मानवीयता के सच्चे संस्पर्श का अनुभव होगा।

सम्पर्कः श्री निकेतन, लक्ष्मीनगर,
पट्टम पोस्ट,
तिरुवनन्तपुरम-615004

With best compliments from:

M/S Charak Pharma
Govind Mithra Road
Patna- 800001
Phone:

शुभकामनाओं के साथ -

नालन्दा मेडिकल
मखनियाँ कुआँ रोड
पटना- 800004

न्यू नालन्दा मेडिकल
खजाँची रोड,
पटना-800004

आजाद होना चाहते हैं पाक अधिकृत कश्मीर के लोग

राधेश्याम तिवारी

आज पूरी दुनिया आतंकवाद की चपेट में आ चुकी है। ऐसे में दुनिया का कोई भी देश अब सुरक्षित नहीं है। जो अमेरिका आतंकवाद से लड़ने के लिए आज बेचैन है, इस आतंकवाद को फैलाने में उसकी भूमिका भी कम नहीं है। 11 सितंबर 2001को उसके दो महत्वपूर्ण ठिकानों पर आतंकवादी हमले से पूर्व अमेरिका को आतंकवाद से लड़ने की इतनी चिंता नहीं थी। आज पूरी दुनिया शोकाकुल है। होना भी चाहिए। लेकिन इस संवेदना का प्रवाह थोड़ा इधर भी होना चाहिए कि पिछले 20 वर्षों से कश्मीर में करीब 30 हजार लोग मारे जा चुके हैं। उन मरनेवाले बेगुनाह लोगों में सभी संप्रदाय के लोग थे। मुसलमानों की संख्या अपेक्षाकृत अधिक थी। कश्मीर में लगातार हत्याएं हो रही हैं, लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ कि अमेरिका कड़ककर कभी कश्मीर में हो रही हत्याओं के खिलाफ कुछ कहा हो।

अमेरिका द्वारा आतंकवाद को प्रोत्साहित करने का ही परिणाम है कि आज पूरी दुनिया के लिए आतंकवाद सबसे बड़ा रोग बनकर उभरा है। अगर पिछली बातों को छोड़ भी दें तो भी आज आतंकवाद के खिलाफ अमेरिकी प्रयासों से यह उम्मीद नहीं करनी चाहिए कि कश्मीर में हो रहे आतंकवादी हमलों के खिलाफ भी अमेरिका लड़ेगा। इसके लिए लड़ना तो भारत को ही पड़ेगा।

कश्मीर के मामले में भारतीय नेताओं का रवैया भी बहुत सराहनीय नहीं रहा। पाकिस्तान बार-बार कश्मीर के सवाल को उठाता रहा, लेकिन पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर के प्रति भारत ने कभी उतना उत्साह नहीं दिखाया, जितना पाकिस्तान ने भारतीय कश्मीर के मामले में दिखाया। जबकि आज **पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर** की स्थिति बद से बदतर है। वहां के लोग पाकिस्तानी शासन से मुक्ति चाहते हैं। पाकिस्तानी शासन के पक्षपातपूर्ण रवैये से लोग उब चुके हैं और अपनी नाराजगी का इज़हार लगातार कर रहे हैं। वहां की स्थिति को देखते हुए अपने घुटने के ऑप्रेशन के समय अटल जी ने अपने एक बयान में कहा था कि जब पाकिस्तान से बात होगी तो उसमें पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर का मामला भी रखा जाएगा। दुर्भाग्यवश आगरा शिखर वार्ता में स्थिति वार्ता के अनुकूल बन नहीं पाई।

पिछले 53 वर्षों से कश्मीर का वह हिस्सा पाकिस्तान के कब्जे में है और वह उसे वापस करने का नाम तक नहीं लेता, उल्टे कश्मीर में आतंकवाद को लगातार बढ़ावा देता रहा। पाक से यह पूछा जाना चाहिए कि किस अधिकार से उसने 1963 में कश्मीर का 5100 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र चीन को उपहार में दे दिया। उसने उस संयुक्त राष्ट्र के प्रस्ताव को क्यों नहीं माना जिसके अनुसार जनमत संग्रह कराने से पहले पाक को वह सारा क्षेत्र खाली कर देना था।

अभी हाल में वहां विधान सभा चुनाव के समय उन लोगों के पर्चे रद्द कर दिये गये जिन लोगों ने पाक अधिकृत कश्मीर को पाकिस्तान में विलय का मुखालफत किया था यह लोकतंत्र का खुल्लमखुल्ला उल्लंघन था। पाकिस्तान के कब्जे में जो कश्मीर है उसे पांच जिलों में बांटा गया है। ये जिले हैं-मुजफ्फराबाद, बाध, मीरपुर, कोटली एवं पुंछ। इस क्षेत्र की आबादी लगभग 20 लाख है। इसी क्षेत्र में आतंकवाद न केवल पाला जा रहा है, बल्कि आतंकवादियों को बसाया भी जा रहा है और वहां के निवासियों को हटा कर उसे पंजाब में बसा दिया गया है। यहां के लोग आई०एस०आई० द्वारा चलाए जा रहे प्रशिक्षण केन्द्रों से भी बहुत दुखी हैं। इस प्रशिक्षण से अक्सर बम के धमाके होते रहते हैं, जिससे अनेक स्थानीय लोगों की जानें जा चुकी हैं। यहां के लोगों को पाकिस्तान में रोजगार के अधिकार भी नहीं हैं। यहां की सारी आमदनी सरकार के पास चली जाती है लेकिन स्थानीय विकास के नाम पर कुछ भी नहीं होता। मंगला डैम की रॉयल्टी का मामला भी अधर में ही है। इस बांध से पाक को हर साल 11 अरब रुपये की आमदनी होती है, लेकिन इसका कुछ भी हिस्सा यहां के लोगों को नहीं मिलता। पाक सरकार उस बांध को 40 फुट ऊंचा करना चाहती है जिसके ऊंचा होने से लगभग 40 हजार लोग बेघर हो जाएंगे। उसके खिलाफ लगातार प्रदर्शन हो रहे हैं, लेकिन उसका जरा भी असर पाकिस्तान के निरंकुश शासन पर नहीं पड़ता।

जितनी तेजी से घटनाएं बदल रही हैं उसे देखते हुए अभी निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। समय अपना विकल्प स्वयं ढूंढ़ लेगा।

संपर्कः एफ-119/1, फेज-2
अंकुर एनक्लेव, करावल नगर,
दिल्ली-110094

DENSA

PHARMACEUTICALS PVT. LTD.

Mr. Devendra Kumar Singh
C. M. D.

022 - 8974777(O)
Fax : 8974777(F)
9525255285

Office :

Anurag Mansion, Shiv Vallabh Road
Ashok Van, Dahisar (East), Mumbai-400 068

Factory :

Plot No. 10, dewan&Sons, Udyog Nagar, Palghat,
Distt. - Thane, Mumbai (Maharashtra)

सिर पटकने की कला

❑ डॉ० रमाशंकर श्रीवास्तव

भारत में राजनीति अर्धशती पार कर चुकी है। नेताओं को पार्टी और देश का फर्क समझ में आने लगा है। जिनके लिए पार्टी ही सब कुछ रही, वे पार्टी से टूटने पर देश की चिंता में पड़ जाते हैं। वे पश्चाताप करते हैं कि मानवता के लिए कुछ नहीं कर सके। कितनों को निराशा इस कदर घेरती है कि वे अपना सिर पटक-पटककर फोड़ डालने के लिए तत्पर हो जाते हैं। उन्हें शिकायत रहती है कि इस सिर के ही कारण आज उनकी दुर्गति हुई। इस सिर ने ही उन्हें भ्रम में डाले रखा, जो वे न देश को समझ सके और न पार्टी को। सिर को ही लेकर इधर एक नई कला का विकास हुआ है। इसमें सिखाया जाता है कि सिर कैसे और कब हिलाना चाहिए और जरूरत पड़ने पर कब पटकना या पीटना चाहिए।

भारत जैसा देश अब अपना सिर पीटने की कला में निपुण हो चुका है। चुनाव परिणामों की हर घोषणा के बाद वह सिर पीटने लगता है। किंतु एक नेता ने पहले अपना सिर दीवार से पटक-पटककर उसे लहूलुहान किया और फिर पार्टी छोड़ संन्यास ग्रहण करने की घोषणा कर दी। पार्टी छोड़ना या पार्टी बदलना भी एक कला है। दोनों में बड़े तामझाम की जरूरत पड़ती है। प्रचार के साथ मीडिया वालों को प्रभावित करते हुए पार्टी बदलने का मजा ही कुछ और है। उनकी गतिविधियों को देख आम जनता अपना सिर थाम लेती है अथवा पीट लेती है। जब हमारा प्रिय नेता अपना सिर पीटेगा या पटकेगा, तो दूर-दूर तक की जनता अपना सिर पीटेगी। गांव शहर में सैकड़ों, हजारों के सिर फूटेंगे। विरोधी यदि एक कदम भी आगे बढ़ गया,तो कितनों के सिर उतर जाएंगे। यदि अखबार की सुर्खियों में दो पंक्तियों में भी जनता का बलिदान आ गया, तो जनता धन्य-धन्य हो उठेगी। उसका यह लौकिक जीवन सार्थक हो जाएगा। राजनीति का क्षेत्र एक कारखाने की तरह काम करता है। यहां सिर और मुकुट दोनों बनते हैं। मुकुट के मुताबिक जिनका सिर नहीं होता, तो उनको ठोक-पीटकर अनुकूल बना दिया जाता

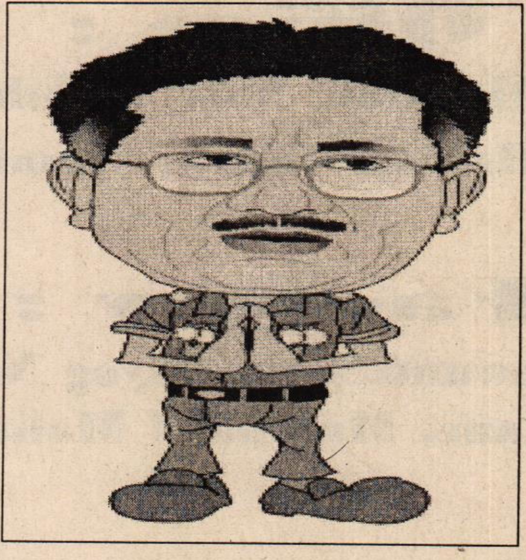

है। यह ध्यान रखना होता है कि सिर का मुकुट जनता के बीच हिलता नजर न आए। क्योंकि जनतंत्र में हिलते मुकुट को आदर नहीं मिलता। युगों से लोग मुकुटों को ही देखते आए हैं। भक्तिकालीन साहित्य में मीराबाई की गणना एक भक्त कवयित्री के रूप में भले हो मगर वास्तविकता है कि मीरा भी राजनीति का अच्छा ज्ञान रखती थीं और मुकुट का महत्व समझती थीं। तभी तो उन्होंने गाया-जाके सिर मोर-मुकुट मेरो पति सोई, मगर भारतीय राजनीति की सेवा में लम्बी प्रतीक्षा के बाद जिन्हें मुकुट नहीं मिले, वे अंततः घोर निराशा में डूब गए। सिर पटकने के सिवाय उनके सामने कोई चारा नहीं बचता। इसलिए मुकुट और सिर में मायावी-संबंध है।

माया फैलाने की इस कला में कुछ नेता बड़े कुशल हो गए हैं। वे घोषणा करके राजनीति को कोसते हैं और संन्यास ग्रहण कर लेते हैं। वे किस मठ पर या धरती के किस कोने में जाते हैं, किसी को ठीक-ठीक पता नहीं चलता। संन्यास के बाद एक नेता फिर लौटे हैं। उन्हें देश की चिंता खा रही है। चिंता उन्हें खाए उसके पहले वे देश को ही खा जाना चाहते हैं। कहते हैं अजीर्ण है, पर भूख बड़ी भारी है। भूखे पशुओं का चारागाह है यह भारत। उनके सिर की फिर पूजा होगी, कुछ लोग सिर पीटेंगे, कुछ पटकेंगे और कुछ उस स्थिति तक पहुंच जाएंगे, जहां यह अनुभूति भी नदारद होगी कि उनके पास सिर है कि नहीं। वे बड़े लोग यह अच्छी तरह जानते हैं कि जनता के पास सिर नहीं होता है, केवल भूखा पेट होता है। उसके लिए रोटी का एक टुकड़ा काफी है। इसलिए जिनको आज आगे बढ़ना है, उन्हें सिर पकड़ने से पटकने तक की कला सीखनी होगी। जो कुशल हैं, वे सिर चाहे जितना पटकें, उनके सिर का मुकुट नहीं गिरता। मुकुट है तो सिर है, वरना यह सारा संसार संन्यास स्थल है। आप भी चिमटा-कमंडल उठाकर कोई मुकुट पाने का प्रयास कीजिए। भगवान आपका अवश्य भला करेगा।

संपर्क: आर-7, वाणी विहार,
उत्तमनगर, नई दिल्ली

कबीर की 600 वीं जयन्ती पर

हैदराबाद में 'आज का समय और संत कबीरदास' पर परिचर्या

प्रस्तुतिः कविता वाचक्नवी

हिन्दी लेखक संघ की ओर से कबीर जयन्ती के अवसर पर पिछले दिनों सतनाम आधार कबीर डेरा, हैदराबाद में **आज का समय और संत कबीरदास** विषय पर आयोजित परिचर्या का उद्घाटन भक्ति एवं शोध संस्थान के निदेशक प्रो० राजकिशोर पांडेय ने दीप प्रज्वलित कर किया। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के अध्यक्ष प्रो० **दिलीप सिंह** ने विषय प्रवर्तन के दौरान कबीर का कथ्य और उसकी **अभिव्यंजना** पर केन्द्रित अपने बीज वक्तव्य में सबसे पहले वाराणसी के कबीर चौरा की अपनी संस्मृतियों को श्रोताओं के साथ बाँटा और फिर कहा कि कबीर साहित्य की जीवनी शक्ति इस तथ्य में निहित है कि कबीर ने **लोक** को पी लिया है। प्रारम्भ में हिलेस के कार्यदर्शी एम० उपेन्द्र ने अतिथियों का स्वागत किया।

इस अवसर पर **कबीर के राम** पर अपने आलेख प्रस्तुत करते हुए विवेक धर्मिनी महाविद्यालय की प्राध्यापिका डॉ० रेखा शर्मा ने कहा कि कबीर के राम असीमित हैं, वे आम आदमी के विरासत हैं। उनके राम ऐसे परम पुरुष हैं जो आम आदमी के बीच रहकर उन्हीं के हो जाते हैं। इसी प्रकार **कबीर का प्रेम** विषय पर अपने व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए उस्मानिया विश्वविद्यालय के आचार्य **डॉ० किशोरी लाल व्यास 'नीलकंठ'** ने प्रतिपादित किया कि कबीर का प्रेम संलग्नता से पैदा होता है, वह सत्यजन्य है। उनकी यह टिप्पणी भी खासी दिलचस्प रही कि **'लेखन कुत्ताधर्मी है।'**(कबीर कूताराम के सन्दर्भ में) क्योंकि लेखक समाज को जगाता और चेताता है। **साहित्य सुमन** की अध्यक्ष कवयित्री **डॉ०प्रतिभा गर्ग** ने **कबीर की धार्मिकता** विषय पर पर्चा पढ़ते हुए कहा कि कबीर का धर्म अन्धविश्वास नहीं बल्कि विचार की कसौटी पर आधारित है।

इसी क्रम में प्रस्तुत आलेखों पर चर्चा करते हुए विशेष अतिथि सरकार नानक सिंह 'निश्तर' ने यह जोड़ा कि कबीर साहब और नानक साहब जैसे संतों ने एक संक्रमण काल में भारत में मानवता के मत को पुनः स्थापित किया। जात-पात के बँटवारे का खण्डन किया। उस्मानिया विश्वविद्यालय के रीडर डॉ० धर्मपाल पीहल ने इस बात पर चिंता प्रकट की कि कबीर के नाम से प्रचलित रचनाओं में अनेक प्रक्षिप्त अंश जुड़े प्रतीत होते हैं। जबलपुर से पधारेअतिथि कवि-कथाकार ओमप्रकाश वाल्मीकि ने कहा कि कबीर राष्ट्रीय भाषा के कवि हैं जिनके चिंतन में आधुनिक दलित-साहित्य की प्रेरणा विद्यमान है।

उस्मानिया विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० एम० वेंकटेश्वर ने अपने

अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि कबीर का नैतिक साहस अनुकरणीय है, उनका काव्य हमारे साहित्य का स्वर्णिम अंश है। उन्होंने इस बात पर चिंता जाहिर की कि साम्प्रदायिक अन्तर्विरोधों के बीच कबीर का राजनीतिकरण किया जा रहा है। पहले सत्र का संचालन जहाँ **विचार दृष्टि** के ब्यूरो प्रमुख हैदराबाद तथा उच्च शिक्षा और शोध संस्थान के रीडर डॉ० ऋषभदेव शर्मा ने अपनी चुटीली टिप्पणियों और कबीर की सन्दर्भ-सापेक्ष साखियों द्वारा किया वहीं दूसरे सत्र के संचालक व **गीत चाँदनी** के कार्यदर्शी नेहपाल सिंह वर्मा, जो राष्ट्रीय विचार मंच की आन्ध्रप्रदेश इकाई के संयोजक भी हैं ने कहा कि कबीर भारतीय लोक-मानस में इतने गहरे पचे हुए हैं कि जन्म और मृत्यु तक उनका साथ बना रहता है। कबीर में लीक से हटकर चलने का साहस था और वे अपने विचारों से समाज में परिवर्तन लाने की खातिर आवाज उठाने वाले हिन्दी के पहले कवि थे।

'कबीर के काव्य में सामाजिक समभाव' विषय पर अपने आलेख में **कविता वाचक्नवी** ने कहा कि कबीर विषमताओं को समाप्त करने के लिए सौमनस्य और समभाव का जो संदेश देते हैं उसमें एक का विरोध और दूसरे की पक्षधरता न होकर सारी क्रांति के मूल में शांति व सद्भाव हैं । केन्द्रीय विद्यालय से सम्बद्ध गोपाल शर्मा ने **कबीर का विद्रोह** विषय पर अपने आलेख में कहा कि कबीर अपने समय के **एंग्री यंगमैन** थे। वे ऐसे क्रांतिकारी थ, जिन्होंने जो कहा, करके दिखाया।

केन्द्रीय विश्वविद्यालय के रीडर **डॉ० रविरंजन** ने **कबीर का समाजदर्शन** विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि कबीर बेचैन मन के आदमी थे तथा सामाजिक अन्याय और संवेदनहीनता के प्रसार के कारण दुःखी थे। डॉ० ऋषभदेव ने **कबीर का भविष्य और भविष्य का कबीर** विषय पर अपने आलेख में प्रतिपादित किया कि कबीर बनने के लिए पांखड-खंडिनी साफगोई, निर्भीकता, खुलेपन और मानवप्रेम की आवश्यकता होती है। गोवा विश्वविद्यालय के डॉ० रोहिताश्व ने कहा कि कबीर हिन्दी की नाभि की कस्तूरी हैं।

अन्त में यह सूचित किया गया कि इस संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेखों, व्याख्यानों को पुस्तकाकार कर प्रकाशित किया जाएगा। विद्वतजनों के प्रति आभार व्यक्त किया राजेन्द्र कुमार ने। संगोष्ठी के समापन सत्र में प्रो०दिलीप सिंह ने समस्त चर्चा-परिचर्चा का समग्र मूल्यांकन करते हुए माना कि सभी आलेख संतुलित, विचारोत्तेजक और महत्वपूर्ण थे।

सम्पर्कः उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण हिन्दी प्रचार सभा, खैरताबाद, हैदराबाद -500004

केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा भारतीय भाषाओं पर संगोष्ठी

विचार कार्यालय, तिरूवनंतपुरम

भारत की मिट्टी और जलवायु में समन्वित भाषा, संस्कृति और साहित्य के जीवन तत्व विद्यमान हैं, इसकी संस्कृति में समन्वय भाव नए उपकरणों को पचाकर आत्मसात करने की अद्भुत क्षमता है। इस देश में भारतीय भाषाओं और उसके साहित्य की विडम्बनापूर्ण स्थिति है क्योंकि कुछ मुट्ठी भर लोग अपने निहित स्वार्थों के लिए देश के कन्धों पर विदेशी भाषा को लादे रखना चाहते हैं। अंग्रेजी के बदौलत समाज में उनका वर्चस्व बना रहे, यही उनकी मनोवृति है। फलतः अपनी एक राष्ट्रीय भाषा के अभाव की वजह से देशवासियों में राष्ट्रीयता की भावना का दिन-व-दिन ह्रास होता चला जा रहा है। ये उद्गार हैं **विचार दृष्टि** के सम्पादक श्री सिद्धेश्वर के, जिसे उन्होंने विगत 4 सितम्बर, 2001 को **केरल हिन्दी प्रचार सभा** के तत्वावधान में तिरूवनंतपुरम स्थित प्रचार सभा के सभागार में **भारतीय भाषाओं की वर्तमान स्थिति और राष्ट्रीय नीति** विषय पर आयोजित एक विचार संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के पद से विषय प्रवर्तन करते हुए व्यक्त किए।

संगोष्ठी की अध्यक्षता केरल हिन्दी प्रचार सभा के सचिव प्रो० वेलायुद्धन ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय उद्गार में कहा कि राष्ट्रीयता का समुचित विकास न होना चिन्तनीय है। राष्ट्रीयता के कारक तत्वों के प्रति हमारी उदासीनता और एक हद तक उनकी उपेक्षा भी इसके कारणों में से एक है क्योंकि राष्ट्रीयता का तो आधार ही भाषा है। इसलिए भारतीय भाषाओं की उपेक्षा कर राष्ट्रीयता की भावना जागृत नहीं की जा सकती। केरल विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष ने खेद व्यक्त किया कि आजादी के 54 वर्षों के बाद भी हिन्दी सहित अन्य भारतीय भाषाओं को उनका उचित स्थान नहीं मिल सका है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के श्री शर्मा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि यह हमारा दुर्भाग्य है कि हमारे यहाँ कोई मुस्तफा कमाल नहीं हुआ और 54 साल बाद भी हम अंग्रेजी भाषा के आक्रामक तेवरों को झेल रहे हैं। **विचार दृष्टि** के ब्यूरो प्रमुख डॉ० रति सक्सेना ने कहा कि देश के स्वतंत्रता-संग्राम में योगदान करने एवं उसे सही दिशा प्रदान करने में हमारे देश की जिन भारतीय भाषाओं ने अपनी भूमिका निभाई उसकी ही आज उपेक्षा हो रही है, यह चिन्ता का विषय है। उपस्थित अतिथियों, विद्वतजनों तथा छात्र-छात्राओं के प्रति आभार व्यक्त किया डॉ० रति सक्सेना ने। राष्ट्रगान के बाद संगोष्ठी समाप्त की गई।

प्रस्तुतिः डॉ० रति सक्सेना,
तिरूवनंतपुरम

With Best Compliments From.

M/s Dina Iron & Steel Ltd.
Abdul Rahaman Road
Patna City
Patna - 8
Product: M.S. Ingot
Phone: 617850,617852

केरल के पाला में अ०भा० भाषा साहित्य सम्मेलन का 15 वाँ अधिवेशन सम्पन्न

विचार कार्यालय, तिरूवनंतपुरम

प्रस्तुति डा. एन. आर. एलाडम

विगत 1 एवं 2 सितम्बर, 2001 को केरल के कोट्टायम जिलान्तर्गत पाला के अरुणापुरम गांव में अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन के दो-दिवसीय 15वें अधिवेशन का आयोजन किया गया। डॉ० एच० एम० जोशी की अध्यक्षता में एक सितम्बर को आयोजित प्रथम सत्र का उद्घाटन करते हुए महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ० सिरियक थॉमस ने कहा कि हिन्दी की महत्ता न केवल राष्ट्रीय एकता के लिए आवश्यक है बल्कि सभी भारतीय भाषाओं की उपादेयता तथ भारतीय संस्कृति को बनाए रखने के लिए भी जरूरी है।

मलयालम के महाकवि श्री शंकर जी कुरूप की जन्म शताब्दी पर आयोजित इस अधिवेशन की सफलता की कामना करते हुए उन्होंने कहा कि महाकवि कुरूप ने मलयालम के उन्नयन के साथ-साथ हिन्दी के विकास व उसके उन्नयन की आवश्यकता का अनुभव किया था। इस सत्र को मलयालम स्नातकोत्तर विभागाध्यक्ष प्रो० हरीन्द्रनाथ कुरूप ने भी संबोधित किया। प्रारम्भ में अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष व संयोजक डॉ० एन० आर० एलाडम ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि केरल के प्रकृति प्रदत सुरम्य गांव में पधार कर आप सभी विद्वत जनों ने हमें गौरवान्वित किया है।

सभागार में बैठे हैं बाएं से श्री बल्भद्र कल्याण, डा. एन. शेषण, श्री सिद्धेश्वर तथा श्रीमती बी. प्रसाद

दूसरे सत्र में आयोजित राष्ट्रीय महासभा अधिवेशन में सम्मेलन के महासचिव सतीश चतुर्वेदी ने प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए सम्मेलन के विगत दो वर्षों के कार्यकलापों के साथ-साथ लेखा-जोखा प्रस्तुत किया। तदुपरान्त राष्ट्रीय अलंकरण समारोह में प्रत्येक राज्य के हिन्दी सेवियों को **भारत भाषा भूषण, साहित्यश्री तथा समन्वयश्री** से सम्मानित किया गया। इसके बाद राष्ट्रीय परिसंवाद सत्र में **भारतीय भाषाओं की उपेक्षा और राष्ट्र की नीति तथा देवनागिरी लिपि और राष्ट्रीय एकता** विषय पर राष्ट्रीय स्तर के विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किए। सम्मेलन के बिहार प्रान्तीय अध्यक्ष नृपेन्द्रनाथ गुप्त ने जहाँ **मलयालम साहित्य और राष्ट्रीय चेतना** पर अपने आलेख प्रस्तुत किए वहीं **विचार दृष्टि** के सम्पादक सिद्धेश्वर ने **भारतीय भाषाओं की उपेक्षा और राष्ट्रीय नीति** पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। 2 सितम्बर, 2001 के प्रथम सत्र में आयोजित महिला साहित्यकार सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुऐ इन्दौर की **डॉ० सन्ध्या** ने राष्ट्रीय एकता कायम करने में महिलाओं की भूमिका तथा महिलाओं के समक्ष खड़ी चुनौतियों पर चर्चा की। फिर सत्र के दूसरे चरण में आयोजित महिला कवि सम्मेलन में डॉ० सन्ध्या के अतिरिक्त निर्मला जोशी तथा नलिनी शर्मा आदि ने उपस्थित श्रोताओं को काव्य-सुधा-रस का पान कराया।

सम्मेलन के उपाध्यक्ष डॉ० एच० एम० जोशी की अध्यक्षता में हुए खुले अधिवेशन के मुख्य अतिथि **डॉ० एन० शेषन** ने अपने उद्गार में कहा कि हिन्दी के साथ-साथ समग्र भारतीय भाषाओं को जोड़ने का यह अधिवेशन एक सशक्त आन्दोलन है। यह बड़ी अच्छी बात है कि अब उत्तर के लोग भी दक्षिण के राज्यों में पधारकर भारतीय भाषाओं को सशक्त बनाने के साथ-साथ अपनी संस्कृति के संरक्षण का दायित्व अपने कन्धों पर लिया है। दुःख इस बात की है कि हिन्दी क्षेत्र के लोगों ने इस दायित्व को समझा है पर अभी तक परखा नहीं। हिन्दी को देश के कोने-कोने में ले जाने के लिए उन्हें परखने के इस दायित्व की जिम्मेदारी लेनी होगी।

अन्तिम सत्र में आयोजित अ० भा० सर्वभाषा कवि सम्मेलन में विभिन्न राज्यों के जिन प्रमुख कवियों ने अपनी कविताओं से श्रोताओं को सराबोर किया उनमें चन्द्रसेन विराट, थॉमस, डॉ० सन्ध्या, राजकुमार प्रेमी, सिद्धेश्वर, डॉ० वीरेन्द्र कुमार तिवारी, अवध बिहारी जिज्ञासु, बी०जोसेफ, दिवाकर,जॉनी जे० कलात्तोटल, उन्नी कृष्णन, डॉ० अमर कुमार सिंह, डॉ० राम कृष्ण सुमन, अनन्त संत, एस० पिपरसानिया, असीम मजुमदार, जगदीश श्रीवास्तव, बलभद्र कल्याण, तथा सतीश चतुर्वेदी उल्लेखनीय हैं। कवि सम्मेलन की अध्यक्षता उन्दौर के प्रतिष्ठित कवि **चन्द्रसेन विराट** ने की।

अधिवेशन के संयोजक तथा सर्वेसर्वा डॉ० एन०आर० एलाडम द्वारा अधिवेशन के सभी प्रतिनिधियों तथा उपस्थित विद्वतजनों के प्रति आभार व्यक्त करने के पश्चात अधिवेशन के समापन की घोषणा की गई।

-सम्पर्कः अरुणापुरम, पाला , कोट्टायम (केरल)

पटना में आतंकवाद पर विचार संगोष्ठी

प्रस्तुतिः आरती सिंह

साहित्यिक संस्था **समय संवाद** की ओर से 30 सितम्बर, 2001 को पटना स्थित **बिहार आर्थिक अध्ययन संस्थान** के सभागार में **अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद के खिलाफ साहित्यकारों की भूमिका** विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता डॉ० सच्चिदानन्द सिंह 'साथी' ने की एवं संचालन संस्था के महासचिव डॉ० शिवनारायण ने किया।

'विचार दृष्टि' के संपादक सिद्धेश्वर ने मुख्य वक्ता के रूप में आलेख पाठ करते हुए कहा कि आज अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद की जो चुनौतियाँ हमारे समक्ष खड़ी हैं, उसके खिलाफ अपनी कलम चलाना हर साहित्यकार का धर्म हो जाता है क्योंकि साहित्यकारों को अपने समय की चेतना का बोध कराना होता है।

विषय-प्रवेश करते हुए आरंभ में ही डॉ० शिवनारायण ने कहा कि मौजूदा वैश्विक परिवेश में आतंकवाद के चरम विस्फोट ने जिस प्रकार से शांति का अपहरण कर मानवता को चुनौती दी है, उसके खिलाफ शक्तिशाली जन अभियान में साहित्यकारों को रचनात्मक भूमिका निभानी होगी।

प्रारम्भ में डॉ० कलानाथ मिश्र ने स्वागत भाषण करते हुए कहा कि आज जबकि मानवता बारूद के ढेर पर खड़ी है एवं बंदूक-तोपों से निकलते गोले दिशाहीन हो गए हैं, ऐसे में हमें साहित्य की शरण में जाना होगा। लेखक पत्रकार डॉ० राधाकृष्ण सिंह का मानना था कि जब विचार स्थिर हो जाता है, तब लोगों में आतंकवादी प्रवृत्ति पनपने लगती है।

नाटककार सीताराम यादव ने कहा कि साहित्यकार ही युद्ध के परिवेश को बदल सकता है, क्योंकि विध्वंश की संवेदना को वही सबसे अधिक महसूस करता है। पत्रकार ध्रुव कुमार ने कहा कि युद्ध के भूमंडलीकरण के द्वारा मनुष्य को विनाश की ओर झोंका जा रहा है। आखिर तमाम विषमताओं के बावजूद क्या आज हम अफगानिस्तान में नागासाकी एवं हिरोशिमा की पुनरावृत्ति देखना चाहेंगे?

साहित्यकार कृष्ण कुमार विद्यार्थी 'नूर' ने मुख्य अतिथि के पद से कहा कि सामाजिक, राजनीतिक एवं अर्थिक आतंकवाद के साथ-साथ साम्प्रदायिक आतंकवाद की ओर ध्यान जाना चाहिए। बिहार सरकार के पूर्व मंत्री राधाकांत यादव ने आतंकवाद के निषेध में गांधी-दर्शन के विकास को आवश्यक मानते हुए कहा कि आतंकवाद से भी बड़ा खतरा भूख, गरीबी एवं बेकारी है, जो उसे जन्म देती है। आज गांधीवाद के हथियार से आतंकवाद को समाप्त किया जा सकता है। युवा कवि निविड़ शिवपुत्र का कहना था कि आतंक नहीं, आतंकवाद के खिलाफ साहित्यकारों की भूमिका की खोज होनी चाहिए। व्यंग्यकार अरुण कुमार ने कहा कि परहित सरिस धर्म नहीं भाई' का मंत्र ही आज आतंकवाद के खिलाफ साहित्यकारों का अस्त्र हो सकता है।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ० साथी ने कहा कि साहित्यकारों की भूमिका निर्णित है। आतंकवाद की प्रवृत्ति सभ्यता से जुड़ी हुई है। जीवन में प्रेम, दया और सौन्दर्य की आवश्यकता होती है, इसलिए साहित्यकार संवेदना के स्तर पर हमेशा युद्ध के विरोध में खड़ा होता है।

अन्य वक्ताओं में गोविन्द शर्मा, लघुकथा लेखक सिद्धेश्वर, ज्योतिशंकर चौबे, स्नेहलता पारूथी आदि ने भी आतंकवाद विरोधी गोष्ठी में भाग लेते हुए साहित्यकारों की सक्रिय भागीदारी की चर्चा की। पुस्तकालयविज्ञानी डॉ० रामशोभित प्रसाद सिंह के धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही इस विचारोत्तेजक संगोष्ठी का समापन हुआ।

संपर्कः 1/सी, अशोक नगर, पटना

शुभ कामनाओं के साथः

दूरभाषः 699270 (कार्यालय)
693997 (निवास)

नन्द किशोर सिंह एवं ब्रज किशोर सिंह

कातिब, पटना सदर

राजधानी फोटो स्टेट, पटना कलेक्ट्रियट,

पटना-800001

पावर ऑफ टॉर्नी, सेल डीड, गिफ्ट, वसीयतनामा, वय-व्याना, बँटवारा इत्यादि तथा सुन्दर एवं साफ फोटो स्टेट हेतु कृपया सम्पर्क करें।

निवासः सालिमपुर अहरा (बौलिया)

कदमकुआँ, पटना-800003

इफको

किसानों के लिये, किसानों की, किसानों के द्वारा।

3 दशकों से भी अधिक समय से उर्वरकों का विश्व का सबसे बड़ा सहकारी उत्पादक इफको–इंडियन फारमर्स फर्टिलाइजर कोऑपरेटिव लिमिटेड–भारतीय किसानों के जीवन एवं समय का अभिन्न अंग रहा है। वैज्ञानिक खेती में सहयोग, मिट्टी की जांच, स्वास्थ्य एवं शैक्षणिक कार्यक्रम में उनका दिशा–निर्देशन कर उनकी उपज को बढ़ा रहा है, सफलता के ऊंचे शिखर पर पहुंचने के लिये विकास को प्रेरित करने तथा प्रत्येक स्तर पर कृषकों की सहकारिता को मजबूत करने के लिये इफको ने एक पंच वर्षीय योजना – मिशन – 2005 की रूपरेखा बनाई है।

इफको उत्पाद के क्षेत्र

इफको यूरिया

इफको एन पी के

इफको डी ए पी

इफको

इंडियन फारमर्स फर्टिलाइजर कोऑपरेटिव लिमिटेड

34, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली–110 019

एक खुशहाल भविष्य का बीज बोता हुआ

मलयालम साहित्य और राष्ट्रीय चेतना

❑ नृपेन्द्र नाथ गुप्त

स्वाधीनता-प्राप्ति के पश्चात् जो राष्ट्रीय स्वाभिमान के भाव राष्ट्रवासियों में पैदा होना चाहिए था उसे सुविधाभोगी, सत्तालोलुप राजनेताओं ने दरकिनार कर दिया और निजी स्वार्थ, परिवारवाद और कुटुम्बवाद को इतना महत्व दिया कि सम्पूर्ण भारतीय समाज इस आपाधापी में अस्तव्यस्त हो गया। राष्ट्रपिता माहात्मा गांधी ने यह बताया था कि पराधीनता से मुक्त होने का मतलब केवल गोरों की जगह कालों की सरकार को स्थापित करना नहीं था, बल्कि भाषा, साहित्य एवं शिक्षा-दीक्षा आदि को भी विदेशी भाषा के अधिपत्य से मुक्त कराना था। भारतीय भाषाएँ साहित्य और संस्कृति को नये सिरे से प्रतिष्ठापित कर भारतीय जनता में एक नयी चेतना भरने का सशक्त अभियान होना चाहिए था किन्तु दुर्भाग्य यह है कि आज का भारत उनके सिद्धांतों एवं कार्यक्रमों के विपरीत उल्टी दिशा में चल रहा है।

संविधान में हमनें यह शपथ ली थी कि विभिन्न राज्यों की सरकारी कामकाज की भाषाएँ उस राज्य की अपनी भाषाएँ होंगी और राष्ट्रीय स्तर पर सन् 1965 ई० के बाद राष्ट्रीय सरकार अंग्रेजी की जगह हिन्दी का व्यवहार अनिवार्य रूप से करने लगेंगे, किन्तु अत्यन्त खेद है कि काले साहबों तथा कुटिल राजनेताओं के दबाव में आकर केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकारें अंग्रजी को ही अनिवार्य रूप से लादे रहने का षड्यन्त्र कर रही हैं। वैश्वीकरण तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया एवं कम्प्यूटर आदि के निरन्तर प्रयोग के बहाने अंग्रेजी भाषा के वर्चस्व कायम रख रही हैं, फलस्वरूप देश में राष्ट्रीय चेतना, स्वाभिमान और त्याग की भावना नहीं आ पा रही है। उसका मुख्य कारण अंग्रेजी को लादे रखना ही है। यदि प्रादेशिक भाषाएँ अपने-अपने राज्यों में सरकारी कामकाज तथा शिक्षा में प्रयोग में लाई जाने लगेगी तो निश्चित ही राजभाषा एवं सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग होने लगेगा और उससे आपसी सौहार्द्र और एकता में वृद्धि होगी। निस्संदेह हिन्दी के प्रसार-प्रचार के केरल राज्य की अभूतपूर्व एवं अग्रणी भूमिका रही है। यद्यपि मलयालम इस राज्य की राजभाषा है किन्तु, दुर्भाग्य से अंग्रेजी का वर्चस्व हटा नहीं है। राष्ट्रपिता बापू की प्रेरणा से केरल के साहित्यकारों और बुद्धिजीवियों ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया और राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी को सम्मान दिलाने के लिए इनका उत्साह आज भी जारी है।

राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत केरल में हिन्दी के प्रति कोई विद्वेष भाव नहीं है। केरल ही एक ऐसा राज्य है कि जहाँ हिन्दी को शिक्षा-दीक्षा में एक ऐच्छिक भाषा के रूप में स्वेच्छा से अपनाया गया है।

केरल की उत्पत्ति 'चेर' शब्द से हुई है, 'चेर' के राजा को ही 'चेरलन' कहा जाता था जो आगे चलकर 'चेरलन' से 'केरलन' और 'केरल' बन गया। कुछ विद्वानों के अनुसार केर (नारियल) का अलम् (खान) संयोग से 'केरलम्' शब्द बना। पहाड़, समुद्र और जंगल तथा नारिकेल वृक्षों के समूह से यह प्राकृतिक सुषमा से भरपूर मनोहरी दृश्य प्रस्तुत करने वाला है और मलयालम् यहाँ की सर्वमान्य भाषा है। भाषा वैज्ञानिकों ने इसे द्रविड़ गोल की भाषा मानी है। तमिल के साथ मलयालम् की घनिष्ठता है। यहाँ की लिपि वृत्ताकार लिखी जाती है जो हाथी के पदतल के समान वृत्ताकार रूप में उभरती है अतः उसे "गजवटिव" के रूप में भी हम जानते हैं।

तमिल और भारतीय भाषाओं की घनिष्ठता के कारण मलयालम आज भारत की समृद्ध भाषाओं में से एक है। प्राचीन कवियों में महाकवि चेरुशेरी और कुंचन आदि हैं तो आधुनिक काल में महाकवि बल्लतोलउल्लूर शंकर कुरूप, चंगनकुशा, कुंजीरामन नायर, बालमणि अम्मा, बैल्लूर आदि विख्यात हैं। कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में तक्सी शिवशंकर पिल्लई, पी० केशवदेव, मो० वशीर, के रवि वर्मा, सरदार के एम० पणिक्कर, के० दामोदरन् चुन्नु मेनन, सी० वी० रामन् पिल्लई, केशव देव, श्रीरामन् नायर आदि का नाम बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है। मलयालम नाटककारों को वी० जे० थॉमस, वी० एन० गोपीनाथन् अय्यर, एम० परमेश्वर पिल्ले, तोपिल्ल राज, तोप्पिल भाषिल आदि को हिन्दी के पाठक अत्यन्त ही सम्मान के साथ पढ़ते हैं।

मलयालम् साहित्य का इतिहास हिन्दी में लिखकर डॉ० भास्कर नायर ने महत्वपूर्ण कार्य किया है। उसी प्रकार श्रीमती रत्नमणी केरली साहित्य दर्शन नामक पुस्तक लिखकर हिन्दी पाठकों के लिए मलयाली साहित्य का द्वार सर्वसुलभ करवाया। फिर डॉ० ए० विश्वनाथन् का 'हिन्दी व्यावहारिक भाषा कोश' और कुट्टन पिल्लई का "मलयाली हिन्दी व्याकरण" मलयाली भाषा को समझने में बहुत महत्व

के हैं। हिन्दी के अनुसन्धान क्षेत्र में भी मलयालम साहित्य की काफी सामग्रियाँ आ गई हैं-यथा कृष्णभक्ति साहित्य में डॉ० भास्करन् नायर, कथा साहित्य के डॉ० गोविन्द शेनाई, नाट्यसाहित्य के एन० आई० नारायणन्, उपन्यास साहित्य में डॉ० दामोदर, आधुनिक कविता में डॉ० विश्वनाथ अय्यर, राम भक्ति साहित्य में डॉ० सुभद्रा अम्मा, बल्लतोल और मैथिलीशरण गुप्त में डॉ० के० एस० मणि, एंषुन्नतछो और तुलसीदास के द्वारा डा० जार्ज आदि ने मलयालम और हिन्दी को एक साथ लाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। भारत की भावात्मक एकता के लिए भी यहाँ के साहित्यकारों का बहुत उच्च स्थान है उसे हम विस्मृत कर अपनी राष्ट्रीयता का ही अहित करेंगे।

आज भी केरल के तीर्थ स्थानों में हिन्दी भाषा और साहित्य का अपना एक अलग महत्व है और मलयालम भाषी भी हिन्दी के माध्यम से सम्पूर्ण राज्य में अपना एक विशिष्ट स्थान रखने में सफल हुए हैं।

त्रावणकोर और कोचीन के राजवंशों द्वारा पुराने जमाने से ही संस्कृत और हिन्दी के पण्डितों को विशेष सम्मान दिया जाता रहा है। वहाँ हिन्दी बोलने वाले कर्मचारियों को विशेष मान्यता प्राप्त थी और अभी भी है। टीपू सुल्तान ने भी केरल में हिन्दी को तुर्क भाषा के रूप में अर्थात् मुसलमानों की भाषा के रूप में प्रचलित किया। फलस्वरूप मलयालम् में हिन्दी के कई शब्द व्यवहार में लाये जाने लगे। हिन्दी के शब्द-बाकी, रुमाल, रोटी, सिपाही, जमींदार, मुंशी, नकल, खुशहाल, सरकार, तहसीलदार ताल्लुकदार, जिला, दलाल, चुंगी आदि को मलयालम के-बाकी, उरुमाल, रोट्टी, सिबाई, जमीनदार, मुनोषी, नकल, कुशाल तालूक, जिल्ला, दल्लाल आदि के रूप में प्रयोग निःसंकोच हो रहा है। केरल के बन्दरगाह और शहर पहले से ही बहुत बड़े व्यापार केन्द्र के रूप में सम्पूर्ण भारत के लिए आकर्षण के केन्द्र रहे हैं। आलप्पी, कालीकट, कोचीन, कन्नुर आदि व्यापारिक केन्द्रों पर अभी भी हिन्दी सम्पर्क भाषा के रूप में व्यवहृत है। मलयालम साहित्य से भी हिन्दी का प्रयोग प्राचीन कवि हास्य सम्राट कुंचन नम्बियार की 'तुल्लन कथा' में देखने को मिलती है। केरल के राजाओं में स्वाति तिरुनाल, श्रीराम वर्मा राजा आदि विद्वानों के सैकड़ों मधुर गीत आज भी दक्षिण की संगीत सभा में सुनने को मिलते हैं। राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत केरल में हिन्दी के प्रति कोई विद्वेष भाव नहीं है। केरल ही एक ऐसा राज्य है कि जहाँ हिन्दी को शिक्षा-दीक्षा में एक ऐच्छिक भाषा के रूप में स्वेच्छा से अपनाया गया है।

केरल में हिन्दी-प्रचार का प्रारम्भ सर्वप्रथम 1922 ई० में सव० दामोदर उन्नी ने किया। इस कार्य में पं० हरिहर शर्मा जी का उन्हें निःस्वार्थ सहयोग प्राप्त हुआ। हिन्दी प्रसार-प्रचार में डॉ० के० वी० नायर, सी० वी० गोपाल कृष्णन् केशवन् नायर, ए० एन० राघवन नायर, श्री ए० चन्द्रहासन, श्री शिवराम पिल्लई, श्री नारायण देव,डॉ० एन चन्द्रशेखरन नायर श्री शंकरन्, डॉ० सी० मथाई, माधव चेन्नमल, इग्नेशियस, पं० देवदूत विद्यार्थी, रविवर्मा, ए० वेलायुधन, विश्वनाथ अय्यर, डॉ० गोविन्द सेनाई, डॉ० वी० के० दामोदर प्रसाद आदि के महत्वपूर्ण स्थान हैं। केरल में हिन्दी विद्यालय और महाविद्यालय भी अन्य दक्षिण भारतीय राज्यों की अपेक्षा हिन्दी के प्रसार-प्रचार में निष्ठा से लगे हैं। केरल के पूर्व मुख्यमंत्री नम्बूद्रिपाद महोदय तो हिन्दी के प्रबल समर्थक और पक्षधर थे। उन्होंने तो केरल में हिन्दी के प्रसार-प्रचार में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। इसी प्रकार यहाँ की पत्र पत्रिकाओं ने भी हिन्दी-प्रचार में महत्वपूर्ण योगदान किया है। 'हिन्दी-मित्र', 'विश्व-भारती', 'प्रताप', 'राष्ट्रवाणी', 'ललकार', 'युग-प्रभात', 'केरल भारती', केरल पत्रिका, केरल ग्रन्थालोकम आदि ने हिन्दी को फैलाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इसी सन्दर्भ में यह कहना हम अपना परम पुनीत कर्त्तव्य समझते हैं कि आधुनिक मलयालम साहित्यकारों की सृजनात्मक प्रतिभाओं से पूर्णत: अवगत नहीं रहने के कारण उनकी चर्चा विस्तार से करने में असमर्थ रहे हैं। यदि इसकी जानकारी हमें समय पर प्राप्त हो जाती तो यह त्रुटि सम्भवत: नहीं रह पाती।

क्या प्रगति, क्या कला साहित्य, क्या जीवन सर्वत्र केरल की एक समृद्ध परम्परा रही है, उनमें हिन्दी तथा भारतीय भाषाएँ और आधुनिक साहित्य को जानने की तीव्र उत्कंठा है। किन्तु अभी तक हिन्दी भाषी राज्यों में केरल के मलयाली साहित्यकारों और भाषा को उतना महत्त्व नहीं दिया जा सका है, जितना कि इधर के अंग्रेजीभाषी लेखकों को दिया जाता है।

अत: यह आवश्यक है कि हिन्दी भाषी क्षेत्रों में भी दक्षिण की किसी एक समृद्ध भाषा के पठन-पाठन की व्यवस्था हिन्दी भाषी राज्य सरकारों द्वारा की जानी चाहिए। साहित्यकारों तथा बुद्धिजीवियों को भी दक्षिण के साहित्यक समारोहों में अवश्य ही भाग लेना चाहिए। यह हमें भूलना नहीं चाहिए कि भारतीय चेतना एवं जीवन दर्शन के विकास में दक्षिण के स्वामी शंकराचार्य, वल्लभाचार्य, रामानुजाचार्य आदि संतों ने जो योगदान किया है उन्हें क्या हम विस्मृत कर सकते हैं?

हिन्दी यदि राष्ट्रीय अस्मिता की भाषा है तो विभिन्न राज्यों में उनकी अपनी भाषाएँ ही इसकी हकदार हैं। जब तक ऐसा नहीं होता तबतक राष्ट्रीय अस्मिता की रक्षा करना सम्भव नहीं होगा। संसार में अंग्रेजी, चीनी और फ्राँसीसी भाषाओं का धड़ल्ले से प्रयोग हो रहा है। किन्तु बहुल संख्या की दृष्टि से हिन्दी को दुर्भाग्य से उतना महत्व नहीं दिया जा सका है, जितना कि उसे मिलना चाहिए। फिर भी अब समय आ गया है कि दक्षिण की चारों भाषाओं को हिन्दी सम्बन्ध सेतु के सहारे उनमें आपसी मेलजोल बढ़ाया जाय। समस्त भारतीय भाषाओं के समन्वय से जो राष्ट्रीय चेतना उभरेगी वही राष्ट्रीय अस्मिता और स्वाभिमान की रक्षा करने में समर्थ होगी।

संपर्क:-'उदित आयतन', शेखपुरा,
बेली रोड ,पटना-13

कहानी

कहानी-एक हवेली की

❑ उर्मिला शुक्ल

पिछले अंक में कहानी के प्रथम किस्त में आपने पढ़ा कि नक्सलवाद के एक वनांचल का प्रभार जब मैडम को मिला तो अपने प्रथम प्रेस कन्फ्रेन्स में वह पत्रकारों की दृष्टि के घेरे में भीं किन्तु उस अंचल से उनका लगाव और उनका आत्मविश्वास जिसे उन्होंने धीरे-धीरे सहेजा था, केवल पत्रकारों के हर सवाल का उत्तर बड़ी सहजता से दिया क्योंकि समस्याओं के निदान के लिए उस अंचल की राजनीति में वहां के लोगों की सक्रिय भागीदारी की पक्षधर थीं। अब आगे का हाल जानने के लिए पढ़िए इस अंक में। - सम्पादक

उनकी मीठी वाणी ने इस बात को और पुष्ट भी किया था। सब इन्तजार में थे कि अब उन्हें किसी नये धर्म की दीक्षा दी जायेगी।

उनकी सोच गलत भी नहीं थी, बरसों से तो यही होता आया था। लोग आकर उन्हें समझाते, उन्हें बताते कि ईश्वर ही सबका कल्याण करते हैं और फिर गेरुआ वस्त्रधारी आते, उन्हें गेरुआ वस्त्र ओर नारियल देकर पुनः उनका उद्धार करते और यह सिद्ध करते कि यही धर्म सनातन है, यही उनका अपना है।

यह सब बताने वाले ये बात भी जानते थे कि इसी देश में जन्म लेकर सदियों से यहीं रहते हुए भी उस धर्म से उनका कभी कोई सम्बन्ध नहीं रहा था। वे तो अलग थे उनसे। उनकी अपनी संस्कृति थी, अपना अलग धर्म था, फिर भी कोशिशें होती रहीं एक बार नहीं, बार-बार।

लोग आते रहे अपने धर्म की डुगडुगी बजाकर उन्हें रिझाते रहे और अपना मतलब साधते रहे। भोलेभाले वनवासी कभी फादर की बात मान लेते तो कभी गेरुआ वस्त्रधारियों की।

मगर आज की पीढ़ी सब समझने लगी थी। शिक्षा के आलोक में तथाकथित धर्म का भीतरी रूप भी उजागर हो गया था। अब लोग सब समझने लगे थे। सो उन्हें भी लोगों ने धर्म बाबू मान लिया था। मगर उनकी वाणी में अफीम नहीं ताजी हवा थी जो उन्हें सचेत कर रही थी और खासकर फूलकुँवर को तो बनाया था, उन्होंने गढ़ा था, एक कुम्हार की भाँति सारे खोट काढ़ दिये थे और उन आँखों से एक नई फूलकुंवर निकली थी..............।

गाँव वालों को वे अक्सर समझाया करते, सच्चाई से उन्हें रूबरू कराते। अपना निर्णय उन पर थोपते नहीं थे, उन्हें निर्णय के द्वार पर स्वतंत्र छोड़ दिया करते थे।

उन्हें तो उनका विशेष सान्निध्य मिला था। यूं तो वे उनकी सेवा टहल के लिए रखी गयी थीं। मालिक और नौकर का रिश्ता था मगर उनके व्यवहार से कभी महसूस ही नहीं हुआ कि वे मालिक हैं। बड़ी से बड़ी बात भी कितनी सहजता से समझाया करते थे। पहली बार जब उनसे सामना हुआ था-"क्या नाम है तुम्हारा?"

"एमर ऽऽऽ निसिआ।"

पन्द्रह वर्षीय युवती हकला रही थी। मगर यह तो इस नाम का असर था। इस नाम के उच्चारण का अभ्यास ही नहीं था।

"क्या? जरा फिर से बताना।"

और उसने फिर से कोशिश की-"एमर निसि ऽऽऽ आ।" और उन्होंने उसे उच्चारण की इस कठिनाई से उबार दिया था:-

"तुम्हारे घर में क्या कहकर पुकारते हैं? मेरा मतलब घर का नाम।"

"फूल। फूलकुँवर।"-लगा जैसे कोई बोझ उतर गया हो।

"मैं भी तुम्हें इसी नाम से पुकारूंगा। ठीक है?"

"थन्कू फादर।"

"और यह फादर नहीं चलेगा। अपना सा नहीं लगता। तुम बाबा कहना।"

और वे मूल सी हल्की हो गयी थीं वह नाम कितना भारी था। वास्तव में ऊपर से लादी गयी हर चीज भारत ही होती है। यह पहला पाठ था उनके जीवन का और यहीं से उनके जीवन का नया अध्याय शुरू हुआ था। धीरे से अनजाने ही, कुछ ऐसे कि वे जान ही नहीं पायी। बिना किसी योजना के वैसे ही जैसे स्रोत फूटता है। उनके भीतर भी अनेक स्रोत फूटता है। उनके भीतर भी अनेक स्रोत फूट पड़े थे।

"देखो फूल! तुम्हें सिर्फ यहाँ का काम ही नहीं करना है, काम के साथ और भी बहुत कुछ करना है तुम्हें। समझ गयी न?"

बाबा मय किया कर पाऊँगी? पढ़ना लीखना भी तो कहा जानती हूँ

मय।"

"पढ़ना चाहोगी तुम?"

उत्तर आँखों में तैर उठा था। मगर एक अविश्वास भी उभरा था।

"काऊ पढ़ायेगा? और अब कइसे पढ़ पाऊँगी मय।"

"मैं पढ़ाऊँगा तुम्हें। देखो फूल पढ़ने के लिए स्कूल या उम्र जरूरी नहीं है। जरूरी है लगन। लगन हो तो कभी भी पढ़ा जा सकता है, किसी भी उम्र में।"

और फिर पढ़ने की थीं वे। अक्षर ज्ञान के साथ ही जीवन का पाठ भी। उनकी शिक्षा में समाज धर्म और देश के साथ ही देश की राजनीति भी शामिल थी। धीरे-धीरे वे इनका अर्थ समझने लगी थीं।

वे समझाया करते थे धर्म का वास्तविक अर्थ। उन्होंने ही बताया था-सभी धर्म का मूल एक है। मंजिल भी एक है, ईश्वर भी एक है। बस कुछ बिचौलिये हैं जो उसकी आड़ में अपना स्वार्थ साधते हैं और अपने स्वार्थ के अनुसार अपने धर्म को बड़ा और दूसरों को छोटा साबित करते हैं इसलिए हमें धर्म का वही स्वरूप अपनाना चाहिए जो हमारे करीब हो, जिसे हम आत्मसात कर सकें। वैसे ही जैसे हमारे वस्त्र हमें वही वस्त्र तो आराम देते है जो हमारे अनुकूल होते हैं। वही धर्म अपना लगता है जो हमारी जड़ों से फूटता है; जो हमारी मिट्टी से ही नहीं जुड़ा वह हमारे लिए कल्याणकारी कैसे होगा?......................

....

"देखो फूल! धर्म ही संस्कृति का अंग है और संस्कृति भीतर ही भीतर बहती है। अन्त: सलिला है वह। अब जैसे तुम्हारा ही उदाहरण लो, तुम्हारा धर्म बदल गया और नाम भी। मगर तुम उसे आत्मसात नहीं कर पायी। तभी तो आज इतने वर्ष बाद भी तुम अपने नाम का सही उच्चारण तक नहीं कर पाती। इतना ही नहीं, तुम्हें उस नाम के स्थान पर अपना पुराना नाम ही अच्छा लगता है क्यों? क्योंकि वह तुम्हारी मिट्टी से जुड़ा, इसलिए मन के भीतर तक पहुँचता है।"

ऐसी ही न जाने कितनी बातें वे समझाया करते। उनके साथ रहते हुए वे प्रखर और मुखर होती चली गई थी।

अब वे बहुत कुछ समझने लगी थी। उन्होंने जान लिया था कि उनके कल्याण की बात करने वाले वे धर्म कितने हितकर हैं? उनकी दशा तो साँप-छछुन्दर जैसी ही थी, वे न तो पूरी तरह उसे अपना सकते थे कि सात समुन्दर पार रहने वाले अपने भाई-बहनों में पूरी तरह शामिल हो सकें। उनमें घुल-मिल जायें। और न ही वे अपनी संस्कृति से पूरी तरह अलग हो पाये थे। तभी तो आज भी नाम के सिवा सब कुछ वैसा ही है। वही पहनावा, वही रहन-सहन,वही सल्फी,वही मड़िया। यहाँ तक कि बड़े दिन पर वही गोश्त भात। केक तो आज भी आकाश कुसुम ही है। फिर क्या बदल गया? यही कि वे कागजों में फुल कुँवर या समारू की जगह एमनेशिया या डेविड हो गये।

और अपने ग्राम डेवटा और तोलिन दाई के स्थान पर वे ईश्वर को याद करने लगे हैं। उनके क्रास की माला पहनने लगे हैं। मगर आज भी प्रार्थना सभा में लबादाधारियों के बीच अध नंगे-लंगोटी धारी लोग गले में चाँदी की माला पहनकर भी अलग से पहचाने जा सकते हैं।

और फिर उन्होंने अपनी क्रासवाली चेन उतार दी थी, जैसे साँप केंचुल उतर जाने पर हल्का हो जाता है। अब वह सिर्फ फूलकुँवर रह गई थीं।

अपनी बिरादरी के लोगों को वह समझाती, मगर वे समझना नहीं चाहते।

"देखो न बाबा लोग कुछ समझते ही नहीं, इसलिए तो इनकी दशा यह है"-वे खीज उठतीं।

"सुनो फूल। ऐसे धैर्य नहीं खोते। सब तुम्हारी तरह थोड़े ही हैं कि आसानी से समझ जायें। मगर तुम्हें समझाना है उन्हें। यही तो तुम्हारी परीक्षा है। तम्हारे सामने सिर्फ तुम्हारा गाँव ही नहीं है, देश में फैली वह शान्ति भी है जो ऐसी स्थितियाँ बनाती हैं। अपने फायदे के लिए वह लोगों की ऐसी खरीद करती हैं। तुम्हें उनसे भी जूझना है।"

और एक दिन थैला के साथ वहाँ से जाने को तैयार थे।

"मुझे जाना होगा फूल! देश में और भी तो फूलकुँवर है, उन्हें मेरी जरूरत है। वे अभी सो रही हैं उन्हें जगाना होगा.........................।"

उनके जाने की खबर जंगल में आग की तरह फैली थी। लोग जिस हालत में थे वैसे ही दौड़ चले आये थे, लोग रो रहे थे, विनती कर रहे थे कि उन्हें छोड़कर न जायें।"

मगर वे रुके नहीं। जाते समय उन्होंने पलट कर देखा था और कहा था-"फूल, तुम जागती रहना। औरों को भी जागाने की जिम्मेदारी तुम पर है। सोना नहीं, समझी"- कहते समय उनके चेहरे पर करुणा मिश्रित मुस्कान ठहर गयी थी। वह मुस्कान आज भी उभर-उभर आती है।

और वे चले गये थे! कहाँ? किसी को नहीं मालूम। वे अर्थात् रुद्रदत्त जी। उनके जाने के बहुत बाद में उन्होंने जाना था कि वे कितने महान थे, एक सच्चे देशभक्त, समाज के हितैषी और सर्मपुजारी थे। अपने पर गर्व हुआ था कि वे इतने बड़े इंसान के इतने करीब थीं। उनके स्नेह का भागी बनी थीं।

उन्होंने ही राजनीति से जुड़ने की प्रेरणा दी थी। राजनीति के करीब लाने का श्रेय उन्हीं को जाता है। राजा वीरेन्द्र प्रताप सिंह से परिचय भी उन्होंने ही कराया था। और वे राजा साहब की सहयोगी बनकर राजनीति में उतारी गयी थीं।

.........अब आगे अगले किस्त में

नॉयपाल को साहित्य का नोबेल पुरस्कार भारत में खुशी की लहर

प्रस्तुति डा. विद्या शर्मा

भारत के एक लोक सेवा अधिकारी के पुत्र **वी०एस०नॉयपाल** को इस साल साहित्य के **नोबेल पुरस्कार** के लिए चयन किया गया है। उन्हें उनकी पुस्तक **'द एनिगमा ऑफ अरायवल'** के लिए यह पुरस्कार 10 दिसम्बर को अन्य क्षेत्रों के नोबेल पुरस्कार विजेताओं के साथ स्टॉक होम में आयोजित एक समारोह में स्वीडन के **सम्राट कार्ल** सोलहवें के हाथों दिया जाएगा।

समाज के हाशिए पर सांस लेते व्यक्ति को चित्रित करनेवाले भारतीय मूल के ब्रिटिश लेखक **विद्याधर सूरज प्रासाद नॉयपाल** का जन्म 1932 में त्रिनिदाद के पोर्ट ऑफ स्पेन में हुआ था। उन्हें यह पुरस्कार साहित्य की वर्तमान परम्पराओं एवं प्रवृतियों को अपनी खास शैली से नया रूप देने के लिए दिया जा रहा है।

नयी सहस्त्राब्दी में साहित्य का पहला नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने का गौरव पाने वाले नॉयपाल को 10 लाख डॉलर की राशि मिलेगी। साहित्य का नोबेल पुरस्कार पानेवाले नॉयपाल भारतीय मूल के दूसरे व्यक्ति हैं। 88 साल पहले 1913 में **गीतांजलि** के लिए **रवीन्द्रनाथ टैगोर** को यह नोबेल पुरस्कार से भारत गौरवान्वित है। नॉयपाल साहित्यिक समुद्र के ऐसे नाविक हैं जो शायद ही कभी अपने अन्दर रहते हैं। उनके लेखन में विदेशों में बसे भारतीयों के अन्तर्द्वंद्व और व्यथा का हृदयग्राही वर्णन हैं जो स्थानीय समाज से एकाकार होने की कोशिश करते हुए अपनी जड़ों से भी जुड़े रहना चाहते हैं। वह पिछले 50 साल से ब्रिटेन में रह रहे हैं और उन्हें अपनी जड़ों की तलाश करनेवाले अप्रवासी समाजों की मानसिकता का विश्व का कुशलतम चितेरा

माना जाता है। उनकी रचनाओं में भारत बराबर सांस लेता रहा है यह भारतवासियों के लिए बेहद खुशी की बात है। इनकी अन्य कृतियों में **अ बेड इन द रिवर, एन एरिया ऑफ डार्कनेस, हाउस फार मिस्टर** बिश्वास प्रमुख हैं। नायपाल को 1990 में महारानी एलिजाबेथ ने **नाइट** की उपाधि से नवाजा था। इन्होंने प्रारम्भ में पोर्ट और पेरिस में शिक्षा ग्रहण करने के बाद ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन किया। वह सबसे पहले प्रतिष्ठित **बुकर पुरस्कार** जीतनेवाले लेखकों में से एक है, जो उन्हें उनकी श्रेष्ठ कृति **इन ए फ्री स्टेट** के लिए 1971 में प्रदान किया गया था।

भारत में इस समाचार पर पहली प्रतिक्रिया यह हुई कि नॉयपाल भारतीय मूल के सातवें व्यक्ति हैं जिन्हें विश्व का यह शीर्ष पुरस्कार मिला। जिस प्रकार कश्मीर के एक कौल परिवार का नाम नहर के किनारे रहने से **नेहरू** पड़ गया था, उसी प्रकार नॉयपाल का परिवार जब पोर्ट ऑफ स्पेन में बसने आया तो **नेपाल स्ट्रीट** में मकान मिला और इसी नेपाल से परिवार का नाम ही नॉयपाल पड़ गया। 30 साल की उम्र में 1962 में पहली बार वे भारत आए और पूर्वी उत्तर प्रदेश में स्थित अपने पुरखों के गाँव गए, जिसे उन्होंने **द विलेज ऑफ ए दूबेज** कहा है। उनके कृतित्व में भी भारत की गहरी छाया है। पिछले चालीस साल में भारतीय समाज ,सभ्यता और हवा में जो परिवर्तन आए हैं उसका विशद, गहन और मार्मिक चित्रण इनकी कृतियों में हुआ है। नॉयपाल के पूरे कृतित्व में सरल उत्तर नहीं मिलेंगे, जो मिलेंगे, तो गंभीर, गहन, जटिल प्रश्न और प्रसंग, दीन-हीनों के प्रति एक निर्मम पर कठोर -करूण कचोट भरा लगाव और निर्भीक निपट ईमानदारी लेखन कार्य। नोबेल पुरस्कार तो किसी न किसी लेखक को हर साल ही मिलता है पर हमारी अपनी व्यथा-कथा को कभी क्षुब्ध और कभी द्रवित होकर कहने वाले नॉयपाल अकेले लेखक हैं।

विचार दृष्टि परिवारकी ओर से नॉयपाल को हार्दिक बधाई।

संयुक्त राष्ट्र और कोफी को शांति नोबेल पुरस्कार

189 देशों के संयुक्त राष्ट्र संघ और उसके 63 वर्षीय महासचिव कोफी अन्नान को विश्व में संघर्षों को समाप्त कर शांति की स्थापना और मानवाधिकारों की रक्षा के लिए संयुक्त रूप से शताब्दी नोबेल शांति पुरस्कार के लिए चयन किया गया है। संयुक्त राष्ट्र ने अपने पचास सालों के इतिहास में यह पुरस्कार कभी नहीं जीता है। महासचिव के रूप में कोफी अन्नान ने इस विश्व संस्था में नये जीवन का संचार किया है।

अब केशुभाई की जगह नरेन्द्र मोदी हुए गुजरात के नए मुख्यमंत्री

विचार कार्यालय, अहमदाबाद

यों तो विगत 26 जनवरी को गुजरात के कई क्षेत्रों में हुए भूकम्प के समय बचाव और राहत कार्य में लापरवाही बरतने के लगे आरोप के बाद ही मुख्यमंत्री केशुभाई पटेल की गद्दी हिलती नजर आ रही थी, किन्तु इधर गुजरात के सावरकांठा लोक सभा और सावरमती विधान सभा सीटों के उपचुनाव में ये दोनों सीटें भाजपा द्वारा गंवा दिए जाने के बाद तो श्री पटेल का जाना निश्चित हो गया था। सो पार्टी की हार और राज्य सरकार की धूमिल हुई छबि को सुध रने के लिए पार्टी के तेज तर्रार नेता नरेन्द्र मोदी को गुजरात का नया मुख्य मंत्री बनाया गया।

डॉ० बालशौरि रेड्डी को 'हिन्दी रत्न'

प्रस्तुतिः सीताराम सिंह

दक्षिण भारत में हिन्दी के पताका को जबरदस्त रूप से फहराने वाले अनन्य हिन्दी सेवी तथा तेलुगू व तमिल साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर डॉ० बालशौरि रेड्डी को विगत 1 अगस्त, 2001 को नई दिल्ली के हिन्दी भवन में आयोजित राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन जयन्ती के अवसर पर **प० भीमसेन विद्यालंकार स्मृति हिन्दी रत्न सम्मान** से विभूषित किया गया। इस अवसर पर उन्हें समृति चिन्ह, शॉल,

प्रशस्ति पत्र एवं 10 हजार रुपये की राशि दैनिक भास्कर के सम्पादक आलोक मेहता तथा **पंजाब केसरी** के सम्पादक विजय चोपड़ा द्वारा भेंट की गई। अपने उद्गार में श्री मेहता ने डॉ० रेड्डी की हिन्दी साहित्य के प्रति की जा रही सेवाओं की चर्चा करते हुए कहा कि आज कम्प्यूटर के युग में भी हिन्दी अंग्रेजी का कदम से कदम मिलाकर चल रही है और पत्रकारिता के क्षेत्र में भी अंग्रेजी पत्रकारिता से कहीं आगे है। व्यंग्यकार डॉ० वीरेन्द्र सक्सेना ने डॉ० रेड्डी के हिन्दी योगदान को रेखांकित करते हुए कहा कि डॉ० रेड्डी केवल दक्षिण भारत ही नहीं बल्कि पूरे देश में हिन्दी का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं।

अपने सम्मान के उत्तर में डॉ० बालशौरि रेड्डी ने कहा कि हिन्दी क्षेत्रों के साहित्यकारों द्वारा ही आज हिन्दी उपेक्षित है जो चिन्ता का विषय है। उन्होंने हिन्दी को रोजी-रोटी से जोड़ने की माँग करते हुए सभी प्रबुद्धजनों से आग्रह किया कि वे हिन्दी के प्रति अपनी हीन-भावना का त्याग कर उस पर गर्व करें तभी हिन्दी जन-जन की भाषा बन सकती है। इस हिन्दी रत्न अर्पण समारोह में नगर के सुप्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकारों के अतिरिक्त गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे जिनमें कथाकार कमलेश्वर, प्रो० जयपाल विद्यालंकार, डॉ० राकेश टंडन, व्यंग्यकार डॉ० गोपाल प्रसाद व्यास, कवि गोविन्द व्यास तथा डॉ० कमल किशोर गोयनका का नाम विशेषरूप से उल्लेखनीय है। कार्यक्रम का संचालन हिन्दी भवन के निदेशक तथा चर्चित रचनाकार डॉ० शेरजंग गर्ग ने किया।

संपर्कः सचिव, राष्ट्रीय विचार मंच,
पुष्प विहार, नई दिल्ली

जिया लाल आर्य अमेठी रत्न से सम्मानित

विचार कार्यालय, पटना

राष्ट्रीय विचार मंच के अध्यक्ष तथा भारतीय प्रशासनिक सेवा के पूर्व अधिकारी **जियालाल आर्य** को अमेठी की गौरव वृद्धि के लिए **अमेठी रत्न** से सम्मानित किया गया। साहित्यकार श्री आर्य को यह सम्मान 4 अक्टूबर, 2001 को सुलतानपुर के रामनरेश त्रिपाठी सभागार में आयोजित **राजर्षि रणंजय सिंह सम्मान समारोह** में उत्तर प्रदेश के शिक्षा विद् राज्यपाल **प्रो० विष्णुकान्त शास्त्री** द्वारा एक प्रतीक चिन्ह, चांदी की थाल, शॉल तथा 5001 रु० की राशि प्रदान कर किया गया। **राष्ट्रीय विचार मंच** तथा **विचार दृष्टि** परिवार की ओर से श्री आर्य को हार्दिक बधाई।

राजेन्द्र रैमन मैगसेसे पुरस्कार से सम्मानित

सूखाग्रस्त इलाकों का कायाकल्प कर दिखाया

प्रस्तुतिः मनोज कुमार

भारत के राजेन्द्र सिंह को वर्ज 2001 के **रैमन मैगसेसे** पुरस्कार के लिए चयन किया गया है। स्वैच्छिक संस्था **तरुण** भारत संघ के सचिव राजेन्द्र सिंह को 50 हजार डॉलर का यह पुरस्कार राजस्थान के अलवर जिले में मिट्टी को उपजाऊ बनाने तथा पानी की समस्या के समाधान कर ग्रामीणों को प्रोत्साहित करने के लिए 31 अगस्त को फिलीपींस की राजधानी मनीला में दिया गया। इसके पूर्व पिछले वर्ष सूचना मुद्दे पर राजस्थान के ही अरुणा राय को इस पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। राजेन्द्र सिंह समेत सात व्यक्तियों को इस वर्ष के मैगसेसे पुरस्कार के लिए चुना गया था। एशिया के नोबल पुरस्कार **इंडोनेशिया** की 29 वर्षीया **दितह इंडाहसारी** को श्रमिकों के शोषण के खिलाफ आवाज उठाने तथा **कंबोडिया** की 34 वर्षीया **ओंग कैथोल** को महिलाओं के साथ होनेवाले अपराधों के खिलाफ संघर्श के लिए दिया गया है। इस वर्ष के अन्य पुरस्कृत लोगों में चीन की राजधानी पेइचिंग में म्यूनिसिपल पीपुल्स कांग्रेस में सहायक 63 वर्षीया वू छिन और चीन के ही 71 वर्षीय वैज्ञानिक **युआन लांगपिन** शामिल हैं। सुश्री छिन को महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए तथा लांगपिन को संकरित चावल किस्म विकसित करने के लिए चुना गया। जापान के 70 वर्षीय **इकोओ हीरायामा** को एक नागरिक तथा यूनेस्को के सद्भावना राजदूत होने के नाते एशिया के विभिन्न सांस्कृतिक स्थलों के संरक्षण के लिए संयुक्त रूप से कार्य करने के लिए यह पुरस्कार दिया गया। श्रीलंका के 74 वर्षीय **के० डब्ल्यू डी० अमरदेवा** को पत्रकारिता, साहित्य और रचनात्मक संचार कलाओं में अपनी सिंहली संस्कृति से बौद्ध अर्चनाओं, भारतीय रागों और ईसाई भजनों को शामिल करने के लिए इस पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार फिलीपींस के तीसरे

राष्ट्रपति की याद में स्थापित किए गए जिनका निधन 50 के दशक में एक विमान दुर्घटना में हो गया था।

शादी हुए मात्र डेढ़ साल ही हुए होंगे जब 28 वर्षीय राजेन्द्र असली भारत के लिए कुछ विशेज करने की जुनून लिए जयपुर में युवा शिक्षा के प्रोजेक्ट समन्वयक की नौकरी छोड़ तथा अपनी नयी नवेली दुल्हन को मायके विदा कर अपने गन्तव्य की ओर चल पड़े। उनके घरवालों ने उस वक्त श्री सिंह को **नालायक** कहा था क्योंकि राजेन्द्र ने जयपुर के अपने आवास के सभी फर्नीचरों, टीवी तथा फ्रिज को बेच गीताघाट जाकर एक जर्जर बस पर सवार हो अपने **नालायक** साथियों-नरेन्द्र, सतेन्द्र, केदार और दृगपाल के साथ अपने लक्ष्य की प्राप्ति में निकल पड़े थे।

श्री सिंह के प्रयासों से जब अलवर जिले की अखरी नदी का प्रादुर्भाव हुआ तो राष्ट्रपति **के० आर० नारायणन** स्वयं इस चमत्कार को देखने पहुँचे। राष्ट्रपति ने 28 मार्च 2000 को **राजेन्द्र सिंह** को **डाउन टू अर्थ** पुरस्कार से भी सम्मानित किया था।

कथा सम्राट मुंशी प्रेमचन्द की 122 वीं जयंती पर दिल्ली में 'गबन के स्त्री-पात्रों की प्रमुखता' पर संगोष्ठी

प्रस्तुतिः सुधीर रंजन

स्वाभाविकता और सहजता ही प्रेमचन्द के लेखन की सबसे बड़ी विशेषता है। उनके उपन्यास **गबन** में प्रत्यक्षत: गांव नहीं बल्कि इलाहाबाद और कलकत्ता दो शहर की चर्चा है परन्तु गांव के सारे संस्कार उसके पात्रों में दिखते हैं। जलपा के संस्कार गांव के संस्कार हैं। गबन के स्त्री-पात्रों की संवेदनाओं से यह परिलक्षित है कि परिस्थिति के आगे व्यक्ति किस तरह परिवर्तित होता है। आभूषण--प्रेम के वशीभूत **जलपा** जब स्वतन्त्रता-आन्दोलन की भावना से प्रेरित होती है तब उसकी लौ के सामने रमानाथ की लौ भी धीमी पड़ जाती है, यही है स्त्री-पात्रों की विशेषता। ये विचार हैं राजधानी कॉलेज, नई दिल्ली के हिन्दी प्राध्यापक डॉ० **रमाशंकर श्रीवास्तव** के, जिसे उन्होंने विगत 1अगस्त को कथा सम्राट मुंशी प्रेमचन्द की 122 वीं जयंती के अवसर पर **राष्ट्रीय विचार मंच** द्वारा आयोजित एक विचार संगोष्ठी में मुख्य वक्ता की हैसियत से व्यक्त किए। दिल्ली के शकरपुर स्थित मंच के केन्द्रीय कार्यालय **दृष्टि में 'गबन' के स्त्री-पात्रों की प्रमुखता** विषय पर आयोजित संगोष्ठी के मुख्य अतिथि थे हिन्दी, तेलुगू तथा तमिल साहित्य के सुप्रसिद्ध हस्ताक्षर डॉ० बालशौरि रेड्डी ने प्रेमचन्द को आज भी उतना ही प्रासंगिक बताया जितना वे आज से 70-80 साल पहले थे।

प्रारम्भ में संगोष्ठी का विषय प्रवर्तन करते हुए **विचार दृष्टि** के सम्पादक सिद्धेश्वर ने कहा कि प्रेमचन्द एक ऐसे मानवतावादी कथाकार हैं जिन्होंने अपनी कथा के माध्यम से सामाजिक व पारिवारिक जीवन की गुत्थियों व समस्याओं को सुलझाने का प्रयास किया था। उनके उपन्यास **गबन** में स्त्री-पात्र जलपा एक ऐसी आदर्श नारी है जो यह साबित कर देती है कि जरूरत पड़ने पर नारी अपने घर की चहारदीवारी से बाहर आकर अपने कर्तव्य का पालन कर सकती है, अपने विवेक का परिचय दे सकती है और समय आने पर वह त्याग की प्रतिमूर्ति भी बन सकती है। कर्तव्य, त्याग, विलासिता और आभूषण-प्रेम से मिश्रित गुण जलपा के पात्र की बहुत बड़ी विशेषता है।

इस अवसर पर उपस्थित दिल्ली दूरदर्शन के **अमर कुमार 'अमर'** ने अपने उद्गार में कहा कि स्वतन्त्रता संग्राम और गरीबी के बीच दबी-कुचली इन दो पाटों में बटीं प्रेमचन्द के **गबन** की नायिका सड़ी-गली परम्पराओं का विरोध करती है। संगोष्ठी के अध्यक्ष तथा दैनिक भास्कर के वरिष्ठ पत्रकार राधेश्याम तिवारी ने अपने अध्यक्षीय भाषण के दौरान स्त्री के सन्दर्भ में दिनकर का हवाला देते हुए कहा कि हम मूर्ति की पूजा इसलिए नहीं करते कि उसमें देवता का निवास है बल्कि इसलिए कि उसने तराशे जाने का दर्द सहा है। प्रेमचन्द के स्मरण के साथ ही हम प्रेमचन्द के पूरे युग का स्मरण करते हैं। जिस प्रकार मार्क्स को गोर्की मिला था, उसी प्रकार गाँधी को प्रेमचन्द।

संगोष्ठी के विशिष्ट वक्ता सोमदत्त शर्मा 'सोम' ने उपस्थित प्रबुद्धजनों को स्मरण दिलाया कि रमानाथ द्वारा नगरपालिका के रुपयों के **गबन** को याद करने के साथ-साथ आज हो रहे बड़े-बड़े गबन और घोटाले के पीछे जो तथ्य छिपे हैं उसकी पड़ताल करने की आवश्यकता है। आकाशवाणी के सहायक निदेशक तथा मंच के संयुक्त सचिव डॉ० मेदिनी राय ने प्रेमचन्द साहित्य में छिपे सामन्तवाद के विरोध की चर्चा करते हुए कहा कि टूट के कगार पर खड़ी सामंती व्यवस्था में आज सबसे ज्यादा असुरक्षित यदि कोई है तो वह स्त्री है। गबन के स्त्री-पात्रों के आभूषणों-के प्रति आकर्षण के पीछे भी स्त्री की असुरक्षित मानसिकता ही है जिसे वह भविष्य निधि के रूप में इस्तेमाल करना चाहती है। पटना से पधारे व्यंग्य रचनाकार बाँके बिहारी तथा मंच के उपाध्यक्ष जे०एन०पी० सिन्हा ने भी विषय पर अपने विचार रखे।

संगोष्ठी के दूसरे चरण में आयोजित काव्य-सन्ध्या में 'अमर' जी ने जहां ग्रामीण परिवेश के गीत का सस्वर पाठ किया वहीं डॉ० रमाशंकर श्रीवास्तव तथा बाँके बिहारी ने व्यंग्य रचनाएं सुनाईं। जे०एन०यू० के भरत त्रिपाठी ने **बाबा नागार्जुन** को समर्पित कविता, दिल्ली वि०वि० के संजीव ने तुम बन जाओ घहराती हुई नदी........, ब्रजेश ने **जी०बी० रोड की शर्मिला कैसी हो,** डॉ० मेदिनी राय ने **देश के** कर्णधार, डॉ० बालशौरि रेड्डी ने प्रसव-पीड़ा तथा 'सोम' जी **मत खो दो नींव** शीर्षक कविताओं का पाठ कर उपस्थित सुधीजनों को सराबोर किया।

अन्त में मंच के सचिव सीताराम सिंह के धन्यवाद-ज्ञापन के बाद संगोष्ठी का समापन हुआ।

'भारत-पाक सम्बन्धों के सुधार में साहित्यकारों की भूमिका' विषय पर पटना में परिसंवाद

प्रस्तुतिः डॉ शिवनारायण

भारत और पाकिस्तान के लगातार बिगड़ते सम्बन्धों के सुधार में आज के साहित्यकारों की क्या भूमिका हो सकती है-इसकी पड़ताल में **राष्ट्रीय विचार मंच,** पटना के तत्वावधान में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। यह संगोष्ठी 23 जुलाई की शाम **जियालाल आर्य** के निवास पर उन्हीं की अध्यक्षता में हुई, जिसका संचालन **सिद्धेश्वर** ने किया।

संगोष्ठी के आरम्भ में विषय -प्रवर्तन करते हुए **'नई धारा'** के सौजन्य संपादक **डॉ० शिवनारायण** ने कहा कि आगरा शिखर वार्ता की विफलता ने जहाँ एक बार फिर से भारत-पाक सम्बन्धों के बीच की गहरी खाई को रेखांकित किया, वहीं पाकिस्तान के नकारात्मक अड़ियल रवैये को उजागर करते हुए स्पष्ट कर दिया कि मौजूदा परिवेश में केवल राजनय स्तर पर ही इसका हल नहीं हो सकता। दोनों देश आतंकवाद बनाम कश्मीर के मुद्दे में उलझ गया है।

संगोष्ठी में आलेख पाठ करते हुए **'विचार दृष्टि'** के संपादक **सिद्धेश्वर** ने कहा कि कश्मीर एक गंभीर समस्या है, जिसका हल आसान नहीं है, खासकर तब जबकि केन्द्र में दर्जनाधिक राजनीतिक दलों की भाजपानीत साझा सरकार है। सच तो यह है कि लगभग पाँच दशक के इतिहास में पहली बार वार्ता जमीनी धरातल पर हुई और इस वार्ता ने कई ऐसे नतीजे दिए, जो दीर्घकाल में राजनय की दिशा तय करेंगे। अब ज्ञान-विज्ञान का युग आ गया है, जिसमें प्रबुद्धजन एवं साहित्यकार ही समाज को नैतिक और राजनीतिक दिशा प्रदान करेंगे। इसलिए ऐसे समय में जबकि भारत-पाक सम्बन्धों में कड़वाहट है, साहित्यकारों का ध्यान उस ओर जाना चाहिए। संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में अपने विचार व्यक्त करते हुए समालोचक **डॉ० शिववंश पांडेय** ने कहा कि दोनों देशों के रिश्तों में सुधार के लिए दोनों देशों की रचनाओं के आदान-प्रदान के साथ-साथ साहित्यकारों के शिष्टमंडल को भी आना-जाना चाहिए।

संगोष्ठी में **डॉ० कलानाथ मिश्र** ने कहा कि साहित्यकारों को चाहिए कि तमाम गिला-शिकवा को दरकिनार कर राष्ट्रहित में अपने लेखन से दोनों देशों के सम्बन्धों में सुधार लाने में मदद करें। **डॉ० राधाकृष्ण सिंह** ने कहा कि भारत को पाकिस्तान के सैनिक प्रशासक से कोई बात ही नहीं करनी चाहिए थी, क्योंकि इससे एक महान लोकतांत्रिक देश भारत द्वारा लोकतंत्र का गला घोटने वाले जनरल मुशर्रफ को मान्यता देने से गलत परम्परा की नींव पड़ी है और जिससे भविष्य में अनेक व्यवधान उपस्थित होंगे।

इस अवसर पर **श्री राम उपदेश सिंह 'विदेह'** ने बहस को आगे बढ़ाते हुए कहा कि साहित्यकार अपनी लेखनी से दोनों सम्प्रदायों के रिश्ते को अटूट एवं बेहतर बनाकर भारत-पाक रिश्तों में सुधार ला सकता है। प्रख्यात पुस्तकालयविज्ञानी एवं साहित्यकार **डॉ० रामशोभित प्रसाद सिंह** की मान्यता थी कि साहित्यिक एवं सांस्कृतिक आदान-प्रदान से दोनों देशों के बीच की कड़वाहट को कम की जा सकती है।

चर्चित गीति-कवि **श्री सत्यनारायण** ने जोर देकर कहा कि शासक-वर्ग ने कभी किसी वार्ता में साहित्यकारों के किसी प्रतिनिधि को विमर्श के लिए आमंत्रित नहीं किया,जैसा कि पत्रकार या अन्य वर्ग के प्रतिनिधि को बुलाकर करता रहा है, ऐसे में साहित्यकार की भूमिका किसी रफूगिरी की नहीं हो सकती। रिश्तों में दरार राजनीतिकों के कारण पड़ते हैं, तो उसका हल भी उन्हें ही निकालना चाहिए। साहित्य की रचना रफूगिरी के लिए नहीं होती। रचना की एक पृथक् मानसिक पृष्ठभूमि होती है और उसमें देशहित की भावना स्वतः समाहित रहती है। उन्होंने डॉ० शिवनारायण के दृष्टिकोण का पुरजोर समर्थन करते हुए कहा कि भारत-पाक सम्बन्धों की वर्तमान स्थितियों में साहित्यकार की भूमिका गौण है।

संगोष्ठी में अन्य वक्ताओं में सर्वश्री अशोक कुमार सिन्हा, प्रो०अरुण कुमार प्रसाद सिन्हा, बी०एन०विश्वकर्मा, जगतबन्धु, रवि घोष, सुदामा पांडेय, अजय सिन्हा, राजकुमार प्रेमी, बलभद्र कल्याण आदि ने भी बहस में भाग लेते हुए अपने-अपने विचार रखे।

आखिर में, अध्यक्षीय संभाषण करते हुए कवि-साहित्यकार एवं प्रशासक **श्री जियालाल आर्य** ने भारत-पाक रिश्तों के बेहतर बनाने में साहित्यकारों की भूमिका को कारगर मानते हुए कहा कि किसी देश के साहित्यकारों की भूमिका व्यापक होती है और उसे किसी परिधि में सीमित नहीं की जा सकती। उन्होंने इस सुझाव पर सहमति जताई कि भारत के प्रधानमंत्री को चाहिए कि किसी भी वार्ता में, विशेषकर भारत-पाक रिश्तों को सुधारने की दिशा में जब भी कोई शिखर वार्ता हो, तो उसमें अन्य वर्ग के प्रतिनिधियों के साथ-साथ साहित्यकारों के प्रतिनिधि को भी विमर्श के लिए आमंत्रित करें। साहित्यकारों की उपेक्षा से जटिल समस्याओं के रचनात्मक हल नहीं निकल सकते। इस अवसर पर श्री आर्य ने भारत पाक रिश्तों पर लिखी एक कविता का पाठ भी किया।

लगभग तीन घंटे तक चली इस विचारोत्तेजक संगोष्ठी का आरम्भ जहाँ भूवैज्ञानिक एवं कवि **डॉ०मेहता नगेन्द्र सिंह** के स्वागत भाषण से हुआ, वहीं इसका समापन व्यंग्यकार-लेखक **बाँके बिहारी साव** के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

सम्पर्क: 1/सी, अशोक नगर
पटना-800020

अहमदाबाद में मंच की गुजरात इकाई गठित

विचार कार्यालय, अहमदाबाद

विगत 19 सितम्बर, 2001 को संध्या 6.30 बजे अहमदाबाद के विद्वतजनों की एक बैठक **राष्ट्रीय विचार मंच** के महासचिव **सिद्धेश्वर** की विशेष उपस्थिति में वहाँ के नवरंगपुरा स्थित सुन्दरम फ्लैट सं० सी-5 में हुई जिसकी अध्यक्षता सुप्रसिद्ध साहित्यकार तथा **'हाइकु भारती'** के सम्पादक **डॉ० भगवतशरण अग्रवाल** ने की। प्रारम्भ में **विचार दृष्टि** के परामर्शी श्री गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव ने उपस्थित विद्वतजनों का स्वागत करते हुए **मंच** के कार्यकलापों तथा **विचार दृष्टि** के बढ़ते कदम की भूरि-भूरि प्रशंसा की। **'विचार दृष्टि'** के सम्पादक **सिद्धेश्वर** ने बैठक की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करते हुए कहा कि आज देशवासियों में निरन्तर राष्ट्रीयता की भावना का ह्रास होते जा रहा है क्योंकि देश में आज कई ऐसे वर्ग हैं जो अपनी-अपनी काली करतूतों से समाज व देश को दूषित कर रहे हैं, देश के कर्णधार लोग मार्ग से भटक रहे हैं तथा अपने पवित्र पेशे के साथ विश्वासघात कर रहे हैं। ऐसे समय में प्रबुद्ध तथा समाज के जागरूक लोग ही हैं जो उनकी काली करतूतों का भंडाफोड़ कर सकते हैं तथा आम जनमानस को कुरेदकर उन्हें नई दिशा प्रदान कर सकते हैं। कुछ इसी भाव से प्रेरित होकर **राष्ट्रीय विचार मंच** तथा **विचार दृष्टि** त्रैमासिकी ने अपना कदम बढ़ाया है तथा संवेदनशील लोगों की तलाश के लिए अपना अभियान राष्ट्रीय स्तर पर चलाया है ताकि वे जनचेतना जागृत कर सकें। **सिद्धेश्वर** ने इसी ख्याल से प्रबुद्ध जनों को आह्वान किया कि गुजरात राज्य में भी मंच की एक इकाई का वे गठन करें तथा उसके मंच द्वारा चलाए जा रहे आन्दोलन का एक हिस्सा बनें।

इस आह्वान पर अध्यक्ष डॉ० भगवतशरण अग्रवाल सहित वीरेन्द्र सिंह ठाकुर, रामफेर सिंह, रूपेश भाई तंती, सचीन राज जैन तथा मगन भाई तंती आदि ने अपने उद्‌गार में मंच के इस पावन उद्येश्यों को कार्यान्वित करने हेतु उसकी अहमदाबाद में एक इकाई गठित करने की आवश्यकता बताई।

तदुपरांत **राष्ट्रीय विचार मंच** की गुजरात इकाई का गठन हुआ जिसकी कार्यकारिणी के निम्नलिखित पदाधिकारी तथा सदस्य निर्वाचित हुए:-

संरक्षक: श्री गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव अध्यक्ष: डॉ० भगवतशरण अग्रवाल, उपाध्यक्ष: श्री संतोष कुमार खरे (वडोदरा) सचिव: श्री वीरेन्द्र सिंह ठाकुर, संयुक्त सचिव: श्री सचीन राज जैन, सदस्य: रूपेश भाई तंती, मगन भाई तंती (राजकोट) श्री सन्मुख हबीव, के०के० दूबे तथा श्री ए०के० पाण्डेय। इस कार्यकारिणी को यह भी अधिकृत किया गया कि आवश्यकतानुसार वह और सदस्यों को मनोनीत कर ले।

विचार दृष्टि के ब्यूरो प्रमुख, गुजरात के चयन का दायित्व सचिव श्री ठाकुर को दिया गया।

श्री सचीन ने अतिथियों के अतिरिक्त आतिथेय श्रीमती नीरजा श्रीवास्तव के प्रति आभार व्यक्त किया।

संपर्क: वीरेन्द्र सिंह ठाकुर, सचिव, राष्ट्रीय विचार मंच, गुजरात, ए-3, किल्लोल पार्क, राजेन्द्र पार्क रोड, ओढव, अहमदाबाद-382415

सरदार पटेल न होते तो मराठवाड़ा कश्मीर होता -मालखरे

विचार कार्यालय, अहमदाबाद

भारत आजाद होने के बाद भी मराठवाड़ा की जनता को आजादी के लिए ज्यादा इंतजार करना पड़ा। हैदराबाद के निजाम ने आत्मसमर्पण करने के बाद हैदराबाद में आयोजित कार्यकर्ताओं, आन्दोलनकारियों की एक बैठक को लौह पुरुष सरदार पटेल संबोधित कर रहे थे और बाजू में मराठबाड़ा की जनता पर जुलम ढानेवाला निजाम हाथ बाँधे विवश होकर खड़ा था, प्रसंग को देखकर रोम-रोम खुशियों से झुम उठता था। ये उद्‌गार हैं मराठवाड़ा मुक्ति-संग्राम के जूझारू सेनानी **नरहरराव मालखरे** का, जिसे उन्होंने आजादी का जश्न मनाते वक्त व्यक्त किए। उन्होंने पुन: कहा कि जब मराठवाड़ा हैदराबाद निजाम से मुक्त हुआ उस समय नेहरू विदेशों में थे। हैदराबाद का निजाम हैदराबाद रियासत को स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप में संयुक्त राष्टसंघ की सदस्यता लेने जाने वाला था, लेकिन सरदार पटेल ने तुरन्त निर्णय लेकर हैदराबाद रियासत पर पुलिस कार्रवाई पर दी। यदि हैदराबाद का मसला सरदार पटेल के अलावा अन्य किसी नेता के हाथ में होता तो मराठवाड़ा में आज कश्मीर जैसे हालात होते किन्तु सरदार पटेल की दूरदर्शिता और सूझबूझ से हम निजाम की गुलामी से आजाद हो गए हैं।

तिरूवनंतपुरम में मंच की नई कार्यकारिणी का गठन

विचार कार्यालय, तिरूवनंतपुरम

विगत 3 सितम्बर, 2001 को केरल की राजधानी तिरूवनंतपुरम के **केरल हिन्दी साहित्य अकादमी** भवन में सुपरिचित हिन्दी सेवी डॉ० एन० चन्द्रशेखरन नायर की अध्यक्षता में आयोजित राष्ट्रीय विचार मंच की एक बैठक में उसकी तदर्थ समिति के स्थान पर केरल इकाई की कार्यकारिणी का गठन हुआ जिसके निम्नलिखित पदाधिकारी एवं सदस्य चुने गए:- अध्यक्ष: डॉ० एन० चन्द्रशेखरन नायर, उपाध्यक्ष: प्रो० कृष्णकुट्टि, सचिव: डॉ० सुरेश, कोषाध्यक्ष: डॉ० रति सक्सेना, सदस्य: श्रीमती विजय लक्ष्मी, श्री कृष्णन, श्री सामराज। कार्यकारिणी को अधिकृत किया कि वह विभिन्न क्षेत्रों के संवेदनशील विद्वत्जनों को आवश्यक्तानुसार मनोनीत कर ले। मलयालम तथा हिन्दी भाषा पर अच्छी पकड़ रखनेवाली डॉ० रति सक्सेना को **विचार दृष्टि** पत्रिका का केरल के लिए ब्यूरो प्रमुख नियुक्त किया गया तथा उन्हें यह अधिकार दिया गया कि वे केरल के विभिन्न जिले के लिए संवाददाता का मनोनयन कर लें।

इस बैठक में विशेष रूप से उपस्थित मंच के राष्ट्रीय महासचिव तथा **विचार दृष्टि** के सम्पादक **सिद्धेश्वर** ने समकालीन परिवेश में वैचारिक जागृति की आवश्यकता पर बल देते हुए राष्ट्रीय चेतना जगाने के महत्व को स्पष्ट किया।। अपने अध्यक्षीय भाषण में डॉ० नायर ने वैचारिक जागृति के साथ-साथ व्यवहार व कार्यकलापों को अमली जामा पहराने की आवश्यकता जताई। तमिल व हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान डॉ० एन० शेषन ने इस कार्य के लिए युवाशक्ति में जागरण भरने तथा कृत संकल्प होने का सुझाव दिया। यूनीवर्सिटी प्रोफेसर डॉ० सुरेश ने डॉ० शेषन के विचारों का पूर्ण समर्थन करते हुए मंच तथा **विचार दृष्टि** के माध्यम से जन चेतना जागृत करने की बात कही। इस अवसर प विशेष रूप से आमंत्रित गाँधीवादी चितंक डॉ० सत्येन्द्र चतुर्वेदी ने वैचारिक शुद्धता पर जोर देते हुए मनोवृति परिवर्तन की आवश्यकता बतायी। इसी प्रकार प्रो० कृष्णकुट्टि ने राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार की आवश्यकता पर बल दिया। श्री सामराज, श्रीमती विजय लक्ष्मी तथा प्रो० राज चतुर्वेदी ने कार्यकारी भाषा प्रणाली में होनेवाली समस्याओं पर प्रकाश डाला। अन्त में डॉ० रति सक्सेना द्वारा मंच के विचारों पर सुदृष्टि डालने की प्रतिज्ञा के साथ उपस्थित विद्वतजनों के प्रति आभार व्यक्त किया गया।

प्रस्तुतिः डॉ० रति सक्सेना,
तिरूवनंतपुरम

शुभकामनाओं के साथ

कार्यालय

दी पीपुंल्स को-आपरेटिव हाउस कन्सट्रक्शन सोसायटी लि०, कंकड़बाग, पटना-20

समिति में निम्न आय वर्ग के कुल 1730 सदस्य हैं जिसमें 1600 सदस्यों को लोहियानगर, कंकड़बाग में स्थित विभिन्न सेक्टरों में भूंखड आवंटित है तथा शेष को जगनपुरा में भूखंड आवंटित है।

समिति के द्वारा प्रत्येक सदस्य से अभियान चलाकर नौमिनी फार्म भरवाया जा रहा था, परन्तु बहुत से सदस्यों के द्वारा अभी भी नौमिनी फार्म नहीं भरा जा सका है। अतः वैसे सदस्यों से अनुरोध है कि अपना नौमिनी फार्म समिति कार्यालय से प्राप्त कर शीघ्र भरकर जमा कर दें।

समिति अपने सदस्यों के पुत्र-पुत्री, पौत्र-पौत्री, भाई-बहन एवं स्वयं के विवाहोत्सव एवं सम्बन्धित प्रयोजनों के लिये आधे दर पर सामुदायिक भवन प्राथमिकता के आधार पर उपलब्ध करती है।

समिति के सदस्यों की सुविधा के लिये स्ट्रीट लाईट, सड़क मरम्मत, पार्क निर्माण एवं मेनहौल सफाई आदि विकास कार्यों को भी निर्धारित नियमानुसार सम्पन्न किया जाता है।

एल०पी०के० राजगृहार
अध्यक्ष

मिथिला शरण सिन्हा
उपाध्यक्ष

प्रो० एम०पी० सिन्हा
अवैतनिक सचिव

ग़ज़ल

❑ गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव

युद्ध तो जारी रहेगा अमन की बातें करो
बूटा बूटा जल न जाए चमन की बातें करो।

नफरतों ने आदमी को है बनाया जानवर
मिट रही संवेदनाएं सुखन की बातें करो।

लोग सड़कों पर निकल कर बदबयानी कर रहे
वक्त का अंदाज़ समझो वज़न की बातें करो।

एक मालिक ने बनाया बरहमन और शेख को
मजहबी उन्माद छोड़ो मिलन की बातें करो।

ढो रही हौवा की बेटी आज भी जिल्लत सदा
पांव से घुंघरू उतारो लगन की बातें करो।

खून से रंगे हुये हैं हाथ उनके किस कदर
हो रही वीरान बस्ती सृजन की बातें करो।

सम्पर्क: सदस्य (प्रशा०), कैट, अहमदाबाद बेंच, अहमदाबाद

हे लौहपुरुष, हे नरपुंगव!

❑ डॉ०राम सिया सिंह पटेल

बेबस मजदूर किसानों का, पहचाना तुमने ही क्रन्दन।
हे लौहपुरुष, हे नरपुंगव,शत बार तुम्हारा अभिनन्दन।।
तुमने ही ब्रिटिश हुकूमत से, संघर्ष किया, बलिदान दिया
निर्माण अखण्ड राष्ट्र भारत का अद्भुत स्वर्णिम काम किया
कर सके नहीं जो चन्द्रगुप्त, जो काम अशोक न कर पाये
अकबर भी न कर पाये, वह काम तुम्ही कर दिखलाये
नरश्रेष्ठ, कृतज्ञ राष्ट्र सारा, करता है तुम्हे नमन, वन्दन
हे लौहपुरुष, हे नरपुंगव, शत बार तुम्हारा अभिनन्दन
भारत माता के अमर लाल, बापू के वीर सिपाही तुम
शोषित पीड़ित मानवता के, हे उद्धारक हमराही तुम
टुकड़े-टुकड़े में बँटे हुए, रजवाड़ों को तुमने है जोड़ा
काँटों पर ही चलना सीखा, ऐश्वर्य-साधनों को छोड़ा
ईमान सादगी की प्रतिमा, दे दिये राष्ट्र को तन-मन-धन
हे लौहपुरुष, हे नरपुंगव, शत बार तुम्हारा अभिनन्दन।।

सम्पर्क: चाणक्यपुरी गली नं०-1,कैम्प रोड,
सतना,म०प्र०-485001

हिल-मिल रहते तो अच्छा था

❑ पी० के० सिंह 'विनय'

यूँ कौन हूँ मैं जो किसी को कहूँ
कोई झूठा था या सच्चा था
इतनी दरारें ठीक, नहीं, हाँ
हिल-मिल रहते तो अच्छा था
इंसान रहा, इंसान कहाँ
खंडित वह टुकड़े-टुकड़ों में
जब नजर पड़ी उसे दर्पण पर
वह देख कर हक्का बक्का था
तीतर जो लड़ाते रहते, उन्हें
मालूम है, आहत होगा कोई
पर खेल वे यह, क्यूँ कर छोड़ें
हित जिसमें उनका पक्का था
ईश्वर-अल्ला, नानक या ईशु
नहीं कहे कभी, कर दंगे
फिर जाति-धर्म के झगड़ों में
डूबा क्यूँ चप्पा-चप्पा था
कितने अच्छे नन्हें-मुन्ने
जो भेद-भाव कुछ न जाने
अब उम्र बढ़ी तो लगता है
अच्छा था वही, जो बच्चा था

संपर्क: यूको बैंक, महालेखाकार
भवन, पटना-1

गीत

❑ चन्द्रसेन 'विराट'

अब सुबह की घुटन दोपहर
और उदासी शाम की
कई दिनों से यही दशा है
क्या मर्जी है राम की
सिर्फ औपचारिकता भर है
रस ही कहाँ रहा रिश्तों में
एक उम्र जीने की खातिर
रह रहकर मरना रिश्तों में
यह कितना तीखा, मजाक, जिन्दगी
बराये नाम की
कई दिनों से यही दशा है क्या
मर्जी है राम की
तन के सुख की स्पर्धाओं में
मन जैसे बीमार पड़ा हो
आमुख के परदे ही जैसे
लिखना उपसंहार पड़ा हो
यह कैसे प्रारंभ की चर्चा होती
पूर्णविराम, कई दिनों से यही दशा है क्या मर्जी है राम की
चिंता वह तेजाब कि जिसमें
यह अस्तित्व घुला जाता है।
पढ़ना हमें समर्पण लेकिन
अंतिम पृष्ठ खुला जाता है
यह कैसा स्वागत है जिसमें ध्वनि
आखिरी प्रणाम की
रहा दिनों से यही दशा है
क्या मर्जी है राम की।

संपर्क: 121, वैकुंठ धाम कॉलोनी, इन्दौर (म०प्र०)

राष्ट्र की धरोहर

❑ डॉ० मधु धवन

दो अक्टूबर को हुए उत्पन्न धरती के दो लाल
सूरज-चाँद-सितारे करते जिनका गुणगान
एक लाल है भारत का
मोहनदास कर्मचन्द गाँधी
दूजा गूदड़ी का लाल
था लाल बहादुर शास्त्री
उनकी निष्ठा से सुरभित धरा-गगन नित हरपल
सूरज-चाँद-सितारे करते जिनका गुणगान।
सत्य-अहिंसा और धर्म का
दोनों ने गुण गाया
कर्मयोग का पाठ पढ़ाते
गीता को गले लगाया!
अमन-चैन हित उनके जीवन-सुमन समर्पित
सूरज-चाँच-सितारे करते जिनका गुणगान
आँधी-तूफान में भी
रूकना कभी न सीखा
दुष्ट-दलों के समक्ष
झुकना कभी न सीखा
उनके राष्ट्र-प्रेम-ऋण को कभी चुका न पाया
सूरज-चाँद-सितारे जिनका करते गुणगान।
मानवता के पूजारी दोनों
एक अहिंसा का था दूत
दूजा किसानों-जवानों का
प्रेरणा-प्रेम-स्तम्भ
अमर रहेगा युग युगों तक ऐसे अनमोल रत्न
जिनको सूरज-चाँद-सितारे करते दिन-रात नमन।

सम्पर्क: के०-3, अन्नानगर(ईस्ट),चेन्नई

गीत

❑ जगदीश श्रीवास्तव

माटी में जन्म लिया जिसने
वह माटी में मिल जायेगा
यह सूर कबीरा की धरती
मीरा ने अलख जगाई थी
चिनगारी जो बनकर आई
वो रानी लक्ष्मीबाई थी
जो झूल गए थे फांसी पर
आजादी के परवाने थे
भारत माता थी एक मगर
लाखों उसके दीवाने थे
यह खून सिमटकर फूलों सा
चट्टानों पर खिल जायेगा
वो झुके नहीं हंसते-हंसते
कितने ही कोड़े खाये थे
हो गई जुबाने बन्द मगर
वो इन्कलाब चिल्लाए थे
जब एक तिरंगे की खातिर कितनों ने जान गवाई थी
ज़ंजीरें टूटी थी उस दिन
ऐसी आजादी आई थी
गूंजेगा नाम हवाओं में
वो मूरत बन ढल जायेगा
माटी तो धन्य हुई जिसनें
जौहर में जलना सिखा है
सर ऊँचा कर अंगारों पर
हंस-हंस कर चलना सिखा है
जो मिला धूल में है लेकिन
वो ज्योति पुंज बन जाता है
जो हुआ देश पर न्यौछावर
वो ही शहीद कहलाता है
जिस दिन हम एक हुए उस दिन
यह बुरा वक्त टल जायेगा
माटी में जनम लिया जिसने
वो माटी में मिल जायेगा

सम्पर्क: गुप्तेश्वर मंदिर
बिदिशा (म०प्र०)

बापू के जन्म दिवस पर

रामधुन के रचयिता को

❑ वीणा जैन

शस्य-श्यामला धरती है
रक्त रंजित-
आसमान में उड़ रहे
गिद्ध, कॉवे निरापद-
त्राहिमाम-त्राहिमाम स्वर करुण उभरे
कोई ना, पीर पराई जाने रे-
फिर, शांति इत को जन्म दे, जननी जन्म दे जननी।
सत्य, प्रेम और अहिंसा जैसे-
शब्द हुए पुरातन
धर्म हुआ पाखंड
विश्वास, खंड-खंड
जन-गण-मन अधिनायक, क्या.
नायक हुऐ खलनायक
फिर अहिंसा के पुजारी को जन्म दे जननी,जन्म दे जननी
बंदेमातरम्,-
बंदे मातरम्-
वो, देशप्रेम के नगमें खमिश हैं, आज
उजाले, तिल-तिल कर मर रहे-
इस तमिस्रज वक्त में
तमसो माँ ज्योतिर्गमय-
फिर, ज्योति-पुरुष को जन्म दे जननी, जन्म दे जननी
'रघुपति राघव राजा राम:
वतन की साँस-साँस में राम नाम
फिर,क्यों नहीं सुनता,कोई-
पीड़ित मानवता का हाहाकार
'हे राम' का,
सच समझाने,
फिर,राम धुन के रचयिता को जन्म दे जननी,जन्म दे जननी।
फिर, गाँधी को जन्म दे जननी,जन्म दे जननी।

सर्म्पक- 548. आशिर्वाद,
9 काप 3rd फ्लोर
बैंगलोर-78, कर्नाटक

क्रान्तिकारी सुभाषचन्द्र बोस

❑ गौरीमोहन गुप्ते

जीवन के विस्तृत सागर में
कुछ लहरें आती जाती हैं
धूल रेत तो ये बहाती हैं
पर कतिपय नाम मिटा न पाती हैं।
ऐसे सज्जनों की सूची में
एक नाम ऐसा भी है
जो हमारे इतिहास की पुस्तक में
स्वर्णिम पन्ना कहलाता है।
'दिल्ली चलो' के नारे ने
इस अम्बर को झकझोरा था
आजाद-हिन्द फौज के नायक ने ही
यह साहस बटोरा था।
इस बुद्धिमान मनीषी ने
भारत के भविष्य को करने निर्मित
राष्ट्र-भक्ति की बलि-वेदी पर
मुसकाते हुए बलिदान दिया था।
देश-विदेश का भ्रमण करके
हिटलर-मुसोलनी से मिल के
स्वतंत्रता की ज्योति का
महत्व समझाया था।
इस ज्योति की लौ ऐसी
सपनों के लघु-दीप है जैसी
दे गई उजाला लाखों को
आजादी के मतवालों को।
जीवन सागर की विस्तृत लहरें
रेत, धूल, मिट्टी के कण को
ढहा गई हैं, बहा गई हैं
कुछ सीपों और सीपियों को
किन्तु कुछ मोती ऐसे भी
अमर हस्ताक्षर जैसे ही
सागर की खारी लहरों से
चमक उठे हैं और अधिक
उनकी वह अद्‌भुद दीप्ति
अब भी चमकती और चमकती है
हम सबके लाखों स्वजनों को
जीने की राह दिखाती है।
कुछ ऐसे ही सीपों की
रेत पर लिखे नामों की
और उनके जीवन मार्गों की
जय हो! जय हो! जय हो!

सम्पर्क:-स्टेला मारिस कॉलेज
7, वेदविनायगार गली,
गाँधी नगर, आवडि,
चेन्नै-600054

राष्ट्रपिता गांधी:महात्मा क्यों ?

❑ कृष्ण कुमार विद्यार्थी

आज के भोक्ता प्रधान युग में हमारा आदर्श तथा हमारी सम्पूर्ण जीवन प्रणाली मौलिक साधनों के अर्जन तथा सत्ता के गलियारों में विचरण तक ही सीमित हो गई है। दुर्भाग्य की बात तो यह है कि आनात्म और आत्म तत्वों के दर्शन को प्रचारित-प्रसारित करने में हजारों वर्षों से संलग्न भारत भी इस काल-प्रवाह से अछूता नहीं रहा। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व की एक पूरी शताब्दि जिन जाज्वल्यमान महापुरुषों के अवतरण से धन्य हुई उसकी अन्तिम कड़ी थे **महात्मा गांधी**। रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द, दयानन्द सरस्वती, तिलक, गोखले, अरविंद घोष और महात्मा गांधी से विभूषित हमारे देश की आकाश- गंगा का कालजयी प्रकाश आज जिन गर्हित तथा राजनैतिक काले मेघों से ढंकता जा रहा है, वह एक ऐतिहासिक दुर्भाग्य ही कहा जा सकता है। इन सारी विभूतियों में जिस एक विभूति ने आदर्श और आचरण को एक धरातल पर खड़ा किया, अहिंसा और सत्याग्रह को जिस प्रकार स्वतंत्रता-संग्राम का विशुद्ध साधन बनाया और अन्तत: भारत मां की बेड़ियों को काटने में सफलता प्राप्त की वह पूरे विश्व- इतिहास में एक अभूतपूर्व विलक्षण घटना हुई है।

एक महात्मा एक देश का नहीं होता, एक युग का नहीं होता; वह तो समस्त मानव जाति के लिए अपने आदर्श और अपने आचरण, अपनी सिद्धि तथा अपने साधन लेकर आता है। **सर्वे भवन्ति सुखिन:** उसका परम आदर्श होता है। यह कोई आकस्मिक घटना नहीं है कि अपने देश में 1915 से स्वतंत्रता-संग्राम का नेतृत्व करनेवाला नरपुंगव उससे पूर्व बीस वर्षों तक सुदूर दक्षिण अफ्रीका में मानव की अस्मिता तथा आत्मसम्मान को जागृत करने में प्राणपण से संलग्न था। यह सचमुच में अपने-आप में एक अविश्वसनीय बात लगती है कि एक साधारण-सा वकील किसी दूसरे देश में एक मुकदमें के सम्बन्ध में जाता है और वहां हो रहे अत्याचार और अनाचार को देखकर वह अपने-पराये सबको भूलकर एक लम्बे दो दशकीय सामाजिक तथा राजनैतिक संघर्ष में कूद पड़ता है। इतना ही नहीं, वह वहां के द्वितीय श्रेणी के नागरिकों की अस्मिता और आत्मबल को स्थापित करके ही स्वदेश लौटता है। ऐसा काम एक सर्वथा स्वार्थहीन तथा शुद्ध आध्यात्मनिष्ठ व्यक्ति ही कर सकता है।

स्वदेश लौटने के कुछ समय के भीतर ही गांधी को एक स्वर से 'महात्मा' का सम्बोधन स्वत: मिल गया। स्वतंत्रता-संग्राम से जुड़ने के पहले ही 1915 में आयोजित कठियाबाड़ की एक स्वागत-सभा में उन्हें 'महात्मा' कहकर सम्बोधित किया गया।

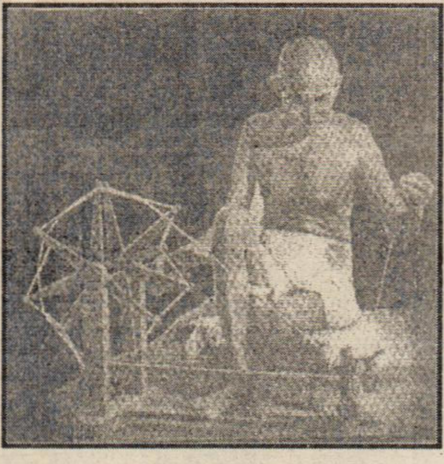

फरवरी 1915 में ही अपने एक पत्र में विश्व-कवि रवीन्द्र ने भी गांधी को महात्मा कहकर सम्बोधित किया और 1916 में गांधीजी से पहली बार मिलने पर जवाहरलाल ने भी उन्हें 'महात्मा' कहकर ही सम्बोधित किया।

1923 में ही विश्व विख्यात दार्शनिक एवं साहित्यकार **रोम्यां रोलां** ने गांधी को विश्व के महानतम् व्यक्ति की उपाधि दी और कालान्तर में **फिशर** जैसा उद्भट पत्रकार और लेखक, **जार्ज बर्नड शा** जैसा प्रबुद्ध साहित्यकार, **मार्टिन लूथर किंग** जैसा आदर्श जननायक, आइन्सटाइन जैसा कालजयी वैज्ञानिक, सबने इनकी महानता तथा इनके भूतपूर्व सत्यान्वेषण की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

गांधी में एक प्रथम कोटि के स्वतंत्रता सेनानी होने के सारे गुणों के साथ जो अतिरिक्त विशिष्ट बातें थीं वह था उनका अखंड आध्यात्मिक जीवन-दर्शन; अहिंसा, सत्याग्रह पर अटूट निष्ठा और अभय, सेवा, प्रेम तथा क्षमाशीलता की सुदृढ़ मीनारों पर बना इनका दैनन्दिन जीवन कार्यकलाप। विवेचन का विषय यह है कि गांधी के जीवन-दर्शन, संघर्ष प्रणाली, आदर्श चरित्र-निर्माण तथा साधन-सिद्धि के अद्भूत प्रयोगों में वे कौन से तत्व थे जिन्होंने उन्हें विश्व-स्तर पर एक महात्मा के उच्चतम् अलंकरण से विभूषित किया!

देश के बाहर तो गांधी केवल एक मुद्दा से ही जूझे थे, पर देश लौटने पर उन्होंने स्वतंत्रता-संग्राम में जूझते देशवासियों को देखा। पहले तो उन्होंने पूरे देश का विशद् दौरा किया और गुलाम, प्रताड़ित, अशिक्षित तथा दिशाहीन देश की जनता से साक्षात्तार किया।

गांधीजी बराबर लगभग एक दशक तक, हिंसात्मक क्रान्ति के कर्णधारों से बातचीत करते रहे। अपने अनायक प्रवास से जहां उन्होंने काका कालेलकर, गोविन्द राव याल्गी, गंगाधर राय, कृपलानी, मामा साहब फड़के, पण्डित सुन्दर लाल सरीखे विरोधी के देश भक्तों को अहिंसक असहयोग आन्दोलन के लिए राजी कर लिया वहीं श्यामजी वर्मा, भाई परमानन्द, विनायक दामोदर सावरकर, भगत सिंह, भगवती चरण, पृथ्वी सिंह आजाद आदि को प्रभावित नहीं कर पाये।

गांधी के चरित्र की दृढ़ता और साधन की पवित्रता पर अटूट आस्था और इसके नैतिक बल का परिणाम यह हुआ कि सारा देश शनै: शनै: गांधी के आन्दोलन-पद्धति से आन्दोलित एवं अनुप्राणित हो गया और स्वतंत्रता-संग्राम ने ऐसा विराट् रूप धारण

कर लिया जिसकी क्रान्तिकारियों ने कभी कल्पना भी नहीं की थी।

देखना है कि ये कौन से तत्व थे जिनसे निर्मित आदर्श में ऐसी अवोध शक्ति थी और वह कौन-सी चारित्रिक विशेषताएं थीं जिन्होंने एक दरिद्र निरक्षर देश को ऐसे लम्बे संघर्ष की प्रेरणा दी और अन्त में उन्हें आजादी की मंजिल तक गांधी के जीवनकाल ही में पहुंचा दिया।

गांधी के इस अभियान का प्रथम विशिष्ट तत्व था गांधी का विशुद्ध आध्यात्मिक दृष्टिकोण। इसके मूलाधार थे एक सशक्त आत्मबल और अडिग निर्भीकता।

अपनी मंजिल, अपने आदर्श की प्राप्ति के लिए स्वतंत्रता-संग्राम के लिए शुद्ध अहिंसा का चुनाव गांधीजी को तीसरी देन कही जा सकती है।

एक और विलक्षण बात जो गांधी ने राजनीति के क्षेत्र में पहली बार स्थापित किया वह है इनका दृढ़ विश्वास कि प्रखर संघर्ष की घड़ी में भी विरोधी पक्ष की मनुष्यता में अपना दृढ़ विश्वास बना रहना चाहिए! गांधी ने प्रशासन या प्रणाली को बुरा भला कहा, पर किसी पर कोई व्यक्तिगत आक्षेप कभी नहीं किया। इनका सिद्धान्त था-पाप से धृणा, पापी से नहीं। राजनीति में इस सिद्धान्त पर खरा उतरनेवाला यह विश्व का प्रथम संत, प्रथम महात्मा था।

सत्य, अहिंसा और अभय की त्रिवेणी पर खड़े गांधी ने बराबर स्वतंत्रता सेनानियों को यही बताया कि वे आजादी के लिए अपना सर्वस्व निछावर करने को तत्पर रहें, अभय होकर अन्याय का विरोध करें, पर चोरों जैसा छिपकर व्यक्ति या शासन पर वार न करें। यह बहुत कम होग समझ पाते हैं कि 'करो या मरो' की चुनौती सत्याग्रह की राह पर मौत को वरण करने का आवाह्न थी, हिंसा पर उतारू होने की ललकार नहीं थी।

महात्मा गांधी के जीवन-दर्शन का एक और महत्तम गुण था मानवता की सेवा। अपने अत्यधिक कर्म-संकुल दिनचर्या में भी अपने आश्रम के कार्य-कलापों, वहां के अनुशासन, आश्रमवासियों की सेवा, कुष्ठ रोगियों तथा अन्य बीमार लोगों के उपचार की व्यवस्था, भंगी कालोनी में लम्बे प्रवास आदि के लिए वे प्रचुर समय निकाल लेते थे। उनके बारे में आजतक यह निश्चिततापूर्वक नहीं कहा जा सकता कि वे एक महान लेखक और पत्रकार थे, एक महान समाज सुधारक थे, प्राकृतिक चिकित्सा के एक महान पोषक थे, एक अप्रतिम राजनीतिक थे, एक महान संत थे व विश्व बंधुत्व के एक महान योद्धा थे। वास्तव नें वे एक महान आत्मा के धनी थे जिनके चिंतन और आचरण की परिधि में समस्त जीवन ही सन्निहित थे।

एक अन्तिम बात का उल्लेख अप्रासंगिक नहीं होगा। इतिहास के अनेक संत और महात्माओं ने कुछ रहस्यमय या छठी शक्ति से विभूषित होने का दावा किया है। पर गाधी ही शायद एक मात्र ऐसे एक महात्मा है जिन्होंने वाल सुलभ सरलता का व्यक्तित्व रखा और हमेश इस बात का विरोध किया कि इनके व्यक्तित्व को किसी भी संदर्भ में पूजा, वन्दना के योग्य समझा जाय। ऐसी निरभिमान धारणा एक सच्चें महात्मा की ही हो सकती है।

अपने जीवन के अन्त में ईसा की तरह अपना सलीब अपने कंधों पर उठाये हुए, सुकरात की तरह विष का प्याला हाथ में लिये, एक अभय देवदूत की तरह गांधी जिस प्रकार बिहार, बंगाल और नोआखाली के आग की लपटों में धूनता रहा, वह एक महामानव ही कर सकता है। सभी स्थितियों में स्वनिर्देशित कर्म में जुटे रहना एक महात्मा का ही मानदण्ड हो सकता है। वे शुद्ध रूप से सुक्ष्म आत्मा के प्रतीक हो गये थे जो चेतना के आदेशों से ही परिचालित था।

शताब्दियों बाद जब इतिहास बड़े-बड़े लेखकों, कवियों, योद्धाओं, राजनीतिज्ञों, वैज्ञानिकों आदि को हाशिये पर डाल चुका होगा, तब भी महात्मा गांधी का सर्वांगीण जीवन- दर्शन और महनीय आचरण अपने शाश्वत सात्विक तत्वों के कारण श्लाघनीय तथा प्रासंगिक बना रहेगा और इनकी गणना, महावीर, बुद्ध, ईसा, मोहम्मद आदि के साथ ही की जायेगी।

सम्पर्क: 124, पाटलिपुत्र कॉलोनी, पटना-13

रचनाकारों से

- √ रचना भेजने के लिए कोई शर्त नहीं है, सभी रचनाकारों का हम हार्दिक स्वागत करते हैं। उदीयमान रचनाकारों को विशेष रूप से प्रोत्साहित किए जाने का प्रयास रहेगा।
- √ रचना एक तरफ टंकित या स्पष्ट लिखी होनी चाहिए। रचना के अन्त में उनके मौलिक, अप्रकाशित तथा अप्रसारित होने के प्रमाण पत्र के साथ अपना पूरा नाम व पता अवश्य लिखें।
- √ रचना के साथ पासपोर्ट/स्टाम्प आकार की स्वेत एवं श्याम तस्वीर की दो प्रतियाँ अवश्य संलग्न करें।
- √ यदि आप अस्वीकृत रचना वापस चाहते हैं तो कृपया अपना पता लिखा, डाक टिकट लगा लिफाफा लगाना न भूलें।
- √ रचना भेजते वक्त यह अवश्य देख लें कि लिफाफा पर आवश्यक डाक टिकट लगें हैं या नहीं।

कार्यकारी सम्पादक : विचार दृष्टि

'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1 (बिहार) / यू०-207, शकरपुर, दिल्ली-92

सरदार पटेल की अंतर्कथा- मणिबेन पटेल की डायरी से

पूरे कश्मीर के हिमायती थे सरदार पटेल

हाल ही में अंग्रेजी में प्रकाशित पुस्तक 'इनसाइड स्टोरी ऑफ सरदार पटेल - द डायरी ऑफ मणिबेन पटेल' का गुजराती में अनुवाद हुआ फिर गुजराती से हिन्दी में अनुवाद गुजरात गजट के पूर्व सम्पादक यू०एम० चौकसी द्वारा किया गया है। ग्रन्थ के सम्पादक हैं डॉ० पी०एन०चोपड़ा एवं डॉ० प्रभा चोपड़ा। इस पुस्तक के कुछ अंश पाठकों के अवलोकनार्थ प्रस्तुत है।

❑डॉ० राम सिया सिंह पटेल

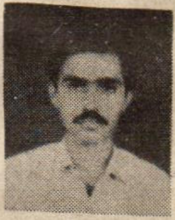

भारत के प्रथम गृहमंत्री तथा उपप्रधान मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल की पुत्री कु० मणिबेन पटेल जीवन भर अपने पिताश्री के साथ छाया की तरह लगकर देश की मूक सेवा में संलग्न रहीं। तत्कालीन राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में सरदार पटेल के अंतरंग क्षणों और मार्मिक अभिव्यक्तियों को उन्होंने हाल ही में प्रकाशित 523 पृष्ठों की डायरी में अंकित किया है। **इनसाइड स्टोरी ऑफ सरदार पटेल– द डायरी ऑफ मणिबेन पटेल'** नामक उनकी डायरी का गुजराती से हिन्दी में अनुवाद **गुजरात गजट** के पूर्व सम्पादक श्री यू० एम० चौकसी द्वारा किया गया है। ग्रन्थ का सम्पादन डॉ० पी० एन० चोपड़ा एवं डॉ० प्रभा चोपड़ा द्वारा किया गया है।

सरदार पटेल की दृढ़ मान्यता थी कि कश्मीर के मामले को संयुक्त राष्ट्र संघ में ले जाने से उसे सुलझाया नहीं जा सकता, अपितु वह भारत के गले की हड्डी बन जायेगा। कश्मीर के विभाजन के भी सरदार पटेल सख्त खिलाफ थे। उन्होंने कश्मीर के विभाजन का दृढ़तापूर्वक विरोध किया था। कश्मीर के एक हिस्से पर पाकिस्तान के नाजायज कब्जे से वे बेहद चिन्तित एक हिस्से पर पाकिस्तान के नाजायज कब्जे से वे बेहद चिन्तित थे। 15 दिसंबर 1950 को सरदार पटेल इस दुनिया से चले गये। उसके कुछ दिनों पूर्व कश्मीर में पाकिस्तानी कब्जे को सैनिक कार्यवाही द्वारा हटाने की अनुमति प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू द्वारा न दिये जाने के कारण देश के सामने आने वाले विषय परिस्थितियों का उन्हें आभास हो गया था और इस बात से उनके दिल में गहरी चोट पहुँची थी।

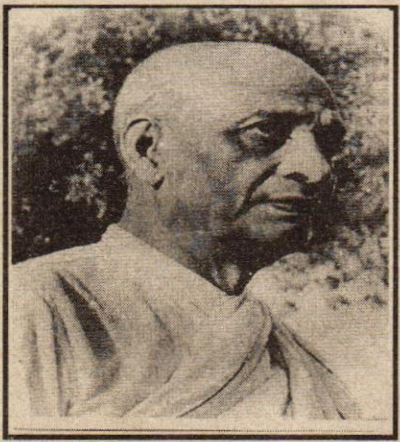

सरदार पटेल ने नवगठित योजना आयोग के सदस्य श्री आर० के० पाटिल से कहा था– जब हम कश्मीर में लड़ना चाहते थे, तब तत्कालीन प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू ने हस्तक्षेप करते हुए कहा कि तुम्हे ऐसा बिलकुल नहीं करना चाहिए, तुम्हे बिलकुल नहीं लड़ना है, गोली नहीं चलाना है, अखिर शेख मोहम्मद अब्दुल्ला क्या सोचेगा।

स्मरणीय है कि प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू कश्मीर मसले को संयुक्त राष्ट्र को सौंपने के पक्षधर थे, जिसका घोर विरोध सरदार पटेल ने किया था। ऐसे ही गंभीर मुद्दों पर दोनों के बीच मतभेद रहता था। श्री जवाहर लाल नेहरू की लचर और अदूरदर्शी नीतियों के कारण सरदार पटेल उक्त समस्या का देशहित में समाधान नहीं कर सके।

भारतीय संघ में देशी रियासतों के विलय के प्रश्न पर सरदार पटेल की नीति हढ़ थी। श्री जवाहरलाल नेहरू के लचर रवैये के बावजूद सरदार पटेल ने सितंबर 1948 में फौज भेजकर हैदराबाद के निजाम से समर्पण करा लिया था। डायरी में उल्लेख है कि गवर्नर जनरल लार्ड माउण्टबेटन श्री नेहरू और सरदार पटेल को लगातार इस बारे में लिख रहे थे और टेलीफोन पर बातचीत भी कर रहे थे। हैदराबाद के निजाम द्वारा संयुक्त राष्ट्र से संपर्क करने का पता चलते ही सरदार पटेल ने हैदराबाद में जल्दी ही फौज न भेजे जाने की दशा में त्यागपत्र देने की भी धमकी दी थी।

सरदार पटेल ने कहा था कि श्री नेहरू ने कश्मीर में जो किया था, वही वह हैदराबाद में दोहराना चाहते थे। उन्होंने कहा– लेकिन मैंने काम पूरा कर दिया। अक्टूबर 1947 में कश्मीर की समस्या इसी तरह सुलझाने के पक्षधर थे। कु० मणिबेन पटेल ने डायरी में कई स्थलों पर लिखा है

कि कश्मीर में घुसपैठियों को निकाल बाहर करने के लिए सरदार पटेल बेहद चिन्तित थे। अक्टूबर 1948 में डायरी में एक टिप्पणी में कु० मणिबेन ने लिखा कि एक कश्मीरी नेता बख्शी गुलाम मोहम्मद ने गृहमंत्री से कश्मीर समस्या का समाधान हैदराबाद की तर्ज पर करने का निवेदन किया था। शेख अब्दुल्ला के बाद बख्शी ही राज्य के मुख्य मंत्री बने। इस पर सरदार पटेल ने उनसे (बख्शी गुलाम मोहम्मद से) पं० नेहरू और शेख अब्दुल्ला से लिखित रूप से यह वादा कराने के कहा था कि वे इस मामले में हस्तक्षेप नहीं करेंगे और न ही सेना के किसी इलाके में प्रवेश में कोई बाधा डालेंगे।

सरदार पटेल को हैदराबाद की तर्ज पर कश्मीर में कार्यवादी करने दिया जाता तो यह समस्या उसी समय सुलझ जाती। यद्यपि देशी रियासतों के विलय सम्बन्धी मामलों के प्रभारी मंत्री और उप प्रधान मत्री सरदार पटेल थे, तथापि कश्मीर मामला नेहरू द्वारा विदेश मंत्रालय को दे दिया गया, जिसे श्री नेहरू स्वयं सँभाले थे। श्री नेहरू ने गृहमंत्री को कुछ दिनों पहले लिखा था कि प्रधानमंत्री के विदेश-प्रवास के समय विदेश मंत्रालय का जिम्मा तत्कालीन विधि मंत्री श्री गोपालस्वामी आयंगर का रहेगा। इस पर क्षुब्ध होकर सरदार पटेल ने त्यागपत्र देने की भी पहल की थी। किन्तु श्री नेहरू ने महात्मा गांधी का हवाला देकर उनसे ऐसा न करने की प्रार्थना की। गांधी जी ने अपनी हत्या के कुछ ही समय पूर्व सरदार पटेल से सरकार में बने रहने को कहा था। डायरी में उल्लिखित है कि सात महीने बाद एक बार फिर बख्शी गुलाम मोहम्मद ने गृहमंत्री से कश्मीर के मामले में हस्तक्षेप करने का आग्रह किया था।

डायरी के अनुसार गवर्नर जनरल माउंटबेटन ने कश्मीर के विभाजन का सुझाव दिया था। किन्तु इस सुझाव को खारिज कर दिया गया।

भारत-पाकिस्तान विभाजन की वार्तो के अनुसार रिजर्व बैंक से पाकिस्तान को 75 करोड़ रुपये दिये गये थे। केन्द्रीय मंत्रिमंडल द्वारा सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि शेष 55 करोड़ रु० कश्मीर मामले को सुलझाने के बाद ही चुकाए जाएँगे। श्री नेहरू ने संसद में घोषणा की थी कि कश्मीर में हम पर युद्ध थोपा गया है; इसलिए हम पाकिस्तान को बाकी रकम नहीं देगें। सरदार पटेल बकाया रकम के भुगतान की एवज में कश्मीर मुद्दे का समाधान चाहते थे। पाकिस्तान ने माउंटबेटन से सम्पर्क किया। इस पर माउंटबेटन ने महात्मा गांधी से नैतिकता का हवाला देते हुए कहा कि पाकिस्तान को पैसा न देना अनैतिक है। माहात्मा गांधी ने इस पर अपना उपवास भी प्रारम्भ कर दिया। डायरी में उल्लिखित है कि सरदार पटेल ने बताया था कि उन्होंने मंत्रिमंडल में पाकिस्तान को 55 करोड़ रुपये मंजूर की बात कही थी, परन्तु बाद में इस पर जोर नहीं दिया।

कु० मणिबेन पटेल की डायरी के पन्ने स्पष्ट रूप से इंगित करते हैं कि जवाहर लाल नेहरू ने सस्ती अन्तर्राष्ट्रीय लोकप्रियता हासिल करने के लिए कश्मीर समस्या संयुक्त राष्ट्रसंघ को सौंपने की हिमालयीन भूल न की होती और सरदार पटेल की नीति के अनुसार कश्मीर मामला सुलझाने में सरदार पटेल को सहयोग दिया होता तो आज आगरा शिखर-वार्ता में इस तरह की असफलता का मुँह न देखना पड़ता और आज पूँजीवादी ताकतें दक्षिण एशियाई देशों को मदारी बनकर बंदर की तरह इस प्रकार नाच न नचाती रहतीं।

सम्पर्क : चाणक्यपुरी गली नं०-1,

कैम्प रोड, सतना,

म०प्र०-485001

महापुरुष की कर्त्तव्यनिष्ठा

❑बच्चन लाल 'बच्चन'

सरदार वल्लभभाई पटेल भारत के अगणित लोगों के बीच एक चिर -परिचित नेता के रूप में जाने जाते हैं। वे भारत के एक श्रेष्ठ राजनीतिक नेता थे। नये भारत के गठन में उनका अपरिमेय योगदान रहा है। उनकी चारित्रिक दृढ़ता असाधारण थी, इसीलिए वे भारत के 'लौह पुरुष' कहे जाते हैं। वे जिस काम में हाथ डालते उसे दृढ़ संकल्प के साथ पूरा करते। बाधा, विपत्ति किसे कहते हैं, वे नहीं जानते थे।

आजादी मिलने के पश्चात एक वर्ष के अन्दर ही देशीय रजवाड़ों के राज्यों की भारतीय गणराज्य में विलय किया था। उनके जीवन का यह श्रेष्ठ कार्य रहा। इसीलिए वे भारतवासियों के बीच हमेशा अमर रहेंगे।

वल्लभभाई गुजरात में एक कृषक परिवार में जन्में थे। बिलायत से बैरिस्टरी पास करने के पश्चात् वे अहमदाबाद कोर्ट में वकालत करने लगे। अल्पकाल में ही उनका नाम चारों तरफ फैल गया।

एक दिन कोर्ट में एक जटिल मामले को लेकर आसामी की तरफ से खड़े थे। वे विपक्ष दल के मुख्य-मुख्य साक्षियों को अपनी जिरह से नेस्तनाबूद करने लगे। कोर्ट लोगों से खचाखच भरा था। सभी चुपचाप उनकी ओजस्वी तर्कपूर्ण बात सुन रहे थे। ठीक उसी समय वल्लभभाई का किरानी उन्हें एक टेलीग्राम दिया। टेलीग्राम खोलकर एक नजर डाल उसे जेब में रख लिया। कोई भी अनुमान नहीं लगा सका कि उस टेलीग्राम में क्या लिखा हुआ है? जिरह पर जिरह अविराम गति से चलता रहा। दो घंटे के बाद कोर्ट का कार्य खत्म हुआ। वल्लभभाई उपस्थित बन्धु गण को दुःख के साथ बतलाया कि टेलीग्राम में उनकी पत्नी का मृत्यु संवाद लिखा हुआ है। इतना कहकर तीव्र गति से कोर्ट के बाहर चले गये।

उपस्थित सभी लोग आष्चर्य से अवाक रह गये। सभी ने स्वीकार किया कि कर्त्तव्य परायणता का अपूर्व दृष्टान्त आजकल बहुत ही कम देखने को मिलता है। इस घटना के बाद वल्लभभाई पटेल का नाम सर्वत्र फैल गया।

सम्पर्क: 12/1, मयूरभंज रोड

कोलकाता-700023

जे०पी०की जन्मशती पर

जे०पी०का वह सपना जो साकार न हो सका

❑ नीतीश कुमार

जे०पी०जन्मशती पर्व 11 अक्टूबर 2001 से प्रारंभ हो रहा है। पूरा साल हम जे०पी० के कृतित्व और व्यक्तित्व पर चर्चा करेंगे। उनकी पीढ़ी के गिने-चुने लोग ही जीवित होंगे लेकिन उनकी जीवन यात्रा के विभिन्न चरणों में उनके नेतृत्व में काम करने वालों की संख्या आज भी बहुत बड़ी है।

एक पूरी नयी पीढ़ी उनके जाने के बाद जवान हो गयी है। लेकिन जे०पी० चिर युवा थे। अपने जीवन काल के हर दौर में उन्होंने युवा वर्ग को आकर्षित और प्रभावित किया था। अंतिम दौर में उन्होंने **संपूर्ण क्रांति** का उद्घोष किया और उनके आह्वान पर बिहार में छात्रों ने एक वर्ष तक कक्षा बहिष्कार कर जे०पी० आंदोलन में भाग लिया।

हालांकि आंदोलन बिहार में शुरू हुआ लेकिन उसका फैलाव जे०पी० के नेतृत्व में पूरे देश में हुआ। जे०पी० जहां भी गये पूरा प्रांत आंदोलित होता गया और अल्प समय में ही एक राष्ट्रीय आंदोलन छिड़ गया।

1971 के युद्ध के तीन साल के अंदर ही सारे देश में तत्कालीन सरकार से आम लोगों का मोह भंग हो गया और युवा वर्ग ने सत्ता के खिलाफ बगावत कर दी। अगर हम उस समय की स्थिति का विश्लेषण करें तो पायेंगे कि परिवर्त्तनकारी आंदोलन के लिये वस्तुगत परिस्थितियां तो विद्यमान थीं लेकिन सार्वदेशिक कौन कहे प्रादेशिक स्तर पर भी उसके लिए उपयुक्त क्रांतिकारी संगठन नहीं था। लेकिन जे०पी० के विशाल व्यक्तित्व और उनकी नैतिक शक्ति ने बिहार में छात्रों की एक पहल को परिवर्त्तनकारी आंदोलन का प्रज्ज्वलित स्वरूप प्रदान कर दिया।

जे०पी० क्या करना चाहते थे और किस प्रकार अपने उद्देश्य को प्राप्त करना चाहते थे इस पर चर्चा बहुत प्रासंगिक है। संपूर्णक्रांति की उनकी अवधारणा क्या थी? दलगत राजनीति को त्यागने

जे०पी० ने 5 जून 1974 को संपूर्ण क्रांति का आह्वान किया। उनका पूरा आग्रह लोकचेतना जागृत कर लोकशक्ति को ठोस स्वरूप प्रदान करने पर था। सरकार के तंत्र पर लोकशक्ति के अंकुश के द्वारा लोकतंत्र को जीवंत बनाना ही उनका उद्देश्य था।

के बाद भूदान आदालन म वषा पूरा समय दन के बाद उन्होंने फिर से राजनीतिक दलों का साथ क्यों लिया?

गुजरात में छात्रों का आंदोलन हुआ और उन्होंने वहां जाकर छात्रों की पीठ थपथपाई और उनका उस समय का वह ऐतिहासिक वक्तव्य मुझे याद है जिसमें उन्होंने कहा था कि गुजरात के नवनिर्माण आंदोलन में उन्हें 1942 की पदचाप सुनाई पड़ रही है। बिहार में छात्रों का आंदोलन कुछ स्थानीय मांगों के अतिरिक्त महंगाई, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, और कुशिक्षा के खिलाफ जब शुरू हुआ तो वे अपने को रोक न सके। उन्होंने नेतृत्व प्रदान करने के लिये शांतिमय और अहिंसात्मक तरीकों से आंदोलन करने की शर्त रखी जिसे छात्रों ने सहर्ष स्वीकार किया। फिर क्या था। एक बड़े आंदोलन का स्वरूप प्रकट होने लगा। लेकिन राजनीतिक दलों को प्रारंभ में सीधे प्रवेश नहीं मिला।

सरकार की दमनकारी नीतियों के विरोध में विधान सभा भंग करने की मांग उठी। इस मुहिम को गति प्रदान करने के लिए आंदोलन की धारा का समर्थन करने वाले विपक्षी दलों के विधायकों पर विधानसभा की सदस्यता से त्यागपत्र देने की मांग जोर पकड़ने लगी। इसी समय अच्छी संख्या में ऐसे विधायकों ने त्याग पत्र दिया और इस प्रकार संबद्ध राजनीतिक दल आंदोलन में प्रत्यक्ष तौर पर शामिल हुये, लेकिन एक अग्निपरीक्षा से गुजरने के पश्चात्! इस तरह छात्रों द्वारा शुरू किया गया अभियान जे०पी० के नेतृत्व में एक जन आंदोलन बन गया।

जे०पी० ने 5 जून 1974 को संपूर्ण क्रांति का आह्वान किया। उनका पूरा आग्रह लोकचेतना जागृत कर लोकशक्ति को ठोस स्वरूप प्रदान करने पर था। सरकार के तंत्र पर लोकशक्ति के अंकुश के द्वारा लोकतंत्र को जीवंत बनाना

ही उनका उद्देश्य था।

जनता सरकारें हर स्तर पर गठित होने लगीं और धीरे-धीरे आंदोलन अपनी जड़ जमाने लगा। उसका विस्तार पूरे देश में होने लगा। केंद सरकार की सबसे शक्तिशाली कुर्सी के नीचे आग सुलगने लगी। इससे बौखलाकर आंदोलन को कुचलने कै लिये इमरजेंसी थोपकर नागरिक आजादी छीन ली गयी।

जे०पी० समेत लाखों लोग जेल में बंद कर दिये गये और प्रारंम्भ हुआ भारत के इतिहास का एक काला दौर- तानाशाही का दौर!

बाद में जब चुनाव की घोषणा हुई तो जे०पी० ने **तानाशाही बनाम लोकतंत्र** का नारा दिया और **लोकतंत्र की बहाली** चुनाव और आंदोलन का सबसे अहम मुद्दा बन गया। जे०पी० के दबाव में चार विपक्षी पार्टियों को मिलाकर जनतापार्टी बनी और वह सत्ता में आयी।

प्रारंभ में जे०पी० को लगा था कि राजशक्ति और लोकशक्ति के समन्वय से देश में परिवर्त्तन होगा लेकिन ऐसा न हुआ। प्रनिनिधि-वापसी का अधिकार जनता को मिले, इसे जे०पी० के आशीर्वाद से बनी सरकार ने सिरे से खारिज कर दिया।

जनतापार्टी में भी विखराव होने लगा। जे०पी० को पूरे घटनाचक्र ने निराश किया। जे०पी० जो करना चाहते थे उसे अपने जीवन काल में मूर्तरूप नहीं प्रदान कर सके। इमरजेंसी के खिलाफ संघर्ष को **दूसरी आजादी** की लड़ाई की संज्ञा तो मिली लेकिन **संपूर्ण क्रांति** का उनका सपना साकार नहीं हो सका।

आज की स्थितियां 1974 से भी बदत्तर हैं। जे०पी० जन्मशती वर्ष में हम उसकी मीमांसा करें, आत्मचिंतन करें और नयी पीढ़ी के साथ नये सिरे से संवाद स्थापित करें, जे०पी० के सपनों को साकार करने की दिशा में आगे बढ़ें, तो शायद उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

(लेखक जेपी आंदोलन के अग्रणी नेता रहे हैं और वर्तमान में केंद्रीय रेलमंत्री हैं।)

जिसने जागरण की ज्योति जगाई

❑ दीप शिखा झा

सरदार वल्लभ भाई पटेल का नाम लेते ही हमारे सामने एक ऐसे व्यक्ति का चित्र आ जाता है जो न केवल भारत के स्वतंत्रता संग्राम का वीर सेना नायक था, वरन् जिसने स्वतंत्र भारत को एक सूत्र में संगठित करके सारे संसार को चकित कर दिया। सन् 1947 ई० में अंग्रेजों को यहाँ से जाने के लिए बाध्य होना पड़ा, पर वे भारत की 534 रियासतों को आजाद बने रहने की ऐसी छूट दे गए जिसके रहते देश टुकड़े-टुकड़े हो जाता। सरदार पटेल ने अधिकतर को समझा-बुझाकर और एक दो मामलों में शक्ति दिखाकर सब को एक केन्द्रीय सरकार के नीचे ला खड़ा किया। गांधी जी की प्रेरणा से बारडोली (गुजरात) के किसानों को संगठित करके उन्होंने देश में जागरण की नई ज्योति जगाई, अपनी चमकती हुई वकालत को छोड़कर राष्ट्रीय आंदोलन में कूद पड़े और त्याग के जीवन का एक नया आदर्श लोगों के सामने रखा। बारडोली की सफलता से उन्हे 'सरदार' की उपाधि मिली और भारत के देशी राज्यों को स्वतंत्र भारत में मिलाने के अपने महान् कार्य से वे 'लौह पुरुष' कहलाए।

उनका जन्म 31 अक्टूबर 1875 ई० को गुजरात के खेडा जिला के करमसद गाँव में ऐसे परिवार में हुआ जो अपनी देशभक्ति के लिए मशहूर था। वह बड़े स्पष्टवादी थे। उनके स्वभाव मे असाधारण दढ़ता थी। उन्हें उनके मार्ग से कोई विचलित नहीं कर सकता था। जो निश्चय कर लेते थे, उसे पूरा करके ही छोड़ते थे। वह हमारे देश के प्रथम गृहमंत्री थे। 15 दिसंबर 1950 को जब उनका निधन हुआ तो वे विरासत में हमारे लिए एक संगठित और सुदृढ़ राष्ट्र छोड़ गये। उनके निधन पर **जवाहर लाल नेहरू** ने कहा था, "इतिहास उन्हें आधुनिक भारत का निर्माता और भारत का एकीकरण करने वाले के रूप में याद करेगा। स्वतंत्रता-युद्ध के वे एक महान सेनापति थे। वे ऐसे मित्र, सहयोगी और साथी थे, जिनके ऊपर निर्विवाद रूप से भरोसा किया जा सकता था।"

सम्पर्क:-64/46, अन्ना कॉलोनी,
प्रथम मंजिल, बसंत नगर, चेन्नै

With Best Compliments From.

M/S. Dina Metal Ltd.

Abdul Rahmanpur Road
Patna City
Patna -8
Product: M.S. Ingot
Phone No. 616312, 641071, 640717

लाल बहादुर शास्त्री के जन्म दिवस पर

हम रहें या न रहें, पर यह देश रहना चाहिए

❑ सुमन यादव

लाल बहदुर शास्त्री जी एक सच्चे इन्सान थे। उन्होंने अपने जीवन में कभी कोई दगाबाजी नहीं की। कभी कोई सौदेबाजी नहीं की। सच्चाई व ईमानदारी से उन्होंने अपना बचपन, जवानी तथा अगला जीवन बिताया। सामाजिक क्षेत्र में, राजनैतिक क्षेत्र में तथा सत्ता प्राप्ति पर भी वे सदैव ईमानदार व सच्चे रहे और जब भी उन्होंने अपने मन के अनुकूल बात न पाई तभी अपने पद का त्याग कर दिया और इस प्रकार सच्चाई के पथ की मर्यादा कायम कर दी और देश में अपने आदर्श की एक नई परम्परा का निर्माण किया।

भारत के प्रधानमंत्री बनने के बाद शास्त्री जी ने "राष्ट्र के नाम संदेश" दिया-"हम रहें या न रहें। लेकिन यह झण्डा रहना चाहिए और देश रहना चाहिए।"

बचपन से ही उन्होंने गरीबी का सामना किया। पारिवारिक समस्याएँ होने के बावजूद उन्होंने अपना सर्वस्व जीवन देश की सेवा में लगा दिया। इसका प्रमाण हमें इस दुख भरी घटना से ज्ञात होता है-

बात उन दिनों की है जब शास्त्री जी नैनी जेल (इलाहाबाद) में बन्दी थे। पुत्री पुष्पा की दशा बहुत ही चिन्तनीय थी। प्रयाग के साथियों ने उन पर दवाब डाला कि वे बाहर जाकर अपनी बालिका की देख-भाल करें। उनकी पैरौल भी स्वीकृत हो गई, पर उन्होंने घूटने टेकने से इन्कार कर दिया क्योंकि उसके अनुसार उन्हें लिख कर देना था कि वे जेल के बाहर जाकर आन्दोलन का सर्मथन में कुछ न करेंगे। उधर लड़की जीवन और मृत्यु की लहरों में गोते खाने लगी। इधर शास्त्री जी अपने स्वदेशाभिमान पर दृढ़ थे। आखिर जिलाधीश उनकी नैतिक दृढ़ता पर द्रवित हो उठा। उसने उन्हें बिना किसी शर्त के जाने की अनुमति दे दी।

शास्त्री जी के घर पहुँचते ही बालिका ने प्राण त्याग दिए। वे अन्तिम क्रिया करके लौटे-घर के भीतर किसी से मिलने भी न गए और सामान उठाकर तांगे में बैठ गए। लोगों ने बहुत कहा कि अभी तो पैरौल बाकी है। पर उन्होंने उत्तर दिया-

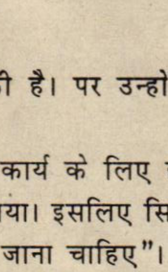

"मैं जिस कार्य के लिए छूटा था वह खत्म हो गया। इसलिए सिद्धान्ततः अब मुझे जेल जाना चाहिए"। और वे चले गए।

एक वर्ष पश्चात् शास्त्री जी का बड़ा लड़का 'हरि' बीमार पड़ा। शास्त्री जी एक सप्ताह के पैरौल पर छूटे। जाने का दिन आया- बच्चे को 104 डिग्री बुखार था। वे उसकी चारपाई के पास बैठे रहे। जिलाधीश का सन्देश मिला कि अगर शास्त्री जी लिखित वचन दें कि वे आन्दोलनकारियों से संपर्क नहीं रखेगे तो उनकी पैरौल बढ़ा दी जा सकती है। पर उन्होंने शर्त अस्वीकार कर दी। ज्वराक्रान्त हरि "बाबू जी" कहकर चीख उठा। पर शास्त्री जी ने पुनः मुड़कर बच्चे की ओर न देखा।

(बच्चों) पुत्र के प्रति ऐसी कठोर अनासक्ति इतिहास के पृष्ठों में भी बहुत कम दिखती है, पर शास्त्री जी अपनी संतानों को कष्टों की आग में आह-ऊह करते हुए देखकर भी, कर्म की साधना सदा करते रहे।

यही वह विशेषता है जिसने शास्त्री जी को कभी वैभव, प्रचार, आत्म-रीत और जीत तथा बंधु-बांधवों के मोह में आग्रस्त होने नहीं दिया।

भारत के प्रधानमंत्री बनने के बाद शास्त्री जी ने "राष्ट्र के नाम संदेश" दिया-

"हम रहें या न रहें, लेकिन यह झण्डा रहना चाहिए और देश रहना चाहिए।"

मृदुल भाषी, सौम्य तथा आडम्बर रहित इस महापुरुष में अनोखी दैवी शक्ति थी जिसके बलबूते पर वह हर क्षेत्र में अपना अमिट प्रभाव जमा गए।

सम्पर्क:-बी०ए०इतिहास(तीसरा वर्ष)
स्टेला मॉरिस कॉलेज(मद्रास)

ओ० पनीर सेल्वम तमिलनाडु के नए मुख्यमंत्री

जयललिता लालू के रास्ते पर

-विचार कार्यालय, चेन्नई

उच्चतम न्यायालय के फैसले के तुरंत बाद जयललिता ने मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दिया और उसी दिन देर शाम को ओ० पनीर सेल्वम को तमिलनाडु के नए मुख्य मंत्री के रूप में राज्यपाल सी० रंगराजन द्वारा शपथ दिलाई गई। श्री सेल्वम के साथ 22 अन्य मंत्रियों को भी पद व गोपनीयता की शपथ दिलाई गई। इस सन्दर्भ में यह काबिले गौर है कि न्यायमूर्ति एस०पी० भरूचा, न्यायमूर्ति वाई० के० सब्बरवाल और न्यायमूर्ति रूमा पाल ने अपने फैसले में कहा कि हमारा मानना है कि मुख्य मंत्री के रूप में नियुक्त किसी आयोग्य व्यक्ति को जितनी जल्दी हो सके, पद से हटा दिया जाना चाहिए। इस फैसले का न्यायमूर्ति जी० बी० पटनायक और न्यायमूर्ति ब्रजेश कुमार ने समर्थन किया।

उल्लेख्य है कि नए मुख्यमंत्री ओ० पनीर सेल्वम न केवल जयललिता मंत्रिमंडल में राजस्व मंत्री थे बल्कि कहा तो यहाँ तक जाता है कि वे जयललिता के दूर के रिश्तेदार भी हैं। इस प्रकार देखा जाय तो जयललिता बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद की राह पर ही चलने को मजबूर हुई हैं। जिस प्रकार लालू प्रसाद ने अपने किसी वरिष्ठ सहकर्मी को न चुनकर अपनी धर्मपत्नी राबड़ी देवी को ही अपना उत्तराधिकारी बनाना उचित समझा, जयललिता ने भी अपने एक रिश्तेदार को ही मुख्य मंत्री की कुर्सी पर बैठाकर निश्चिंत हो गई हैं। किन्तु ऐसा लगता है कि तमिलनाडु के मुख्य मंत्री की कुर्सी से उतरने के बाद वे लालू प्रसाद की तरह मुकदमों की सुनवाई के वक्त अदालतों के चक्कर लगाएंगी और खड़ाऊँ मुख्यमंत्री को कुर्सी सौंपकर अपने हाथ के रिमोट कन्ट्रोल के जरिए तमिलनाडु सरकार चलाने के राजनीतिक खतरों से भी उन्हें निरन्तर निपटना पड़ेगा क्योंकि उनपर सात गंभीर मामलों में मुकदमें चल रहे हैं और दो मामलों में सजा भी सुनाई जा चुकी है। सी० बी० आई उनके खिलाफ दो मामलों की जाँच कर रही है। तीन लाख डॉलर हवाला के जरिए लेने, स्पिक राज्य घोटाला, कोयला आयात घोटाला के मुकदमों में जयललिता बुरी तरह उलझी हैं। इसलिए जयललिता के लिए अभी मुश्किलों का सफर समाप्त नहीं हुआ है।

तमिलनाडु के 53 वर्षीय नए मुख्यमंत्री ओ० पनीर सेल्वम पेशे से किसान हैं और पहली बार पेरियाकुलम विधान सभा क्षेत्र से जीतकर आए हैं। कहा जाता है कि जयललिता की अत्यन्त आत्मीय सहेली शशिकला की जाति थेवर से श्री सेल्वम ताल्लुकात रखते हैं और उनके भतीजे व पार्टी सांसद टी टीवी दिनकरन के काफी करीब हैं। श्री सेल्वम को राज्य के प्रभावशाली पिछड़े समुदाय **थेवर** के प्रथम और तमिलनाडु के दक्षिणी हिस्से से ताल्लुक रखनेवाले **कामराज** के बाद दूसरे मुख्यमंत्री बनने का सौभाग्य मिला है।

डॉ० मधु धवन,चेन्नई से

जार्ज: पुन रक्षा मंत्री

केन्द्र में अटल जी के नेतृत्व में लगभग दो साल पूर्व गठित मंत्रिमंडल के छठे विस्तार में 15 अक्टूबर को राजग के संयोजक और समता पार्टी के वरिष्ठ नेता **जार्ज फर्नांडीस** को पुन: शामिल कर उन्हें भारत के रक्षा मंत्री के रूप में पद और गोपनीयता की शपथ दिलायी गई है। आपको याद होगा की **तहलका डॉट कॉम** द्वारा रक्षा सौदे की दलाली के रहस्योद्घाटन के बाद तत्कालीन रेल मंत्री **ममता बनर्जी** की मांग पर जार्ज को मंत्रिमंडल से त्याग पत्र देना पड़ा था। बाद में पश्चिम विधान सभा के चुनाव के पूर्व सुश्री ममता जी स्वम् राजग से अलग होकर रेल मंत्री के पद से हाथ धो बैठी और चुनाव में बुरी तरह पराजित होने पर जार्ज साहब की सिफारिश के बाद वह राजग में वापस में आ गयी है। अभी कुछ दिनों पूर्व ही ममता जी ने कहा था की यदि जार्ज को केन्द्रिय मंत्रिमंडल में शामिल किया जाता है तो उन्हें प्रसन्नता होगी। वाह रे राजनीति का खेल!

बहरहाल विदेश मंत्री जशवंत सिंह, जो जार्ज के त्याग पत्र के बाद रक्षा मंत्री का अतिरिक्त भार संभाल रहे थे, के जार्ज फर्नांडीस की भरपूर पैरवी किए जाने के बाद उनकी उसी पद पर वापसी हुई। ठीक इसी प्रकार अहमदाबाद दंगे के आरोपी **हरिन पाठक** को रक्षा राज्य मंत्री बनाया गया है। इसमें कतई संदेह की गुजांइश नहीं की जार्ज फर्नांडीस रक्षा मंत्री के पद की जिम्मेदारी को सभांलने के लिए खासकर मौजूदा हालात में सबसे उपयुक्त और दक्ष व्यक्ति हैं। अखिर तभी तो रक्षा मंत्री का पद सम्भालते ही आतंकी घुसपैठ को निर्ममता से कुचल देने की एलान किया। उन्हें तो मात्र समता पार्टी की पूर्व अध्यक्षा **जया जेटली** के कारनामें के चलते **बलि का बकरा** बनना पड़ा था।

कोई आश्चर्य नहीं की जार्ज की सिफारिश पर ममता जी को पुन: मंत्रिमंडल में शामिल कर लिया जाए। आज कि राजनीति का तो यही सब खेल है जिसे जनता को देखते जाना है।

-विचार संवाददाता, दिल्ली

सांसदों ने अपने वेतन और भत्ते खुद बढ़ा

❑ मनोज कुमार

संसद के पिछले सत्र में सांसदों के वेतन, भत्ते और सुख-सुविधाओं में जिस प्रकार बेशुमार वृद्धि की गई उससे आम नागरिकों के मन की यह आशंका बलबती हुई है कि अब जनप्रतिनिधि भी नौकरशाहों की तरह सुविधा भोगी होते चले जा रहे हैं। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि आजादी के बाद जिस तेजी से तथाकथित जनसेवकों का जीवन स्तर बढ़ा है उससे आम जनता और उनके बीच दूरियाँ बढ़ी हैं।

आजादी के बाद जिस तेजी से तथाकथित जनसेवकों का जीवन स्तर बढ़ा है उससे आम जनता और उनके बीच दूरियाँ बढ़ी हैं।

एक जमाना था जब आजादी के पहले अधिकांश निर्वाचित प्रतिनिधियों की राय वेतन लेने के विरूद्ध थी। आजादी मिलने के बाद संविधान सभा के सदस्यों का दैनिक एवं यात्रा-भत्ता 45 रुपये जब कर दिया गया तो संविधान निर्माण प्रक्रिया के दौरान देश की खराब आर्थिक स्थिति को देखते हुए सभा के सदस्यों ने चिंता प्रकट की और अपने दैनिक एवं यात्रा-भत्ते की राशि में 5 रुपये की कटौती का प्रस्ताव पास किया। तब से लेकर 1954 यानी लोकसभा के गठन के दो वर्ष बाद तक दैनिक भत्ते की रकम सिर्फ 40 रुपये ही रही। 1954 में सांसदों के वेतन एवं भत्ते का कानून बना और तब से तनख्वाह लेने की परम्परा स्थापित हुई। तब से लेकर आज तक यानी लगभग 17 वर्षों में सांसदों ने तकरीबन 30-35 बार अपने वेतन, भत्ते एवं अन्य सुविधाओं में वृद्धि की है। यानी हर तीन साल में कम से कम दो बार सांसदों ने खुद अपने वेतन, भत्ते एवं अन्य सुविधाएं बढ़ायी है। हमारे देश में नौकरी करनेवालों के लिए लगभग 10-12 वर्षों के अन्तराल पर वेतन आयोग गठित किया जाता है, किन्तु सांसदों व विधायकों के लिए वेतन-भत्ते तय करने के लिए ऐसी कोई संस्था नहीं है। वे खुद अपना वेतन बढ़ा लेते हैं।

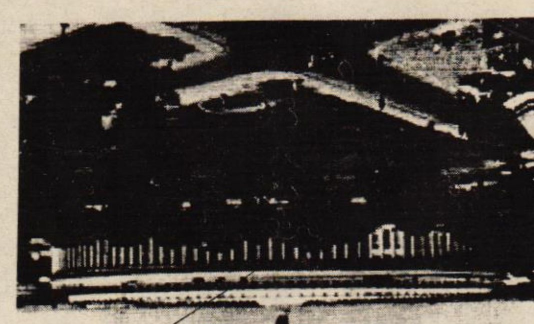

अभी-अभी पिछले संसद-सत्र में सांसदों के वेतन को प्रतिमाह 4000 रुपये से बढ़ाकर 12000 रुपये किए गए। दैनिक भत्ता को 400 रुपये से बढ़ाकर अब 500 रुपये कर दिया गया है। एक सांसद प्रतिवर्ष करीब 210 दिन का दैनिक भत्ता ले सकता है। इस प्रकार हर सांसद प्रतिमाह करीब 8500 रुपये दैनिक भत्ता प्राप्त कर सकेगा। इसके अतिरिक्त प्रत्येक सांसद को अपने संसदीय क्षेत्र की सेवा के नाम पर प्रतिमाह अब 10000 रुपये मिलेंगे। जो पहले 8000 रुपये थे। संसदीय जरूरतों के मद्दे नजर हर सांसद को सुचारू ढंग से अपना कार्यालय चलाने के लिए अब हर महीने 14,000 रुपये मिलेंगे। पहले यह रकम 9500 रु० प्रतिमाह थी। संसदीय क्षेत्र यात्रा भत्ता के रूप में अपने संसदीय क्षेत्र में कार या जीप से यात्रा करने के लिए प्रति किलोमीटर अब उसे छह की बजाय आठ रुपये बैठेगी। के०पी० सिंह देव समिति का अनुमान है कि एक सांसद अमूमन 150 दिन अपने क्षेत्र में रहता है और प्रतिदिन वह कम से कम 135 कि०मी० कार या जीप से यात्रा करता है। हालांकि यह विश्वास से परे है कि चुनाव के दिनों के अलावा कोई सांसद अपने क्षेत्र में 135 कि०मी० की सड़क यात्रा करता होगा। इस प्रकार कुल मिलाकर एक सांसद को प्रतिमाह 58000 रुपये नकद का भुगतान होता है।

अन्य सुविधाएं जिनकी कीमत पैसे में निकाली जाए तो एक सांसद पर प्रतिमाह सरकारी खजाने से करीब दो लाख रुपये से ज्यादा खर्च होंगे। यह अनुमान लोकसभा के पूर्व महासचिव **डॉ० सुभाष काश्यप** के हैं। अन्य सुविधाओं में हर सांसद को दो टेलीफोन सेट मुफ्त मिलते हैं जिसपर वह सालाना एक लाख बीस हजार की मुफ्त कॉल कर सकता है। इसी तरह साल में मिलने वाली 25000 यूनिट मुफ्त बिजली को बढ़ाकर अब 50000 यूनिट कर दिया

गया है। हर सांसद को अपनी पत्नी अथवा किसी भी एक व्यक्ति के साथ देश में कहीं भी वातानुकूलित प्रथम श्रेणी की मुफ्त रेल यात्रा करने की सुविधा प्राप्त है। उसे देश के भीतर हवाई यात्रा के लिए साल में 32 टिकट मुफ्त मिलते हैं। हर सांसद को मामूली किराए पर दिल्ली के पॉश इलाके में शानदार आवास मिलते हैं जिसका मासिक किराया 25-30 हजार रुपये से कम नहीं होगा।

इन सुविधाओं के अतिरिक्त वह अपने क्षेत्र में प्रतिवर्ष दो करोड़ रुपये का विकास कार्य कर सकता है तथा अपने विशेषाधिकार का प्रयोग कर वह प्रतिवर्ष 100 टेलीफोन और 160 एल पी०गैस कनेक्शन दिला सकता है। बात कहां तक सच है यह कहना मुश्किल पर विकास कार्य की सांसद निधि से कमीशन के तौर पर 10 से 40 प्रतिशत रकम ले लेने की बात सुनाई पड़ती है। यहाँ तक कि टेलीफोन और गैस का कनेक्शन दिलाने में भी उपभोक्ताओं को कुछ रकम देना पड़ता है। इधर हाल के दिनों में अपने क्षेत्र के बड़े व्यापारियों को वित्तमंत्री अथवा महत्वपूर्ण केन्द्रीय मंत्री से मिलवाने के लिए भी पैसे लेने का का काम प्रारम्भ हो गया है। इस आशय की बात कोई और नहीं बल्कि एक पूर्व सांसद एवं पत्रकार श्री संतोष भारतीय ने भी **राष्ट्रीय सहारा** के हस्तक्षेप में छपी एक रचना में की है।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि बढ़ती मंहगाई के मद्दे नजर सांसदों के वेतन, भत्ते एवं अन्य सुविधाओं में वृद्धि आवश्यक ही नहीं लाजिमी भी है, किन्तु एक बार में तीन गुना वृद्धि का कोई औचित्य नहीं दिखता। जनसेवकों को तो देश व समाज के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए। पर आश्चर्य यह है कि कोई राजनीतिक दल इस प्रवृति का विरोध नहीं कर पा रहा है और इस मुद्दे पर सभी चुप्पी साधे हुए हैं। दरअसल यह हमारी मौजूदा राजनीतिक व्यवस्था के सुविधाभोगी होते जाने का परिचायक है, जो राजनीतिक लिप्सा को ही बढ़ावा देगा।

जाने-माने समाज सेवक और राज्यसभा में मनोनीत सदस्य **नानाजी देशमुख** ने सांसदों के वेतन में तीन गुनी वृद्धि का कड़ा विरोध करते हुए सूचना प्रौद्योगिकी, संचार एवं संसदीय कार्य मंत्री प्रमोद महाजन को पिछले दिनों जो पत्र भेजा है और जिसकी एक प्रति राज्यसभा के सभापति **श्री कृष्णकान्त** को भी दी है वह काबिले गौर है। नानाजी ने कहा कि जब देश में लोग भूख से मर रहे हों, तब ऐसी स्थिति में सांसदों के वेतन में तीन गुनी वृद्धि कहाँ तक उचित है। कुछ सांसदों के इस तर्क कि कई देशों की तुलना में भारत में संसद सदस्यों का वेतन बहुत कम है, का जवाब देते हुए पूछा कि क्या उन देशों में भी लोग भूख से मर रहे हैं। अपने पत्र में नानाजी ने पुन: कहा कि सांसदों के इस कदम से प्रेरणा लेकर सरकारी, अर्द्धसरकारी, शैक्षणिक और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में कार्यरत कर्मचारी भी अपने वेतन में तीन गुनी वृद्धि की माँग करें तो देश में तो अराजकता पैदा हो जाएगी।

यही नहीं **श्री देशमुख** ने अपने पत्र में महाजन का उनकी इस टिप्पणी की ओर ध्यान दिलाया है कि संविधान की धारा 106 सांसदों को अपना वेतन बढ़ाने का अधिकार देती है। उन्होंने कहा- **अपना वेतन बढ़ाने के लिए संविधान की धारा का सहारा लेकर हम अपना वेतन बढ़ा रहे हैं, लेकिन क्या हम लोग अपने संविधान की इज्जत कर रहे है।?** देशमुख ने कहा कि लाभ उठाने के लिए संविधान का सहारा और कर्तव्य पालन का समय आए तो संविधान को भुला देना, कहाँ तक उचित है।

वास्तव में एक तरफ मजदूर, किसान और आम आदमी गरीबी में जीवन बसर करे और दूसरी तरफ उसके प्रतिनिधि मालामाल हों, तो ऐसी स्थिति में दोनों के बीच का रिश्ता बिगड़ता है। गाँधी जी ने कहा था कि जब देश के अधिकांश लोगों को तन ढंकने के लिए वस्त्र नहीं मिलता, तो मैं क्यों ज्यादा कपड़े पहनूँ यदि स्वयं को उनका प्रतिनिधि मानता हूँ। उसी तरह सांसदों के लिए भी जरूरी है कि वे अपना जेब भारी करने से पहले किसानों, मजदूरों एवं देश की गरीब जनता की तरफ देखें। फिर देश पर बढ़ते कर्ज को देखते हुए भी उनका वेतन बढ़ाना गलत निर्णय कहा जाएगा। आर्थिक सुविधाओं में बढ़ोत्तरी का सवाल सरकारी खजाने पर बोझ के बजाए पूरी राजनीतिक प्रक्रिया के बारे में सोचने को विवश करती है। सांसद मात्र जनता के एक प्रतिनिधि ही नहीं हैं बल्कि लोकतान्त्रिक मूल्यों के संवाहक के रूप में उसकी जिम्मेदारी निहित हैं लेकिन सांसद अपने निजी दायरे में इतना सिमटता चला गया है कि उसे मिलनेवाली सुविधाओं में लोकतंत्र की जरूरत की झलक भी दिखायी नहीं पड़ती है।

इन सभी तर्कों के बावजूद हमें यह स्वीकार करना होगा कि सांसदों की वेतन वृद्धि इतनी तो होनी ही चाहिए कि जनप्रतिनिधि सम्मानजनक ढंग से जी सके और प्रतिनिधित्व करता हुआ भी दिखे। लेकिन अगर वे नौकरशाहों की तरह वेतन-भत्तों और उसमें लगातार इज़ाफे की बात सोचते हैं तो फिर उनपर भी वही सेवा-शर्तें एवं नियम लागू होने चाहिए जो सरकारी कर्मचारियों तथा अधिकारियों पर लागू होते हैं। दरअसल सांसद जनता का सही प्रतिनिधित्व तभी कर सकते हैं जब दोनों के जीवन में जमीन-आसमान का अन्तर न हो। जिस देश में गरीबी रेखा से नीचे रहनेवालों की संख्या एक-तिहाई हो और सत्तर प्रतिशत लोग तो अल्पवित्त हों, उसे भुलाकर सांसद मध्यवित्तों या उच्च मध्यवित्तों की श्रेणी में शामिल होना पसन्द करें, यह बात जनता के गले के नीचे उतरती नहीं। सांसदों को इस बात का ध्यान रखना चाहिए।

विचार कार्यालय, दिल्ली

भारतीय संस्कृति में एकता और सद्भाव प्रतिबिम्बित

❑ अमर नाथ 'अमर'

भारत की तरह भारत की संस्कृति भी महान है। संस्कृति क्या है? साहित्य की उत्कृष्टता, कला की पराकाष्ठा, संगीत की मधुरता, जीवन पद्धति की उदात्तता, धर्म की सहिष्णुता और सहृदयता का गुलदस्ता ही तो! तरह-तरह के फूल हैं, विभिन्न तरह की खुशबू है और अलग-अलग रंग है, मगर सभी कोमलता, ताजगी आकर्षण, सुन्दरता और नमी के मूर्त्तरूप में। विश्व में ऐसा कोई देश नहीं जो इतनी विविधताओं में भी एकता का शंखानाद करता हो भारत की तरह! विश्व में भारत की तरह कोई संस्कृति नहीं जो पत्थरों को भी देवता का स्थान देती हो, पेड़ पोधों को भी इंसान की तरह भावनामय मानती हो तथा पर्व त्योहारों में विविध जीवन स्वरूपों को विविध ढंग से रंगोली की तरह सजाती सँवारती हो! भारत की महान संस्कृति ने अगर नारियों को लज्जा और सम्यक पर्दा की सुंदरता का बोध कराया है तो उनके सम्यक विकास तथा मनोरंजन के सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक साधन भी दिया है। पारिवारिक और सामाजिक जीवन में प्रेम की गंगा बहाने तथा त्याग और संतोष की माला पिरोने की कला भारतीय संस्कृति की देन है। भारतीय संस्कृति ने प्रकाश बिखेरा है, लोगों का जीवन प्रकाशमय किया है। यह संस्कृति प्राचीन काल से आत्मा का ऐश्वर्य बनकर आज भी हमारे जीवन के हर पक्ष में समाहित है, सुशोभित है। इसकी मूकता को शब्द देते हैं हमारे साहित्य, इसे जीवंत रखती हैं हमारी उत्कृष्ट परम्पराएँ। इसे सम्मान देती है भारतीय जनता की विनम्रता और सहृदयता। इसे गर्व देते हैं हमारे मन के प्राणवंत सहभाव और एकता के जलस्रोत। वेदों ने संस्कृति को वाणी दी। सम्राट अशोक ने इसका विस्तार किया। बुद्ध तथा महावीर ने इसे नया आयाम दिया, नयी दिशा दी और अपने साहित्य, नृत्य, संगीत, कला के सुनहरे स्वरुप के साथ मध्यम मार्ग अपनाकर अपनी संस्कृति को और भी करीब खींच लिया। विदेशी आक्रमण हुए। आँधियाँ आयी। तूफान उठे। मगर हमारी संस्कृति ज्यों की त्यों जाज्वल्यमान प्यार का संदेश देती हुयी भाईचारे का मंत्र फूँकते प्रगति का आह्वान करती रही। वक्त की रफ्तार में अनुभवों, विचारों, योजनाओं और कृत्यों के बीच यह संस्कृति पुष्पित पवित्र होती रही। हम गौरवान्वित होते रहे।

भारतीय संस्कृति ने अपनी भावनाओं को किसी पर लादा नहीं है बल्कि सम्पूर्ण देश को हर धर्म और भाषा के लोगों को प्यार और एकता के सूत्र में बाँधा है। यही इसकी महानता है। आज जरूरत इस बात की है कि इस संस्कृति के सभी पक्षों को हम परिष्कृत किए रहें, इसे भाषा, क्षेत्र और मज़हब के नाम पर संकीर्णता के तुच्छ विचारों से अलग रखें।

उत्तर में बद्रीनाथ, दक्षिण में सेतुबाँध रामेश्वरम्, पूरब में जगन्नाथ और पश्चिम में द्वारका भारतीय एकता के आलोक स्तम्भ हो हिमालय हमारी संस्कृति का प्रतीक है। हिन्दू, मुस्लिम, सिख और ईसाई ये चारो धर्म चार दिशाओं के रूप में भारत की धर्म संस्कृति और एकता के प्रतीक बने जिनके प्रांगण में प्रेम के दीप जलते हैं, सद्भाव के फूल खिलते हैं और सौहार्द की सुगंध फैलाती है। ऐसा है हमारा भारत! प्राकृतिक और भौगोलिक विशेषताओं, ऐतिहासिक अनुभवों, धर्मिक विचारों तथा राजनीतिक आदर्शों के कारण भारत में एकता के भाव का विकास हुआ जो समय और इतिहास की सीमाओं को लांघ कर दृढ़ और स्थिर होता चला गया। सभी भाषाओं के साहित्यों और धार्मिक कृतियों ने युग युगान्तरों में इस एकता के भाव को सुदृढ़ किया है जिसमें राष्ट्रीयता की उपासना और आराधना का विधान खुद जुड़ता चला गया। गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिंध और कावेरी में इन्द्रधनुष के सात रंग उभरे और भारत की महानता, एकता और संस्कृति रंगीन हो जगमगा उठी।

उत्तर के मंदिरों में शंखनाद, दक्षिण के मंदिरों में घंटों की गूँज से अलग नहीं। पूरब के चर्च का घंटा पश्चिम के घंटे के स्वरूप है। हिमालय से कन्याकुमारी तक नमाज अदा करने की रस्म एक है। कहीं विरोधाभास नहीं। अमृतसर के स्वर्ण मंदिर और पटना साहिब में होनेवाले गुरुग्रंथ साहिब का पाठ एक है। वेद, कुरान, बाइबिल और गुरुग्रंथ चारों भारतीय एकता की चार ध्वनियाँ हैं, चार मीनारें है। तमाम धार्मिक मान्यताएँ एकता, प्यार और सद्भाव के स्रोत हैं। ऐसे में भाषा का विवाद तथ्यहीन है। आर्य अनार्य का प्रश्न बेकार है। शिया-सुन्नी का संघर्ष निराधार है। अकाली निरंकारी का मतभेद निर्मूल है। प्रोस्टेट और कैथोलिक, दिगम्बर, श्वेताम्बर तथा मुसलमान का विवाद बेकार है। पूर्णतः तथ्यहीन है। सभी धर्म प्राचीनकाल से नदियों की तरह एकता के सागर में समर्पित होते आए हैं, जिनका उद्देश्य मानव कल्याण और प्यार रहा है। फिर इस प्रवाह को कौन रोकना चाहेगा? गुजरात का मुसलमान उर्दू से कहीं ज्यादा गुजराती जानता और लिखता-बोलता है। लिपि उसकी गुजराती है, भाषा गुजराती तो फिर भी वे सच्चे मुसलमान है। यह है एकता का एक स्वच्छ उदाहरण, सुसंस्कृतियों और भाषाओं का सुंदर

तालमेल।

राष्ट्रीय एकता, सद्भावना और धार्मिक प्रेम का रूप हमें इतिहास के पन्नों को पलटने से स्पष्ट रूप से मिल जाता है। स्वामी श्रद्धानन्द ने आज़ादी की लड़ाई में एकता और प्रेम की जो मशालें जलाई वह आज प्रेरणा के रूप में हमें नयी रोशनी देती है। स्वामी श्रद्धानन्द पहले हिन्दू थे जिन्होंने दिल्ली की जामा मस्जिद में खड़े होकर प्रवचन दिया। स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में मौलाना मुहम्मद अली खादिम-ए-काबा से खदिम-ए-वतन होकर एकता का दीप जलाते हुए अंग्रेजों को चुनौती देकर हमसे विदा हो गए।

ऐसी रही है एकता की हमारी उत्कृष्ट परम्पराएं। रहीम और कबीर किसी एक मजहब के नहीं थे। फिराक किसी एक भाषा के नहीं थे। ये सभी मानवता को समर्पित थे। हिन्दी और उर्दू तो हमारी संस्कृति, जिंदगी, आचार, व्यवहार के माध्यम हैं! फिर माध्यमों के बीच टकराव और विवाद कैसा? अगर हमें विरोध ही करना है जो हम अंग्रेजी की अंग्रेजियत से करें जो हमारी संस्कृति को दीमक की तरह चाट रही है।

एकता और भाईचारे विरूद्ध उठी आतंकवादी-आबाजें पागलपन के सिवा कुछ नहीं। जिंदगी में संघर्ष ऐसे ही कम नहीं। रोजी-रोटी की समस्याओं से लड़ना आभी बाकी है। जरूरत है एक अखण्ड विजयी साधन-सम्पन्न महान भारत की जिसकी नींव हमें ही तो डालनी है। इसी विशाल अखण्ड और मजबूत भारत की अखण्डता में हमारी सुरक्षा निहित है।

भारतीय संस्कृति को सभी धर्म, जाति, वर्ग और भाषा के लोगों ने स्वीकृत किया। संत ज्ञानेश्वर, नामदेव, संत तुकाराम, गुरू रामदास, कबीर, रहीम, सूर, तुलसी, रसखान, गुरूनानक, अमीर सुसरो, मीराबाई, बिहारी, गुरूगोविन्द सिंह, स्वामी विवेकानन्द इन सबने मिलकर भारतीय संस्कृति को वाणी दिया, उसे एक रूप दिया तथा उत्कृष्ठ परम्परा कायम कर हमारी संस्कृति की महानता, पवित्रता और एकता के शब्दचित्र बनाए। यहाँ हिन्दू, मुस्लीम या सिख की बात नहीं उभरती, भारतीय संस्कृति और उसके उपासक की तस्वीर प्रतिबिंबित होती है।

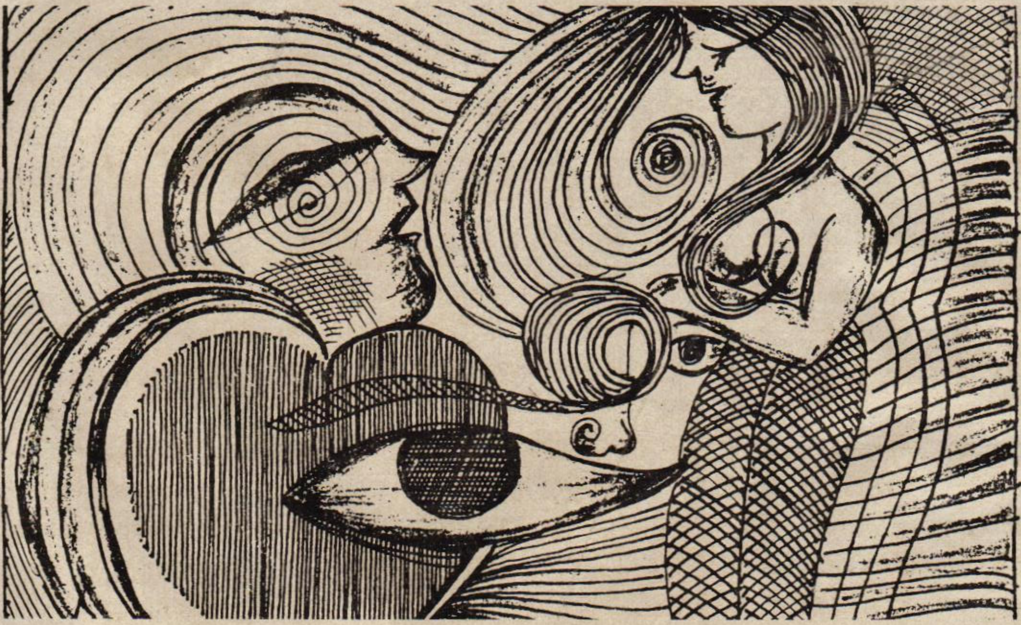

देश की अखण्डता और एकता को जब भी खतरा हुआ समस्त देशवासियों ने मिलकर इस खतरे का सामना किया। यह इसलिए सम्भव हुआ क्योंकि हमारी संस्कृति की जड़ें काफी मजबूत हैं, मान्यताएँ और मूल्य एक हैं। उत्तर का कत्थक, दक्षिण का भरतनाटयम्, पूर्व का मणिपुरी और पश्चिम का गरबा कहीं न कहीं उत्पत्ति की दृष्टि से मंदिर और आराधना से जुड़ा है भले ही उनकी आराधनों के रंगरूप और स्वरूप अलग-अलग क्यों न हों। अतिथि सत्कार, पर्व त्योहार भारतीय संस्कृति के उदार रूप के प्रतीक हैं। पर्व त्योहार भारतीय संस्कृति के सुनहले पक्ष हैं जिसने भारतीयों को जीने का सहज मार्ग दिया, एक साथ खुश होकर हँसने गाने का सामूहिक बहाना दिया और समस्त भारत को एक सूत्र में बाँधने के लिए एक कड़ी का काम किया।

रामचरित मानस में भारतीय परिवार के आदर्श की झांकियाँ मिलती है जिसमें माता, पिता, भाई, पत्नी और पुत्र के कर्त्तव्य को भारतीय संस्कृति के अनुरूप उभारा गया हो इस परम्परा में भारतीय परिवारों को जोड़ कर रखा हो यह विश्व के लिए उच्चायर्श है।

भारतीय संस्कृति ने अपनी भावनाओं को किसी पर लादा नहीं है बल्कि सम्पूर्ण देश को हर धर्म और भाषा के लोगों को प्यार और एकता के सूत्र में बाँधा है। यही इसकी महानता है। आज जरूरत इस बात की है कि इस संस्कृति के सभी पक्षों को हम परिष्कृत किए रहें, इसे भाषा, क्षेत्र और मज़हब के नाम पर संकीर्णता के तुच्छ विचारों से अलग रखें। वस्तुत: भारतीय संस्कृति आलोक वाहिनी है। यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम इसकी किरणों को मंद न पड़ने दें, इसकी सुंदरता और खुसबू को जीवन से अलग न होने दें। इसी में हमारा मुख है मुख्य भविष्य है इसी में जीवन का मूल्य, अर्थ और जीवन की सार्थकता है।

सम्पर्क: 61 एफ, बंगला साहिब रोड,
गोल मार्केट, नई दिल्ली-1

डरबन-सम्मेलन में जातिभेद का मुद्दा शामिल न हो सका

मामला भा०प्र०से० के एक टॉपर का

❑एo.के० विश्वास

संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा डरबन में पहली बार नस्लवाद के खिलाफ 31 अगस्त, 2001 से 7 सितम्बर, 2001 तक आयोजित विश्वसम्मेलन में भाग ले रहे लगभग 160 देश नस्लीय भेदभाव समाप्त करने के उद्येश्य से पारित एक सिद्धान्त पत्र एवं एक कार्य योजना को अपने-अपने देशों में लागू करने पर सहमत हो गए हैं।

काम की जगह वंश, रंग, राष्ट्र अथवा जातीय उद्भव को रखने का भारत का प्रस्ताव पारित न हो सका। दलित गैरसरकारी संगठन द्वारा जातीय भेद-भाव को सम्मेलन के कार्यक्रम में शामिल करने का प्रस्ताव पारित न हो सका। भारतीय प्रतिनिधिमण्डल ने भी इसका विरोध किया। जबकि भारतीय समाज में आज भी जातिवाद किसी न किसी रूप में कायम है। भा०प्र०से० के एक टॉपर का मामला इसका एक प्रमाण है।- सम्पादक

भा०प्र०सेवा तथा केन्द्रीय सेवाओं में कार्मिकों की नियुक्ति के लिए संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित पहली प्रतियोगिता परीक्षा में कुल 3,647 उम्मीदवार शामिल हुए थे। सं०लो०से० आयोग के पहले रिपोर्ट में अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जन जाति के उम्मीदवारों की संख्या का वर्णन नहीं है परन्तु इसके रिपोर्ट में कहा गया है कि अच्युतानन्द दास देश के पहले अनुसूचित जाति थे जिन्हें भा०प्र०से० के लिए चयन किया गया था। वास्तव में वे लिखित परीक्षा में अपने बैच के टॉपर थे। पश्चिम बंगाल के अच्युतानन्द दास ने लिखित परीक्षा में 1040 अंकों में से 613 अंक प्राप्त किया था जबकि मद्रास के एन कृष्णन ने 602 अंक ही प्राप्त किया था। परन्तु साक्षात्कार में अच्युतानन्द दास श्री कृष्णन से काफी पीछे रह गए क्योंकि श्री दास को 300 अंकों में से मात्र 110 मिले जबकि श्री कृष्णन को 260 यानी उनके दुगुने से भी अधिक। परन्तु पश्चिम बंगाल के ही अनिरूद्ध गुप्ता का मामला, जो अपनी मौखिक परीक्षा में असाधारण उपलब्धि हासिल किया था, दिलचस्पी और उल्लेखनीय दोनों है।

शीर्ष स्थान प्राप्त करने वालों के मामलों को समझने के लिए इन तीनों उम्मीदवारों द्वारा प्राप्त अंकों को देखा जा सकता है-

लिखित परीक्षा में अच्युतानन्द दास तथा एन० कृष्णन के बीच अंकों में अन्तर मात्र ग्यारह होने पर भी मौखिक परीक्षा में यदि दूसरे ने पहले को पीछे छोड़ दिया तो शायद यह अधिक आश्चर्यजनक नहीं है। परन्तु अच्युतानन्द दास की तुलना में अनिरूद्ध दास गुप्ता के लिखित एवं मौखिक परीक्षा के अंक से कई प्रश्न खड़े हो जाते हैं। श्री दास गुप्ता भा० प्र० से०, भा० आ० से०, भा०व०से० इत्यादि की नियुक्ति हेतु अनुशंसित सभी सफल उम्मीदवारों के बीच मौखिक परीक्षा में उच्चतम अंक प्राप्त किये। परन्तु ये ही वह भी थे जो भा०प्र०से० तथा आनषंगी सेवाओं की नियुक्ति हेतु सभी योग्य उम्मीदवारों के मुकाबले न्यूनतम कुल अंक के साथ ही न्यूनतम औसत प्राप्त किये। यही नहीं वे सामान्य ज्ञान में भी योग्यता प्राप्त उम्मीदवारों से सर्वाधिक कम अंक प्राप्त कर पाये थे। दूसरे शब्दों में दास गुप्ता सामान्य ज्ञान में 26.66 प्रतिशत तथा लिखित कुल प्राप्तांकों में 47.04 प्रतिशत ही प्राप्त कर पाये परन्तु उन्होंने व्यक्तित्व परीक्षा में 88.33 प्रतिशत का आश्चर्यजनक अंक हासिल कर लिया जबकि अच्युतानन्द दास को क्रमश: 42.66 प्रतिशत, 48.36 प्रतिशत तथा व्यक्तित्व परीक्षा में 36.66 प्रतिशत अंक ही प्राप्त कर सके। लिखित परीक्षा में दास तथा दासगुप्ता के प्राप्तांकों में 111 का अन्तर था जो काफी बड़ा था परन्तु अंतर का यह प्रतिशत इतना घटा कि वे दास गुप्ता से 11.33 प्रतिशत ही ऊपर रह गये। सामान्य ज्ञान में सभी सफल उम्मीदवारों के बीच अत्यंत खराब (26.66 प्रतिशत) अंक प्राप्त करने वाले अनिरूद्ध दास गुप्ता द्वारा साक्षात्कार में उच्चतम अंक प्राप्त करना सबसे बड़ा आश्चर्य ही हो सकता है। मौखिक परीक्षा में उनका 265 का अंक जिसके बाद कृष्णन को 260 अंक प्राप्त हुए, ने उन्हें अच्युतानन्द दास के मुकाबले एक बड़े अंतर को भरने में न सिर्फ सहायता की बल्कि वे उन्हें काफी पीछे भी छोड़ गये। परिणामस्वरूप कृष्णन शीर्ष पर आ गये, अनिरूद्ध दास गुप्ता ने मेधा सूची में 22 वां स्थान प्राप्त कर लिया तथा अच्युतानन्द दास को 48वां स्थान दिया गया। वे भा०प्र०से० में नियुक्ति हेतु अनुशंसित योग्यता प्राप्त उम्मीदवारों की सूची में अंतिम व्यक्ति होकर रह गए। उन्हें उत्तर प्रदेश में कैडर आमंत्रित किया गया। अनिरूद्ध दास गुप्ता ने सिर्फ सामान्य अंग्रेजी में अच्युतानंद दास तथा कृष्णन दोनों को पीछे छोड़ा। ठीक इसी तरह का और उदाहरण भारतीय प्रशासनिक सेवा में सफल देश. के सर्वप्रथम अनुसूचित जनजाति के एक असम उम्मीदवार नामपुई जाम चोंगा का भी उदाहरण है।

इस प्रकार लिखित परीक्षा में बेहतर उपलब्धि के बावजूद अच्युतानन्द दास तथा नामपुई जाम चोंगा दोनों व्यक्तित्व परीक्षा समिति को प्रभावित नहीं कर सके। दूसरी तरफ दास गुप्ता तथा चोंगा के प्रतियोगी साथी सेन गुप्ता दोनों ने इसे प्रमाणित कर दिया कि वे अपनी कलम से जितना अपने परीक्षकों को प्रभावित नहीं कर सके उससे अधिक उनके व्यक्तित्व ने चयन समिति को प्रभावित किया।

(लेखक सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के सचिव हैं)

आतंकवाद के खिलाफ युद्ध जारी

अफगानिस्तान के कई शहर को भारी नुकसान

काबुल, कंधार व जलालाबाद के हवाई अड्डे

भीषण बमबारी में नेस्तनाबूद

विचार कार्यालय, दिल्ली

अमरीका पर 11 सितम्बर को हुए हमले के ठीक 27 वें दिन 7 अक्टूबर की रात 10 बजे अमरीका तथा ब्रिटेन के क्रुज मिसाइलों द्वारा अफगानिस्तान के बड़े शहरों को निशाना बनाया गया। इन मिसाइलों द्वारा किए गए भीषण बमबारी में अफगानिस्तान की राजधानी काबुल, कंधार तथा जलालाबाद के हवाई अड्डे नेस्तनाबूद हो गए। उमर व लादेन अपने ठिकानों से निकलकर कहीं और भागे। अमरीका और ब्रिटेन के लड़ाकु विमानों ने तालिबान के हवाई, रक्षा, संचार, और राडार संस्थानों पर बम बरसाए।

सीएनएन के अनुसार अमरीकी जेट विमान के काबूल के आसमान से गुजरने पर तालिबान की विमान भेदी तोपें गरज उठीं। लादेन का प्रशिक्षण केन्द्र नष्ट हुआ तथा मुल्ला उमर के परिजनों समेत बड़ी संख्या में लोग हताहत हुए। अफगानिस्तान में संयुक्त राष्ट्रसंघ के चार कर्मियों के भी मारे जाने की सूचना मिली है।

इधर तालिबान ने जेहाद का एलान किया और दुहराया कि वह किसी भी कीमत में लादेन को नहीं सौपेंगे। पाकिस्तान के हर बड़े शहरों में इस अमरीकी हमले के खिलाफ वहाँ के नागरिकों ने विरोध प्रदर्शन किया। अकेले पेशावर में लगभग 10 हजार लोगों ने प्रदर्शन किया। दूसरी ओर पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल मुशर्रफ ने कहा कि पाकिस्तान इन हमलों का समर्थन करता है। इसी प्रकार दुनिया के लगभग 40 देशों ने किसी न किसी रूप में अमरीकी कार्रवाई का समर्थन किया है। अमरीका के साथ ब्रिटेन, फ्रान्स, जर्मनी, रूस, तथा भारत जैसे देश इस हमले में एकजुट हैं। पाकिस्तान से सटे अरब सागर में तैनात विमानवाहक पोत किट्टीहॉक पर हेलिकॉप्टर उतरेंगे। इस पंक्ति के लिखे जाने तक आसमानी कहर बरपाने के साथ ही जमीनी हमले की तैयारी भी की जा रही है। लादेन की तलाशी के लिए हैलीकॉप्टर का प्रयोग होगा।

इन हमलों के बाद लोगों के मन में यह प्रश्न स्वाभाविक है कि आखिर अफगानिस्तान में चल रही आतंकवादी विरोधी यह लड़ाई कितनी लम्बी खिंचेगी। क्या अमरीका ब उसके सहयोगी देश ओसामा बिन लादेन को जीवित या मृत गिरफ्तार कर सकेंगे? यह कहने की आवश्यकता नहीं कि अमरीका द्वारा युद्ध के लिए परम्परागत तकनीक के बजाए नवीनतम तकनीकों और आधुनिकतम विमानों तथा मिसाइलों से हमला किया जा रहा है ताकि वह अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को बहाल करें। लादेन ने मजहबी कट्टरबाद की घुट्टी पिलाकर जो आत्मघाती मानव बम तैयार किए है उनकी भयावहता से हर देश इस समय भयभीत है। न्यूयार्क व वाशिंगटन में हुए विध्वंस से इसका कारण आसानी से समझ में आ जाता है। आतंकवाद पर हुए इस अमरीकी आक्रमण के साथ ही दुनिया भर के मुस्लिम देशों में इस सैन्य कार्रवाई का कड़ा विरोध शुरू हो गया है। और तो और इंडोनेशिया जैसे देशों में भी कट्टरपंथियों ने उग्र विरोध प्रदर्शनों से अपने गुस्से का इजहार किया है। उधर **अलकायदा** के प्रवक्ता सुलेमान अबु गैस ने कहा-हर मुस्लिम पर अपने मजहब और मुल्क की हिफाजत के लिए जंग और जेहाद फर्ज है। दिल्ली जामा मस्जिद के मौलाना बुखारी कह रहे हैं कि **ओसामा बिन लादेन जिन्दाबाद**। किन्तु इस्लाम ऑनलाइन बेबसाइट जंग के इस माहौल में इस्लाम जगत से शांति और सहनशीलता को अपनाने के लिए कह रही है। मसलन नफरत को दबाने का ही संदेश दिया जा रहा है।

इस बीच पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल मुशर्रफ श्रीनगर के विधान सभा के आत्मघाती हमले की भर्त्सना करते हुए उसकी जाँच करवाने का वादा किया है तथा भारत के प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी से दूरभाष पर बातचीत के दौरान आतंकवाद के खिलाफ साझा संघर्ष की गुजारिश कर उन्होंने नयी चाल चली है। दरअसल एक ओर वह आतंकवादियों से पीछा भी छुड़ाना चाहते हैं और दूसरी ओर कश्मीर मुद्दे को भी जिन्दा रखना चाहते हैं। भला एक ही साथ दो दिशाओं में चलने का क्या अर्थ है? यदि सचमुच वे आतंकवाद को खत्म करना चाहते है तो कश्मीर के आतंकवाद को जेहाद सिद्ध करने का कुप्रचार तुरन्त बन्द करना होगा अन्यथा उनकी नयी चाल में भारत को आने से परहेज करना होगा।

मियां की जूती मियां के सिर

विचार कार्यालय, दिल्ली

आतंकवादियों द्वारा अमेरिका पर किए गए हमले के बाद पाकिस्तान दो पाटों के बीच फंस गया दिखाई पड़ रहा है। एक तरफ अमेरिका उसका मददगार है तो दूसरी तरफ अफगानिस्तान को छोड़ नही सकता है ऐसी परिस्थिति में मुर्शरफ मुश्किल में फंस गए हैं। दरअसल अमेरिकी सैन्य के इस्लामाबाद पहुँचने के बाद अफगानिस्तान पर अमरीकी फौज के हमले की आशंका से अफगानिस्तान में जो भगदड़ मची है उसमें अफगानी नागरिक पाकिस्तान की ओर भागते नजर आ रहे हैं। ओसामा बिन लादेन आतंकवाद का एक शक्तिशाली प्रतीक बना हुआ है और अपनी धरती से लादन व अफगानिस्तान पर अमेरिकी हमले के चलते पाकिस्तान को इस्लामी देशों के बीच अछूत बन जाने की हालत का भी सामना करना पड़ सकता है। आतंकवाद के चलते वह संकट में पड़ गया है और **मियां की जूती मियां के सिर** कहावत को चरितार्थ कर रहा है।

यही नहीं, अमरीका का भ्रम अब टूटा है। पिछले डेढ़-दो दशक से आतंकवाद से जूझ रहे भारत ने अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के मुखिया अमरीका से लगातार गुहार लगाई किन्तु सिवाय शाब्दिक सहानुभूति के उसे कुछ न मिला। बल्कि सच तो यह है कि आतंकवाद के निरन्तर शह देने वाले पाकिस्तान का हौसला अमरीका बढ़ाता रहा। लगातार अगाह करने के बाद भी अमरीका जैसे धनाढ्य देश ने कभी इस पर तवज्जों नहीं दिया क्योंकि उसका मुगालता यह था कि आतंकवाद तो एक मच्छर है जिसे जब चाहें वे मसल देंगे। किन्तु पिछले 11 सितम्बर को आतंकवादियों ने अमरीका की विशाल अट्टालिका को जब ढहा दिया तो अमरीका का भ्रम टूटा। आतंकवादी हमलों से न केवल हजारों हजार लोगों की जानें गईं बल्कि अरबों-खरबों रुपए का नुकसान भी हुआ। आतंकवादियों ने एक साथ अमरीका के चार-चार हवाई जहाजों का अपहरण किया और अमरीकी

गुप्तचर व्यवस्था सोती रही।

दहशतवाद कहाँ किस रूप में प्रकट होगा, कहा नहीं जा सकता क्योंकि आतंकवादी अब केवल आत्मघाती ही नहीं, बल्कि वह अधुनातन तंत्र से भी सुपरिचित हैं। अमरीका ने जिसे स्वयं पाला-पोसा वह उसी का भस्मासुर हो गया और उसके मुँह पर भयानक आतंकी तमाचा लगाया। इसलिए अमरीका के साथ भी **मियां की जूती मियां के सिर** वाली कहावत चरितार्थ हुई।

दिलीप कुमार, दिल्ली से

मुल्ला उमर

जिसकी आज तक किसी ने शक्ल नहीं देखी

अफगानिस्तान में सोवियत संघ के खिलाफ मुहिम छेड़नेवाला **मुल्ला मोहम्मद उमर** आज तालिबान का सर्वोच्च नेता बन चुका है। सऊदी अरब से निष्कासित आतंकवादी **ओसामा बिन लादेन** को अफगानिस्तान में बतौर मेहमान शरण देनेवाला यही उमर है जिसने लादेन को अपना दामाद बना लिया। आखिर इस उमर में क्या है जिसके एक इशारे पर अफगानिस्तान के हजारों तालिबान अपनी जान न्योछावर करने को तैयार रहते हैं।

तत्कालीन सेवियत रूस की फौज के खिलाफ मुहिम में उमर अपनी एक आँख खो चुका है फिर भी उसकी निगाह बड़ी पैनी है। उमर कंधार में रहता है और अबतक केवल दो बार काबुल गया है। इस रहस्यमय नेता को जिन इक्के-दुक्के पर विश्वास है उसमें से एक लादेन है। यह इतना रहस्यमय बन चुका है कि आज तक उसकी शक्ल भी किसी ने नहीं देखी है। इंतहा यह कि उनसे अभी तक दो गैर मुस्लिम ही मिल पाए हैं क्योंकि वह अपने को इतना दबा-छिपा कर रखता है कि तालिबान और अफगानिस्तान का भविष्य तय करने के लिए आयोजित शूरा की बैठक जिसमें एक हजार से अधिक लोग शामिल थे, में स्वयं जाना उसने जरूरी नहीं समझा और अपने एक प्रतिनिधि द्वारा अपना बयान पढ़वा दिया।

बिन लादेन पर किताब लिखने वाले यूसुफ बोदानस्की का कहना है कि 1998 में लादेन की बड़ी बेटी के साथ उमर की शादी के बाद दोनों के रिश्ते और मजबूत हो गए। लादेन ने हाल में चौथी शादी उमर की बेटी से की।

M/S. Nath Cold Storage
Mogalpura, Patna City
Patna - 8
contact For
Potato Storage
Phone: 641311

अमन का दुश्मन लादेनः अपने आप में एक कहानी

सुधीर रंजन

इस्लामी आतंकवादी संगठनों के सुप्रीम कमांडर **ओसामा बिन लादेन** अपने आप में एक कहानी है। 1957 में जन्में सऊदी अरब के एक धनाढ्य भवन निर्माता मोहम्मद बिन लादेन की 52 संतानों में ओसामा का स्थान 17वाँ है। इसने सिविल इंजीनियरींग की शिक्षा प्राप्त की तथा अफगानिस्तान में सोवियत संघ के अतिक्रमण के विरूद्ध मुजाहिद्दीनों के साथ मिलकर काम किया लेकिन बाद में अमेरिका से उसका मोहभंग हो गया।

लादेन ने 1988 में अपने आतंकवादी संगठन **अल कायदा** का गठन किया, जिसकी 64 से अधिक मुस्लिम व अन्य देशों में शाखाएं और प्रशिक्षण शिविर हैं। इसका उद्येश्य पश्चिम एशिया में अमरीकी समर्थक शासकों का पतन तथा अमरीकी सेना को यहाँ से निकलना है। इसके मुख्य प्रशिक्षण शिविर अभी अफगानिस्तान में हैं। इसके विश्व्यापी संगठन का सारा खर्च लादेन की 30 करोड़ डॉलर की सम्पत्ति से चलता है।

अपनी विद्रोही गतिविधियों के कारण ओसामा को जब सऊदी अरब से निष्कासित कर दिया गया तो वह सूडान चला गया। नैरोबी व तंजानिया में अमेरीकी दूतावासों पर बम विस्फोट के बाद वह अफगानिस्तान भाग आया और वहीं अपने परिवार सहित रहने लगा। विशेषज्ञों के अनुमान के अनुसार पिछले बीस वर्षो के दरम्यान पाकिस्तान की शह पर लादेन ने करीब दो लाख से अधिक मुजाहिद्दीन तैयार किए हैं। इनमें से करीब 5000 ऐसे हैं जो आदेश मिलते ही जेहाद के नाम पर **मानव बम** बनने को तैयार रहते हैं। इन पाँच हजार मानव बमों में करीब 1000 पाकिस्तानी हैं।

कहा जाता है कि हाथियारों और नशीले पदार्थों की तस्करी के अलावा कई इस्लामी देशों की सरकारों से इन्हें पैसा मिलता है। केन्या में शतुरमुर्ग पालन, तुर्की में वानिकी, अफ्रीका में हीरा-व्यापार व सूडान में ऊँट पालन और ताजिकिस्तान में कृषि-ये कुछ ऐसे धंधे हैं जिनका मालिक है **ओसामा**

बिन लादेन। एक रिपोर्ट के अनुसार लादेन की सालाना आय 200 करोड़ डॉलर यानी करीब 10000 करोड़ रुपये से अधिक है।

रक्षा विशेषज्ञों की स्पष्ट मत है कि लादेन के पास परमाणु बम तो नहीं पर कम से कम रेडियेशन, रासायनिक और जैविक हथियार हैं। आज वह इस्लाम के कट्टर समर्थकों का मसीहा बन चुका है। अफगानिस्तान से उसका संबंध इसलिए भी प्रगाढ़ हो गया क्योंकि उसने 1999 में तालिबान के सर्वेसर्वा **मुल्ला उमर** की बेटी से शादी कर ली। इसी कारण सऊदी किंग में अच्छा रिश्ता हो गया। सऊदी शाही परिवार के संरक्षण में ही उसका जहाजरानी, परिवहन, संचार के अलावा मूलतः निर्माण का कारोबार खूब फला-फूला। किंग के कहने पर लादेन ने इस्लाम का सबसे पवित्र स्थल मक्का-मदीना का जीर्णेद्धार कराया था। आज अफगानिस्तानियों खासकर पश्तुनों का दामाद और दूनिया भर के जेहादियों का मसीहा बन गया है।

पिछले ग्यारह सितम्बर, 2001 को अमेरिका के न्यूयार्क स्थित विश्व व्यापार केन्द्र तथा वाशिंगटन स्थित रक्षा मंत्रालय के पेंटागन भवन पर जो हमले कर उसे ध्वस्त किया गया कहा जाता है कि उसमें ओसामा बिन लादेन का ही हाथ था। अमरीका अपने इस नए दुश्मन से कैसे निपटेगा यह विश्व के लगभग सभी लोकतान्त्रिक सरकारों के लिए एक यक्ष प्रश्न है। अगर लोकतान्त्रिक मूल्यों की रक्षा करनी है और आतंकवाद के विरूद्ध निर्णायक युद्ध करना है तो सबसे पहले सही दुश्मन की पहचान करनी होगी अन्यथा लाखों-लाख निर्दोष की जान खेलकर सच्चाई से मूँह मोड़ना होगा।

विचार कार्यालय, दिल्ली से।

जागो देश के युवक युवतियों

❑ अन्सिला सिक्बेरा

जागो, देश के युवक युवतयों,
राष्ट्र के लिए एक होकर,
एकता का संदेश फैलाओ।
दुशमनी ईर्ष्या सब दूर भगाओ,
देश के लिए भेदभाव को हटाओ।
एक ही मानव धर्म को अपनाओ
एक ही माँ के बच्चे कहलाओ।
सत्य, शांति धर्म की मूर्ति भारत
सरल रीति नीति का स्फूर्ति भारत।
स्वर्ण भूमि, पुण्य भूमि हैं हमारा भारत
धन्य है भारतीय, जय भारत।

सम्पर्कः स्टेल्ला मारिस कालेज, चेन्नै

क्या भारत अपने आप को इस युद्ध से बचा पाएगा?

❑ संजय सौम्य

अमरीका पर हुए हमले के बाद वहाँ के राष्ट्रपति जार्ज बुश ने आतंकवाद के विरूद्ध जिस युद्ध की घोषणा की है वह एक सामान्य युद्ध नहीं है। यह तय है कि अमरीका यदि युद्ध में अपनी पूरी ताकत झोंकता है, तो तालिबान भी पूरी शक्ति के साथ इसका मुकाबला करेगा। ऐसे में यह युद्ध काफी लम्बा चलेगा। आपको याद होगा कि 1939 में प्रारम्भ द्वितीय विश्व युद्ध 1945 में समाप्त हुआ था।

अमरीका अपने पक्ष में दुनिया के मुस्लिम देशों का समर्थन प्राप्त करने का प्रयास कर रहा है। हालाँकि विश्व व्यापार केन्द्र और पेंटागन की इमारतों पर हुए आतंकवादी हमले की पूरी दुनिया ने निंदा की है बावजूद इसके रूस, चीन, फ्रान्स, जर्मनी और इटली समेत कई इस्लामी देशों के बयान द्विअर्थी हैं। ज्यों-ज्यों अमेरिका का समुद्री बेड़ा और युद्ध विमान अपना स्थान ले रहे हैं त्यों-त्यों राष्ट्राध्यक्षों की भाषा बदल रही है। युद्ध की राजनीति भी कम विचित्र नहीं होती और यह तो एक अलग तरह की जंग है।

पाकिस्तान अमरीका को मदद देने से किसी भी सूरत में इन्कार नहीं कर सकता है और ऐसी स्थिति में तालिबान के खिलाफ कार्रवाई में पाकिस्तान एक जरिया बने, इसे वहां की आवाम नहीं पचा पाएगी क्योंकि पाकिस्तान ने हथियारों से लेकर धन और सैन्यबल तक हर तरह से तालिबान की सहायता की है और वहां की जनता से तालिबान का गहरा जुड़ाव रहा है। इस स्थिति में अनुमान है कि पाकिस्तान द्वारा अमरीका की सहायता किए जाने पर पाकिस्तान में गृहयुद्ध छिड़ सकता है।

दूसरी ओर युद्ध भारत के लिए भी मुसीबतें पैदा कर सकता है क्योंकि भारत में 13 प्रतिशत मुसलमान हैं। ऐसी स्थिति में यहाँ के मुसलमान इस्लाम पर हमला के नाम पर कठोर और जिद्दी मुद्रा अपना सकते हैं। दिल्ली जामा मस्जिद के इमाम बुखारी का भड़काऊ बयान तो आपने पढ़ा ही। पाकिस्तान और अमरीका का गठबन्धन पुनर्जीवित हो गया है और ऐसी स्थिति में भारत को अपना कदम फूँक-फूँक कर बढ़ाना होगा। क्योंकि जंग का फोकस भारतीय उप महाद्विप बन रहा है।

यदि अमरीका आतंकवाद के खिलाफ एक स्थायी मोर्चा बना रहा है तो भारत उससे अपने को कतई अलग नहीं रख सकता क्योंकि पिछले दो दशक से यह स्वयं आतंकवाद से जूझ रहा है। हाँ, अमरीका का केन्द्र-विन्दु यदि ओसामा बिन लादेन होता है तो हमें सोच-विचार कर अपना कदम बढ़ाना होगा।

एक बात और काबिले गौर है कि अगर अमरीका सुरक्षा के दावे की इतनी आसानी से धज्जियाँ उड़ाई जा सकती हैं तो भारत के पास अपनी राजधानी नई दिल्ली और देश की वित्तीय राजधानी मुंबई को बचाने की क्या गुंजाइश है? अभी-अभी आपने कश्मीर के विधानसभा में जो उग्रवादियों ने जो कारनामें किए उससे लगभग 40 निर्दोष लोगों की जाने गई क्या इससे भी हम पाठ नहीं ले सकते ? अमरीका के बाद क्या भारत उन आतंकवादियों के निशाने पर नहीं आ सकता है? यह सवाल न केवल रक्षा व गृह मंत्रालय के अधिकारियों के जेहन में है बल्कि हर भारतीय के मन में कौंध रहा है।

उच्चत्तम न्यायालय का ऐतिहासिक फैसला

बड़े बेआबरू होकर हटीं 'अम्मा जी'

कामेश्वर मानव

उच्चत्तम न्यायालय ने अपने एक ऐतिहासिक फैसले में तमिलनाडु की मुख्य मंत्री सुश्री जयललिता की नियुक्ति को अवैध घोषित कर मुख्यमंत्री की कुर्सी से हटा दिया और ऐसा करके उसने संविधान के प्रहरी का दायित्व बखूबी निभाया है। देश के इतिहास में यह

सम्भवत: पहला मौका है जब उच्चत्तम न्यायालय ने मुख्यमंत्री पद पर किसी व्यक्ति की नियुक्ति को असंवैधानिक करार दिया है। न्यायालय का यह फैसला ऐतिहासिक और महत्वपूर्ण इस अर्थ में है कि संविधान के अनुच्छेद 164, जिसके चलते सारा विवाद पैदा हो गया था, की व्याख्या हो गई है और साथ ही संविधान और जनादेश में किसका पलड़ा भारी है इस विवाद को सुलझा दिया गया है। संविधान पीठ ने अपने फैसले में यह स्पष्ट कर दिया है कि अनुच्छेद 164 के तहत राज्यपाल को यह अधिकार प्राप्त है कि वह किसी गैर विधायक को भी मुख्य मंत्री नियुक्त कर सकता है, लेकिन उसे यह देख लेना चाहिए कि वह गैर विधायक अनुच्छेद 173 के तहत सदस्य बनने की योग्यता रखता हो और अनुच्छेद 191 के अन्तर्गत वर्णित अयोग्यताओं से बचा हुआ हो। संविधान पीठ ने इस विवाद को भी सुलझा दिया है कि लोकतन्त्र में जनादेश के महत्व को कम करके नहीं देखा जा सकता, लेकिन जनादेश को भी संविधान के दायरे में होना चाहिए।

उच्चत्तम न्यायालय के इस फैसले के बाद अब बहुमत के बल पर कोई सजायाफ्ता व्यक्ति संविधान की गरिमा के साथ खिलावाड़ करने की जुर्रत नहीं कर सकेगा। इस फैसले से अब यह स्पष्ट हो गया है कि देश में कानून का शासन है और यही प्रजातान्त्रिक व्यवस्था की रीढ़ भी है। संविधान और कानून की सर्वोच्चता ही जनतंत्र को भीड़तंत्र से अलग करती है। बहुमत का समर्थन स्वेच्छाचार का लाईसेंस नहीं है और न ही वह उन्हें न्यायिक दंड से मुक्त करा सकता है। बहुमत के नाम पर कानून को भी जेब में रख लेने की प्रवृति ही अराजकता को जन्म देती है। आखिर तभी संविधान के प्रावधानों व मान्य लोकतान्त्रिक परम्पराओं का उल्लंघन किए जाने के कारण ही आज संसद में लगभग 40 और विधान सभाओं में 300 से अधिक लोग ऐसे चुनकर आ गए हैं जिनके विरूद्ध अनेक गंभीर मामलों में मुकदमें चल रहे हैं। कुछ ऐसे लोग भी हैं जो जेल में रहते हुए भी चुनाव जीत कर आ गए है। ये लोग अपने बाहुबल, धनबल, जाति-बिरादरी व झूठे नारों तथा वायदों के सहारे ही चुने जाते हैं।

बड़े बेआबरू होकर तेरे कुचे से हम निकले कहावत को चरितार्थ कर रही सुश्री जयललिता वही हैं जिसने अपनी सनक व स्वार्थ की वजह से अटल जी की पिछली सरकार का तख्ता पलट कर देश पर चुनावों का 1200 करोड़ रुपये का बोझ लाद दिया था। जो राजनीतिक पार्टियां देश में शुचिता की राजनीति लाने की बात करती हैं उन्हें ऐसे सनकी और भ्रष्टाचारी राजनेताओं से परहेज करने का प्रयास करना चाहिए। जो हो, उच्चतम न्यायालय के इस फैसले ने देश की राजनीति में शुचिता लाने का एक रास्ता दिखाया है और इसके परिणाम निश्चित रूप से दूरगामी होंगे। सारा राष्ट्र खुश है पर भ्रष्टाचारी, राजनेताओं में चिन्ता व्याप्त हो गई है। न्यायपालिका ही चाहे तो लोकतंत्र की गरिमा अक्षुण्ण रखी जा सकती है। अन्यथा अरबों का घोटाला करने वाले भी जब **'राष्ट्र' की चिन्ता** व्यक्त करते नजर आते हैं तो बड़ा दु:ख होता है।

लालू को झटका

चारा के 36 मामले स्थानांतरित

उच्चत्तम न्यायालय के एक अहम फैसले के बाद बहुचर्चित पशु-चारा घोटाले से संबन्धित कुल 52 में से 36 मामलों का निबटारा अब झारखंड राज्य के राँची स्थित उच्च न्यायालय में हो सकेगा। एक अनुमान के अनुसार 950 करोड़ रुपये के घोटाले में से 720 करोड़ रुपये के मुकदमें, जिनकी सुनवाई अब राँची में होगी, भ्रष्टाचार से जुड़े हैं और जिनमें

जनता के धन का बड़े पैमाने पर गबन किया गया अथवा लूटा गया। इसमें बिहार के दो पूर्व मुख्य मंत्रियों सहित उच्च पदों पर मौजूद लोग शामिल हैं।

अदालत के इस फैसले से लालू प्रसाद को झटका इस मायने में लगा है कि सीबीआई द्वारा दाखिल छह चार्ज शीटों में से पाँच मुकदमों की राँची में सुनवाई के चलते उन्हें महीने में लगभग 15-20 दिन अब राँची का चक्कर लगाना होगा जिसके परिणाम स्वरूप पर्दे के पीछे से अपनी पत्नी राबड़ी सरकार को चला पाना मुश्किल होगा तथा प्रशासनिक मशीनरी का धड़ल्ले से न तो वे दुरुपयोग कर पाएंगे और ना ही चारा कांड के गवाहों को प्रभावित करेंगे। इस प्रकार उनकी हरकतों पर खुद-ब-खुद लगाम लग जाएगी।

न्यायालय का यह फैसला शहर में जंगल के आग की तरह फैला हालाँकि राबड़ी सरकार पर कोई असर पड़ने वाला नहीं है क्योंकि उसके विधायक तथा सहयोगी कांग्रेस के विधायक सरकार के साथ हैं। फिर भी फैसले के पश्चात मुख्यमंत्री राबड़ी की आँखे छलछला गयीं।

जो हो इतना तो तय है कि लालू प्रसाद इन मुकदमों में काफी उलझ जाएंगे।

अदालत ने सी०बी०आई० को महालेखाकार कार्यालय की भूमिका को भी जाँच के दायरे में शामिल करने का निर्देश दिया है।

प्रफुल्ल महंत को दूसरी शादी की सजा

संघमित्र ने किया इस करतूत का खुलासा

पिछले दिनों असम के पूर्व मुख्यमंत्री **प्रफुल्ल कुमार महंत** अपनी चोरी से की गई शादी को लेकर संचार माध्यमों में छाए रहे। असम विधान सभा की एक कनिष्ठ कर्मचारी और शास्त्रीय गायिका **संघमित्र भराली** नामक एक खूबसूरत औरत ने जब सार्वजनिक रूप से श्री महंत की इस करतूत का खुलासा किया तो उन्हें न केवल अगप के अध्यक्ष पद को छोड़ना पड़ा बल्कि उनका सार्वजनिक जीवन भी घृणा से भर उठा क्योंकि दोनों की ही यह शादी दूसरी है, इसलिए कानूनन यह अवैध ही नहीं दंडनीय भी है।

कहा जाता है कि संघमित्र भराली की पहली शादी एक पशु चिकित्सक से हुई थी, पुनः पिछले 11 मार्च को मुंबई में असम के मुख्यमंत्री रहे 49 वर्षीय प्रौढ़ तथा तीन बच्चों के पिताश्री प्रफुल्ल कुमार महंत के साथ संघमित्र ने दूसरी शादी रचाई। सार्वजनिक, जीवन जीनेवाले राजनेताओं के साथ हॉलाकि यह कोई नवीन बात नहीं है पर दूसरी औरत का प्रकोप प्रायः बना ही रहता है। फिर भी इन दूसरी औरतों में संघमित्र जैसी औरतों की हिम्मत की दाद देनी पड़ती है जिसने इस बात का खुलासा किया। कहा तो यहाँ तक जाता है कि उसने महंत से 50 लाख रुपये की मांग की थी अपना मुँह बन्द रखने के लिए या इस अवैध शादी को गोपनीय रखने की कीमत के रूप में। महंत जब इस पर राजी नहीं हुए तो संघमित्र ने विपक्ष के एक कांग्रेसी मंत्री से 15 लाख रुपये लेकर अपने इस विवाहेतर सम्बन्ध को सार्वजनकि किया तथा महंत से बदला लिया। संघमित्र ने महंत को भले ही ब्लैकमेल किया हो परन्तु आमजन की सहानुभूति उसे नहीं मिल सकती क्योंकि उसने भी दूसरी शादी की। देह की जरूरतों से तड़फड़ाता यह मर्दवादी समाज कुन्द, नासमझ और बौराया हुआ है जिसे स्वीकारने के लिए इस देश के हर राज्य में अनेकों इस तरह के उदाहरण भरे पड़े हैं।

देश को मजबूर नहीं मजबूत सरकार चाहिए

– वी॰पी॰ सिंह

विश्व व्यापार संगठन की शर्तों को मानकर सरकार ने देश के किसानों को बर्बादी के कगार पर खड़ा कर दिया है। इसके लिए पूर्व की कांग्रेस सरकार भी उतना ही दोषी है, जितना की वर्तमान भाजपा नीत सरकार। भाजपा नेताओं के यह कहने पर कि वे मजबूर हैं काम नहीं चलेगा क्योंकि देश को मजबूर नहीं मजबूत सरकार चाहिए। ये विचार हैं पूर्व प्रधान मंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के, जिसे उन्होंने म॰ प्र॰ किसान संघर्ष समिति द्वारा आयोजित एक सभा में व्यक्त किए। उन्होंने पुनः कहा कि वर्तमान केन्द्रीय सरकार अपने कृत्यों से किसी भी स्तर पर यह साबित नहीं कर सकी कि वह एक मजबूत सरकार है। जनतंत्र पाँच साल का मेला नहीं है कि सरकार की गलत नीतियों और अत्याचार के खिलाफ पाँच वर्ष पूरे होने का इंतजार किया जाए।

राजनैतिक दल मतदाता को वोट हासिल करने के बाद गन्ने के छिल्के की तरह फेंक देते हैं और बाद में उसे जलाते रहते हैं। इसलिए आज जन आन्दोलन की जरूरत है, श्री सिंह ने कहा। उ॰प्र॰ में 600 रु॰ प्रति हार्स पावर बिजली है और म॰प्र॰ सरकार 2100 रु॰ प्रति हार्स पावर करने जा रही है। सरकार को बताना चाहिए कि इतना अधिक अन्तर क्यों है। भाजपा के स्वदेशी पर कटाक्ष करते हुए उन्होंने कहा कि उनका स्वदेशी का नारा दोहरा चरित्र है। आयोजित सभा को प्रो॰ मधु दंडवते, सांसद एस॰ पी॰ सिंह वघेल, अधिकार यात्रा के संयोजक डॉ॰ सुनीलम, पूर्व सांसद पुरुषोत्तम कौशिक तथा विचारक सुरेन्द्र मोहन ने भी सम्बोधित किया।

विचार संवाददाता, भोपाल से

With best compliments from:

(M-L)

MAHESH HOMOEOPATHIC LABROATORY

&

GERMAN HOMOEO STORES

Saket Plaza, Jamal Road, Patna- 800001

✆ :238292,230641 (o'), 674041 (R), Fax: 0612-230641

Dr. Mahesh Prasad
D.M.S (patna)
SPECIALIST IN CHRONIC DISEASE

Dr. Arun Kumar
D.H.M.S(Patna)

जब-जब समाज में अनाचार बढ़ा है, जनता ने विद्रोह का बिगुल फूँका है

मुजफ्फरपुर में उमड़ा जनाक्रोश इसका साक्षी

विचार कार्यालय, पटना

बिहार के मुजफ्फरपुर में पिछले 26 सितम्बर को वहाँ के एक बैंककर्मी रतन कुमार के अपहृत 4 वर्षीय पुत्र गौतम के क्षत-विक्षत शव की बरामदगी के बाद जो कुछ हुआ उससे न केवल लोकतन्त्र में एक और काला अध्याय जुड़ा बल्कि पुलिस व प्रशासन की अकर्मण्यता की एक और मिसाल सामने आई क्योंकि लापता पुत्र का जब शव मिला तब उसके माता-पिता तो उसे पहचान गए परन्तु पुलिस ने यह कहकर अपनी अकर्मण्यता छिपाने का प्रयास किया कि बरामद शव अपहृत बालक का है ही नहीं। बस क्या था, पुलिस की इस गलतबयानी ने आग में घी का काम किया और वहाँ की जनता सड़कों पर उतर आई। शहर में भड़की हिंसा और पुलिस फाइरिंग में करीब 10 लोगों की जानें गई और दर्जनों घायल हुए।

दरअसल निरंकुश व्यवस्था के विरूद्ध यह आग वर्षों से निरीह जनता के सीने में धधक रही थी और जब सहनशक्ति के पार हो गयी तो वह दावानल बनकर सड़कों पर फूट पड़ी। वैसे तो बिहार में नरसंहार, अपहरण, हत्याएं और बलात्कार की घटनाएं अब सामान्य होकर रह गयी हैं। आखिर इसीलिए तो अखबार में छपी इनकी खबरों को लोग अनदेखा कर जाते हैं किन्तु इस दिशा में शांति व्यवस्था के कर्णधारों तथा सत्ता पर बैठे हुकमरानों को समय रहते चेत जाना चाहिए। अन्यथा पानी जब सिर से ऊपर हो गया तो स्थिति विस्फोटक हो जाएगी।

लोकतंत्र में निश्चय ही किसी को भी कानून अपने हाथ में लेने की इजाजत हमारा संविधान नहीं देता है लेकिन इतिहास साक्षी है कि जब-जब समाज में अनाचार-अत्याचार बढ़ा है, व्यवस्था पंगू हुई है तो जनता ने किसी न किसी रूप में विद्रोह का बिगुल फूँका है। मुजफ्फरपुर में उमड़ा जनाक्रोश इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। शांति व्यवस्था के कर्णधारों तथा सत्ता की कुर्सी पर विराजमान राजनेताओं को यह बात अपने दिमाग से निकाल देनी चाहिए कि जनता बहुत दिनों तक जुल्म सहती रहेगी।

अपहरण व पुलिस बर्बरता के खिलाफ बिहार बंद

मुजफ्फरपुर में एक बच्चे के अपहरण के बाद मिली लाश को लेकर जो जनाक्रोश उमड़ा और पुलिस की बर्बरता के चलते लगभग एक दर्जन निर्दोष लोगों की जो जानें गई उसके खिलाफ राजग के आह्वान पर 5 अक्टूबर को बिहार बन्द हुआ जिसका असर आम जनजीवन पर पड़ा। बन्द के दौरान राजग के विभिन्न घटक दलों के हजारों नेताओं व कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया गया तथा सन्ध्या 5 बजे सभी को रिहा कर दिया गया।

लादेन ऐसा निकलेगा उस युवती को क्या पता था

जिस दिन 14 वर्षीय युवक के बगल में खड़ी होकर लंदन में स्पेन युवती ने तस्वीर खिंचाई थी उसे क्या पता था कि एक दिन पूरी दुनिया के लोगों की जिह्वा पर लादेन का ही नाम होगा और उसे पकड़ने और मारने की फिराक में करोड़ों डॉलर का ईनाम रखा जाएगा जिसने हजारों मानव बम का आदर्श मानकर समूची दुनिया का दिल दहला दिया है। फिलहाल उस घटना के लगभग तीस वर्ष बाद अपनी याद को ताजा करते हुए उस युवती ने फोटोग्राफ मीडिया को दिए जो उसने 1971 में खिंचवाए थे। इस फोटोग्राफ में लादेन दायीं तरफ खड़ा है और उसके साथ उसके दो भाई तथा स्पेन की दो युवतियां हैं। बिन लादेन उन दिनों अपने दोनों भाइयों के साथ आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में 'लैंग्वेज' की पढ़ाई के लिए आया था।

उस युवती के अनुसार, उन दिनों लादेन को रॉक म्यूजिक नागवार लगती थी और लंदन के फैशन में भी उसकी कोई रुचि नहीं थी। इतना ही नहीं 1970 में लंदन की आबो-हवा यानी वहां का चकाचौंध वाला दृश्य भी उसे अच्छा नहीं लगता था। यहां तक कि उसने स्पेन की इस युवती को बताया था कि जो लोग लंदन घुमने आते हैं, वे सनकी और पागल होते हैं। युवती ने बताया कि यह फोटोग्राफ आक्सफोर्ड के पार्क में शाम को चाय पीने के बाद लिया गया था। उस समय हम लोग टहलने के लिए निकले थे।

लादेन अपने भाई के साथ टहलने आया था और टोली के सभी सदस्यों में सबसे कम उम्र का था। उसके अतिरिक्त कुछ अन्य तस्वीरें भी लादेन की हैं जो अभी किसी अखबार आदि में नहीं छपी हैं। एक चित्र में लादेन पिकनिक के दौरान नाव चला रहा है।

उड़ीसा में जब मुख्यमंत्री का 'स्वागत' आम की गुठलियों से हुआ

प्रस्तुतिः सुनीता रंजन

उड़ीसा के रायगढ़ जिले के काशीपुर प्रखण्ड में भूख से मरनेवाले आदिवासियों की घटना के बाद जब वहाँ के मुख्यमंत्री हालात का जायजा लेने पहुँचे तो वहाँ के लोगों ने न केवल उनकी कार पर आम की गुठलियाँ फेंककर अपना जबर्दस्त आक्रोश जताया बल्कि उनपर कीचड़ भी फेंके। भुवनेश्वर स्थित विचार संवाददाता से प्राप्त समाचार के अनुसार मुख्यमंत्री नवीन पटनायक जब पनासगुडा और बिलामाला गांवों से गुजर रहे थे तो तिकरी के पास ग्रामीणों ने मुख्यमंत्री पर दबाव डाला कि वे उस गांव में चलकर उनकी हालत देखें जहाँ आम की गुठलियों के आँटे खाने से 11 भूखे आदिवासियों की मौत हुई थी।

दरअसल आदिवासियों के आक्रोश की वजह यह थी कि उड़ीसा सरकार कहती रही थी कि आम की गुठलियों के आँटे में पर्याप्त पोषक तत्व हैं और यह काफी स्वास्थ्य वर्द्धक भी है। किन्तु पिछले दिनों काशीपुर में जो मौतें हुई उसका कारण इसी आँटे को बताया गया है। जबकि उड़ीसा सरकार का कहना है कि ये मौतें भूख से नहीं बल्कि बीमारियों से हुई हैं। इस प्रकार सरकार शुरू से ही भूख से हुई मौतों को झुठला रही है। प्राप्त जानकारी के अनुसार इस प्रखण्ड में 27 जुलाई से 28 अगस्त तक 20 मौतें हो चुकी हैं। सच तो यह है कि गरीबों को किसी तरह की राहत देने के बजाय सरकार सच पर पर्दा डालने का ही प्रयास करती रही है।

वैसे सच कहा जाए तो इस तरह की संवेदनहीनता सिर्फ उड़ीसा सरकार ही नहीं बल्कि जिस किसी प्रदेश में भूख से कोई मौत हुई वहाँ की सरकार लीपा-पोती में जुटी नजर आई। एक ओर भारतीय खाद्य निगम के गोदामों में न केवल गेंहूँ सड़ रहे हैं बल्कि उन्हें चूहे भी भारी क्षति पहुँचा रहे हैं, दूसरी तरफ देश के कई भागों में लोग भूख से मर रहे हैं। इसे विडम्बना नहीं तो और क्या कहा जाएगा? ऐसा लगता है कि सरकार की आँखों का पानी ही मर गया है।

पीयूसीएल की एक जनहित याचिका पर सुनवायी करते हुए उच्चत्तम न्यायालय ने कई बार सरकार को फटकार लगाई है कि गोदामों के भरे होने के बावजूद भूख से लोग क्यों मर रहे हैं? सर्वोच्च न्यायालय ने भी भुखमरी से होनेवाली मौतों पर चिंता व्यक्त की है और 16 राज्य सरकारों को यह निर्देश दिया है कि वे इस माह के तीसरे सप्ताह तक यह बताएं कि उनके यहाँ गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोगों की संख्या कितनी है? कोई आश्चर्य नहीं कि नौकरशाही द्वारा जानबूझकर झूठे आंकड़े प्रस्तुत किए जाएं क्योंकि भुखमरी के सन्दर्भ में जो झूठ बोला जा रहा है और जानबूझकर वास्तविकता को छिपाया जा रहा है वह एक गंभीर चिंता का विषय है।

उड़ीसा के अतिरिक्त छतीसगढ़, राजस्थान आदि में भी भुखमरी की समस्या व्याप्त है। आश्चर्य तो तब होता है जब महाराष्ट्र जैसे धनी राज्य में भी 1990 के दशक में गरीब राज्यों की तुलना में भूख से मरनेवालों की संख्या अधिक थी। वहाँ के मेलघाट, मोखाडा, धूले, नन्दरवार आदि क्षेत्रों में भूख से अत्यधिक मौतें हुई थीं। इसी प्रकार 1997 से लेकर 2000 के अन्त तक

आन्ध्रप्रदेश के अकेले अनन्तपुर जिले में 1086 लोगों, जिसमें मुख्यतः किसान थे आत्महत्या की थी। वारंगल, कुरनूल तथा विशाखापटनम के अतिरिक्त पंजाब जैसे धनी राज्य में भी किसानों द्वारा आत्महत्या की रपट आई है। भूख से हुई मौत के समाचार मिले हैं।

जो हो, उड़ीसा के मुख्य मंत्री का काशीपुर में जिस प्रकार का स्वागत हुआ और क्षेत्रीय विधायक की वहाँ के लोगों ने जो दुर्गति की, उससे यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि लोगों का धैर्य अब समाप्त हो रहा है और राजसत्ता के प्रति उनकी नाराजगी बढ़ती जा रही है। काशीपुर रामगढ़ा जहाँ इन दिनों भूख से आदिवासियों के मारे जाने की खबरें आ रही हैं कालाहाड़ी से लगा हुआ है। गर्मी में भयंकर सूखा और अकाल के बाद पिछले दो महीनों में हुई अतिवृष्टि और अंधड़-ओलों के कारण प्रायः दूसरा-तीसरा किसान पीड़ित है।

कहना नहीं होगा कि एक तरफ सत्ता का सुख भोगने वाले भ्रष्ट नेताओं की जमात है तो दूसरी तरफ भूख से बिलबिला रहे लोगों का आर्तनाद है। देश के इन सुविधाभोगी राजनेताओं व नौकरशाहों को यह बात स्पष्ट रूप से समझ लेना होगा कि भुखमरी की समस्या का कोई ठोस निदान नहीं निकाला गया तो उन्हें जनाक्रोश का सामना करना पड़ेगा और यह जनाक्रोश बहुत बड़ी समस्या उत्पन्न कर सकता है। आम जनता के हृदय में आक्रोश का जो ज्वालामुखी उबल रहा है उसकी अनदेखी करने के बहुत गंभीर परिणाम हो सकते हैं। आक्रोश के इन ज्वालामुखी को मात्र कोरे वायदों व खोखले आश्वासनों से अधिक दिनों तक शांत नहीं किया जा सकता। आखिरकार जो लोग राजनीतिक नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं उन्हें जनता की इन समस्याओं के प्रति संवेदनशील होना होगा और उनका समाधान खोजना होगा।

किसानों का हक़ छीनने की साजिश

❑ दीपक जोशी

जैव प्रौद्योगिकी में चल रही क्रांति से प्रेरित होकर कृषि वैज्ञानिकों ने ऐसी तकनीक विकसित की है जिससे कंपनियां ऐसे आनुवंशिक परिवर्तन वाले बीज पैदा कर सकती हैं कि पूरी तरह विकसित होने के बाद अंकुरित न हों। इसका परिणाम यह होगा कि जो किसान इन बीजों का प्रयोग करेंगे उन्हें हर नयी फसल बोते समय बीज फिर से खरीदने पड़ेंगे। इस प्रकार बीज कंपनियों के लिए सोने की एक खान खुल जाएगी। प्रौद्योगिकी सुरक्षा प्रणाली(टीपीएस) नाम की इस तकनीक को डेल्टा एवं पाइन लैंड (डीपीएल) बीज कंपनी और संयुक्त राज्य के कृषि विभाग (उसेडा) ने मार्च 1998 में संयुक्त रूप से पेटेंट करवाया था। आशा है कि इस तकनीक वाले बीजों का व्यवसायीकरण 2005 तक हो जाएगा। बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने तो इस खोज का स्वागत किया है। लेकिन अनेक विकासशील देशों के किसान टीपीएस के विरूद्ध अभियान चलाते रहे हैं कि यह तकनीक उनके लिए हानिकारक हो सकती है। वर्तमान में कपास कनोला जैसी कुछ संकर फसलों को छोड़कर किसान गेहूं तथा धान जैसी फसलों के लिए सामान्यत: बीज नहीं खरीदते हैं। विकासशील देशों के किसान बीजों को बचाना तथा उनका विनिमय करना अपना अधिकार समझते हैं। यह विधि इनके द्वारा सदियों से अपनाई जा रही है। भारत के दस करोड़ किसानों में से 90 प्रतिशत अपने बचाये गये बीजों पर निर्भर हैं। इसलिए भारतीय किसान भी इस नयी तकनीकी के बीजों के भारत में बिक्री का विरोध कर रहे हैं।

टीपीएस का विरोध अन्य विकासशील देशों में भी जोर पकड़ता जा रहा है जहां बीजों को बचाने का रिवाज सदियों से चला आ रहा है। खाद्य एवं कृषि संगठन द्वारा 1998 में आयोजित एक सम्मेलन में 20 अफ्रीकी देशों के प्रतिनिधियों ने एक वक्तव्य में कहा था कि नयी तकनीक खाद्य सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न करती है और यह तकनीक जैव विविधता, स्थानीय ज्ञान व अफ्रीका के किसानों की स्थायी कृषि प्रणाली को नष्ट कर देगी। टीपीएस के समर्थन में बीज कंपनियां यह तर्क देती हैं कि आनुवांशिक रूप से सुधरे हुए उच्च उत्पादी बीज की एक किस्म का विकास करने में उनकी 3 से 10 डालर तक की लागत आती है। इसलिए उन्हें अपने निवेश पर कुछ लाभ कमाने का तो अधिकार होना चाहिए। लेकिन इन कंपनियों का यह तर्क सही नहीं है क्योंकि बीज कंपनियों द्वारा खर्च की गयी राशि इस तरह के बीजों की बिक्री की अपेक्षा उन बीजों द्वारा आसानी से वसूल की जा सकती है जो गुणवत्ता तथा उचित दाम के लिए प्रसिद्ध है। टीपीएस बीजों के विरोध में सबसे जोरदार तर्क यह दिया जा रहा है कि इनसे विश्व के अनेक भागों के किसानों द्वारा अगर अपने पारंपरिक बीजों का परित्याग किया जाता है तो यह जैव विविधता को खत्म कर सकता है। इस बीज का एक अन्य खतरा यह है कि यदि इसके पराग आसपास के खेतों के पौधों में गिर जाए तो टीपीएस की विशिष्टता अन्य फसलों में भी फैल सकती है। इससे यह होगा की जो किसान सामान्य बीजों का प्रयोग करेंगे उन्हें भी इस बीज की वजह से अनुर्वर बीज मिलेंगे।

लेकिन सवाल यह है कि नई किस्में विकसित करने के लिए पहल कौन करेगा। विश्वभर में जैव प्रौद्योगिकी के लिए सरकारी खर्च न्यूनतम रहा है। निजी कंपनियां इस क्षेत्र में शोध तथा विकास के लिए लाखों डालर निवेश करती हैं लेकिन लाभ सुनिश्चित करने के लिए टीपीएस जैसी तकनीक को साधन मानती है। गत कुछ वर्षें में मान्सांटो विश्व की सबसे बड़ी बीज कंपनी हो गयी है अत: वह विश्व भर में टीपीएस प्रौद्योगिकी का सीधा प्रयोग करने की स्थिति में है। यह देखते हुए कि यह प्रौद्योगिकी सोने की खान साबित हो सकती है, कई अन्य बीज कंपनियां भी इस क्षेत्र में उतर आयी है। यूरोप तथा अमेरीका की 12 कंपनियों ने मुनाफा कमाने के उद्देश्य से नयी इंजनियरिंग तकनीकों का लाभ उठाने के लिए 29 पेटेंट प्राप्त कर लिए हैं। हालांकि कृषि जैव प्रौद्योगिकी का विरोध सभी विकासशील देश नहीं कर रहे हैं। उदाहरणत: चीन तथा अर्जेंटाइना के किसान आनुवांशिक रूप से सुधरे बीजों का प्रयोग कर रहे हैं। चीन के किसान कपास के संकर बीजों की खेती करने में सफल रहे हैं और हर वर्ष उन्हें कंपनियों से खरीदते हैं। टीपीएस बीजों के प्रवर्तकों का तर्क है कि इन बीजों को किसानों पर नहीं थोपा जाएगा। यदि वे नहीं चाहते तो अन्य प्रकार के बीजों का प्रयोग करते रह सकते हैं। लेकिन जो लोग इन बहुराष्ट्रीय कंपनियों की ताकत से वाकिफ हैं वे जानते हैं कि यह कंपनियां अपनी बात को इस ढंग से तथा उन मंचों से कहेंगी कि न चाहते हुए भी इनकी बात माननी पड़ेगी।

मे० पटना मेडिकल रिहैब्लिटेशन क्लिनिक

मखनियाँ कुआँ रोड पटना-4

फोन: 660181 Ext. 35

डॉ० परमानन्द प्र० सिंह

फिजियो-अकुपेशनल थेरापिस्ट

मे० सिन्हा फिजियो थेरापी क्लिनिक

बोरिंग केनाल रोड, पटना

लक्ष्मी नर्सिंग होम परिसर

फोन:262094, 261539

आधुनिक मशीन के द्वारा लकवा,पोलियो में हड्डी-नस रोग का इलाज होता है।

धरती की माटी

❑ कृष्ण कुमार राय

ऐ धरती की माटी, तेरी महिमा अपरंपार है। सूक्ष्म से सूक्ष्मतम होकर भी तू विराट है। तू सृजक है और तू ही विध्वंसक भी। तू आदि है तो अन्त भी तू ही है। नद-पर्वत, निर्झर और सागर सब तेरे ही आँचल में समाये हैं। तेरी ही गोद में लोट-पोट कर मानव का विकास होता है। तू ही चर-चराचर की शरण-स्थली और धरती के समस्त जीवों का उद्‌गम-स्थल है। तेरे ही अंक में तरुवर फूलते-फलते हैं। तेरे गर्भ से उगा नन्हा सा विटप भी एक दिन विशाल वृक्ष का रूप धारण कर लेता है। तेरे भानुमती के पिटारे में असंख्य आश्चर्यों और अमूल्य खनिज सम्पदा का अक्षय भण्डार भरा पड़ा है।

तू सम्पूर्ण जगत की जननी है। सेठ-साहूकरों की उच्च-अट्टालिका तू ही है और दीन-दुखियों तथा मेहनतकशों की झुग्गी-झोपड़ी भी। हिमगिरि के उत्तुंग शिखर से लेकर अतल-सागर की गहराइयों तक तेरा ही अखण्ड साम्राज्य फैला हुआ है। शून्य गगन में बिखरे असंख्य रजकणों के रूप में तू ही प्राची की मंगलमयी उषा है जो नित्य नव-जीवन का नूतन सन्देश लेकर भूमण्डल पर आती है। तू ही परिश्रमी क्षितिज को नित रक्त-स्नान कराने वाली डूबती साँझ की रक्तिम आभा भी है। वैज्ञानिक मान्यता के अनुसार आकाश में बिखरे असंख्य रजकणों पर उगते और डूबते सूर्य की किरणें पड़ने से ही सूर्योदय के पूर्व तथा सूर्यास्त के पश्चात् भी पूर्वी तथा पश्चिमी क्षितिज के ऊपर कुछ समय तक रक्तिम आभा दिखलायी पड़ती है।

तू ही अन्नदाता और जग का पोषक है। तू ही समग्र सुषमा-सौन्दर्य का अगम आगार है। फिर भी तेरी अपार महिमा और महत्ता को बिसरा कर जग तेरा तिरस्कार करता है। तुझे तुच्छ और हेय मानकर पैरों तले रौंदता और अपमानित करता है। अरे, अपने इन पूतों को तू स्मरण क्यों नहीं कराती कि एक दिन मिटकर उन्हें फिर तेरे ही गर्भ में समाना है। अन्त में सर्वस्व तुझमें ही समाहित हो जाना है। त्याज्य और तिरस्कृतों को भी हँसते-हँसते आत्मसात करने की विलक्षण क्षमता और सहृदयता केवल तुझमें ही विद्यमान है।

तेरा वास्तविक मीत तो सारी जगती की क्षुधाग्नि शान्त करनेवाला निर्धन-निर्वस्त्र किन्तु उद्यमी और विनम्र अकिंचन कृषक समाज है जो तेरे ही अंक में क्रीड़ा करता हुआ जीता और मरता है। तू भी असीम यातनाएं झेलकर अपने विशाल वक्ष को हल के फलकों से चिरवाकर, गर्भ से उद्‌भूत अन्न-भण्डार से अपने चिर सहचर की खत्तियाँ भरकर उसके अगाध प्रेम का बदला चुकाती है। इस अनुपम प्रेमोपहार को पाकर कितना पुलकित हो उठता है तेरा बन्धु। उसका रोम-रोम हर्षित होकर तेरे प्रति आभार प्रकट करता है।

लेकिन यह तो बतला कि उस समय तू क्यों अपनी आँखें मूँद लेती है जब तेरे मीत के गाढ़े परिश्रम की कमायी समाज का शोषण करनेवाला बिचौलिया कौड़ियों के मोल क्रय करके अपने विशाल भण्डार-गृहों में भर लेता है और फिर कृत्रिम अभाव की स्थिति उत्पन्न कर धीरे-धीरे संचित अन्न का जखीरा चोर-बाजार में पहुँचाकर मनमाना काला धन बटोरता है। फिर भी स्तुत्य है तेरे प्रिय मीत की उदारता और सहनशीलता जो सारे जग का पेट तो भर देता है किन्तु स्वयं भूखा और नंगा रहकर, माथे पर बल लाये बिना सदा अत्याचार और उत्पीड़न का शिकार बना रहता है। लूट-खसोट का यह तमाशा वह मुस्कराता हुआ देखा करता है। प्रशस्य है उसकी सहिष्णुता, वंद्य है उसकी विनम्रता और प्रणम्य है उसकी महानता। सर्वस्व लुट जाने पर भी वह जुझारू जीवटधारी इन्सान हार नहीं मानता और पसीने से लथपथ होकर फिर हल-बैल के साथ, नयी उमंग और नये उत्साह से ओत-प्रात, नूतन उपहार प्राप्त करने की महती महत्वाकांक्षा मन में समेटे, वह तेरे साथ जूझने लगता है।

संपर्क: एस० 2/5/-ए, अर्दली बाजार, (अधिकारी हॉस्टल के समीप), वाराणसी (उ०प्र०) 221002

निर्वाचित राजनीतिज्ञों के लिए कम्प्यूटर साक्षरता कार्यक्रम
ग्रामीण क्षेत्रों में भी आईटी रूझान

आगामी 2 दिस्मबर से नीट (NIIT) कम्पनी द्वारा कम्प्यूटर साक्षरता कार्यक्रम शुरू हो रहा है जिसमें देश के आठ हजार निर्वाचित राजनीतिज्ञों में मुख्यमंत्रियों से लेकर सांसद व विधायक भी शामिल होंगे। इस आशय की सूचना **सूचना प्राद्यौगिकी** मंत्री **प्रमोद महाजन** ने दी। उन्होंने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि अब ग्रामीण क्षेत्रों में भी सूचना प्रद्यौगिकी के प्रति रूझान बढ़ रहा है। **लालू प्रसाद** जो कभी कहते थे **क्या होता है आईटी वाईटी, क्या कम्प्यूटर दूध देगा,** अब पटना में अन्तर्राष्ट्रीय सूचना प्रद्यौगिकी का सेमिनार कर रहे है।

अब इसमें कतई शक नहीं कि कम्प्यूटर के गंभीर विकासात्मक और आर्थिक आयाम भी है। किन्तु भारत में कम्प्यूटर साक्षरता अभी मात्र एक प्रतिशत है। इसे तेजी से बढ़ाने के लिए सूचना प्राद्यौगिकी मंत्रालय भी जनता के लिए आई०टी० कार्यक्रम शुरू करने की योजना तैयार कर रहा है। नेताओं को कम्प्यूटर शिक्षा देने के अतिरिक्त देश के 3000 सरकारी स्कूलों के 10वीं, 11वीं और 12वीं कक्षा के सर्वोच्च अंक पाने वाले विद्यार्थियों को भी नीट नि:शुल्क कम्प्यूटर शिक्षा देगी। साथ ही देश के विभिन्न क्षेत्रों के मलिन बस्तियों में 15000 बच्चों को कम्प्यूटर शिक्षा प्रदान की जाएगी। यह जानकारी **नीट** के अध्यक्ष **राजेन्द्र पवार** से मिली।

शशि भूषण, दिल्ली से

बेरोजगारी भत्ते में बढ़ोत्तरी

दूसरे श्रम आयोग के सामाजिक सुरक्षा संबंधी अध्ययन समूह ने देश के सभी बेरोजगारों को 200 रु० प्रति माह भत्ता देने की शिफारिश की है। शिक्षित बेरोजगारों को 300 रु० से 400 रु० के बीच तथा वृद्धावस्था पेंशन 75रु० से बढ़ाकर 200 रु० करने की सिफारिश की गई है। देश में बढ़ती जमात को बेरोजगारी भत्ता देना अस्थाई हल तो हो सकता है पर समस्या का समाधान नहीं। बेरोजगारी भत्ते का नकारात्मक पहलू यह है कि इससे बिना काम किए पैसा लेना उनकी आदत बन जाएगी। वैसे यह व्यय अनुत्पादक भी होगी। इससे तो बेहतर यह होगा कि रोजगार का सृजन किया जाए और बेरोजगारों से काम लेकर पैसा दिया जाय। इससे उनका आत्मसम्मान बढ़ेगा और देश का विकास होगा।

अनुज कुमार, दिल्ली से

विमान दुर्घटना में माधव राव सिंधिया की मौत कांग्रेस की एक और मजबूत आवाज खामोश हो गई

विचार कार्यालय, दिल्ली

विगत 30 सितम्बर को दिल्ली से कानपुर जा रहे एक विमान के मैनपुरी के पास दुर्घटनाग्रस्त हो जाने के कारण वरिष्ठ कांग्रेस नेता माधव राव सिंधिया का निधन हो गया। ग्वालियर के शाही

परिवार में 10 मार्च 1945 को जन्में स्व० सिंधिया पहली बार महज 26 वर्ष की उम्र में जनसंघ समर्पित स्वतंत्र उम्मीदवार के तौर पर 1971 में पाँचवीं लोकसभा के सदस्य चुने गए। फिर लगातार तेरहवीं लोकसभा तक कुल नौ बार निर्वाचित होते रहे। एक बार 1984 में ग्वालियर संसदीय निर्वाचन क्षेत्र से उन्होंने अटल जी जैसे दिग्गज नेता को भी दो लाख से अधिक मतों से पराजित किया था। इस बीच वे केन्द्रीय नागरिक उड्डयन एवं पर्यटन मंत्री से लेकर मानव संसाधन विकास तथा रेल मंत्री भी रहे।

कांग्रेस के इस करिश्माई नेता को समाज कल्याण में खासी रूचि रही। वह देश के उन चन्द नेताओं में से रहे, जिन्होंने शिक्षा, वन्य जीवन संरक्षण और खेलकूद को प्रोत्साहन देने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। निधन के पूर्व तक वे लोकसभा में कांग्रेस के संसदीय दल के उपनेता थे किन्तु सोनिया को अनुभव की कमी की वजह से व्यावहारिक तौर पर वे नेता का ही काम कर रहे थे।

इधर पिछले डेढ़-दो वर्षों में कांग्रेस के जितेन्द्र प्रसाद, राजेश पायलट तथा माधवराव सिंधिया जैसे प्रखर नेताओं के देहावसान से कांग्रेस पार्टी को न केवल राजनीतिक रूप से अपूरणीय क्षति पहुँची है बल्कि कांग्रेस के लिए स्थिति दुर्भाग्यपूर्ण है। देश की जनता सिंधिया को भावी प्रधानमंत्री के रूप में देख रही थी।

खेलों के विकास में सिंधिया की खास दिलचस्पी थी। जबर्दस्त खेल प्रेमी सिंधिया खुद भी क्रिकेट, ब्रिज तथा गोल्फ के अच्छे खिलाड़ी थे। 1990-91 से 1992-93 तक उन्होंने क्रिकेट कन्ट्रोल बोर्ड के अध्यक्ष पद को सम्भाला और उनके नेतृत्व में क्रिकेट प्रशासन नयी उँचाइयों को छुआ। उनके निधन से देश के खेल विशेषकर क्रिकेट जगत ने एक शुभचिंतक खो दिया।

इस विमान दुर्घटना में सिंधिया के अतिरिक्त **आजतक** के विशेष संवाददाता रंजन झा, कैमरा मैन गोपाल बिष्ट, हिन्दुस्तान टाइम्स की अंजू शर्मा, इन्डियन एक्सप्रेस के विशेष संवाददाता संजीव सिन्हा तथा सिंधिया के निजी सचिव रूपिन्दर सिंह सहित पायलट विवेक गुप्ता एवं महिला सह चालक रितु मलिक की भी मौत हो गयी। ये चारों पत्रकार अपने पेशे के प्रति पूरी तरह समर्पित थे।

माधवराव सिंधिया के व्यक्तित्व में आधुनिकता और परम्परा का अदभुत समन्वय था। ब्रिटेन के विंचेस्टर कॉलेज में पढ़े तथा ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से एम० ए० माधवराव सिंधिया में नेतृत्व करने तथा प्रशासनिक क्षमता भी थी। उनके निधन से युवा पीढ़ी ने न केवल एक नायक खोया है बल्कि देश ने एक ईमानदार, गंभीर, जुझारू तथा लोकप्रिय नेता खो दिया है। आज जब देश में राजनीतिज्ञों की पहचान सत्तालोलूप के रूप में हो गई है, स्व० सिंधिया राजनीति में नैतिकता के पक्षधर थे। वे विपरीत परिस्थितियों का सामना भी संयमपूर्वक करते थे। सिंधिया अपने पीछे अपनी पत्नी माधवी राव सिंधिया, पुत्र ज्योतिर्आदित्य, पुत्री चित्रांगदा के अतिरिक्त देश के हजारों-हजार शुभेच्छुओं को छोड़ गए हैं। **विचार दृष्टि** परिवार की ओर से उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि।

अनुज कुमार, दिल्ली से

के० विजय भास्कर रेड्डी: जो सदैव जमीन से जुड़े रहे

आन्ध्र प्रदेश के दो बार मुख्यमंत्री तथा केन्द्र में दो बार मंत्री रहे **कोटला विजय भास्कर रेड्डी** रायलसीमा का यह कद्दावर नेता अपने विचार दो टूक रखते थे तथा सदैव जमीन से जुड़े रहे। अंत तक अपनी जड़ों को वे कभी नहीं भूले। आं०प्र० के कुरनूल

जिले के लड्डागिरी गांव में 1920 में जन्में स्व०रेड्डी भ्रष्टाचार के आरोपों से सदा मुक्त रहकर भ्रष्टाचार पर हमेशा प्रहार किए।

क्रिकेट, फुटबाल और हॉकी के खेल में गहरी दिलचस्पी रखनेवाले स्व० रेड्डी अपने स्वास्थ्य के प्रति कभी सचेत नहीं रहे। धुम्रपान के वे इतने अभ्यस्त थे कि इन्दिरा की मौजूदगी में भी सिगरेट की कस लगाते रहते थे। उनके निधन से आन्ध्र प्रदेश के एक अब्बल हिमायती के साथ-साथ कांग्रेस का एक ईमानदार और निष्ठावान नेता अब नहीं रहा।

–नेहपाल सिंह वर्मा, हैदराबाद से

विजय कुमारः समदर्शी भावना से ओतप्रोत और उदारमना

❑ सिद्धेश्वर

किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व के तीन कारक तत्व होते हैं-शरीर, मन और आत्मा। विजय कुमार सिंह ने इन तीनों कारक तत्वों से अपने व्यक्तित्व को निखारा। अपने पिता से जहाँ इन्होंने अनुशासन, समदर्शिता की भावना तथा स्वाभिमान आदि गुण प्राप्त किए वहीं माँ से दया-करुणा के भाव । कहा जाता है कि जीवन को ऊर्ध्वगामी होना चाहिए तथा संघर्ष को सोपानधर्मा, तभी व्यक्ति की प्रखर चेतना से उसके प्रेरक व्यक्तित्व का विकास होता है। विजय जी का जीवन भी सदैव सोपानधर्मा रहा।

विजय जी घर-बाहर सबसे प्रेम किया। क्रोध करना तो उन्हें आया ही नहीं। दूसरे के सुख-दुःख को अपने ही सुख-दुःख जैसा उन्होंने अनुभूत किया। आखिर तभी तो इनके सामने से लौटकर कोई खाली हाथ नहीं गया। क्या राजनेता, क्या सामाजिक कार्यकर्ता, क्या दीन-हीन छात्र और क्या साहित्यकार-पत्रकार, सभी को इन्होंने मुक्त हस्त से कृतज्ञ किया।

पड़ोसी होने के नाते विजय जी से मेरी मुलाकात आए दिन हुआ करती थी, चाहे साग-सब्जी खरीदने के वास्ते सब्जी-हाट जाना हो या रोजमर्रा की चीजें खरीदने मीठापुर बाजार, बस पकड़ना हो या फिर ट्रेन, जाते-आते उनसे मुलाकात होनी ही थी। हमें अच्छी तरह याद है उसी मुलाकात के दरम्यान एक बार उन्होंने मुझे अखवार निकालने की सलाह दी थी अपने हर सम्भव सहयोग के आश्वासन के साथ, किन्तु मैंने अपनी लाचारी व्यक्त की। इसका अर्थ यह है कि वह **पत्रकारिता की भूमिका** को बखूबी समझते थे। नि:सन्देह वह व्यक्ति मानसिक एवं वैचारिक रूपसे सबल था।

1 सितम्बर, 1957 में जन्में विजय की सेवाओं से समाज को संजीवनी सुलभ होती थी। उदारता उनके रोम-रोम में बसी थी। **विवेक इन्टरप्राइजेज** के माध्यम से इन्होंने अपने व्यवसाय को गति प्रदान की तथा सम्यक भाव से गतिशील रहकर सफलता अर्जित करते रहे। कल्याण भावना तथा निरपेक्ष चेतना भी इनकी सफलता का रहस्य बना। मन और मृदुल वाणी की अपनी अनूठी कोमलता के कारण उनके प्रशंसकों एवं शुभेच्छुओं का एक बहुत बड़ा समुदाय बन गया।

आज विजय जी हमारे बीच नहीं हैं किन्तु चेतना स्वरूप प्रेरक पुंज-जो समाज के लिए एक उदाहरण थे, उनके व्यक्तित्व की आभा आज भी स्पष्ट दिखती है। जो सबको बहुत कुछ देता था उन्हें हम कुछ नहीं दे सकते पर सम्मान भाव-पुष्पों से हम पटना के विद्वत समाज की ओर से नमन तो कर ही सकते हैं। विचार दृष्टि परिवार की ओर से उनकी स्मृति को यह भाव सुमन।

पत्रिका के विभिन्न स्तम्भों में छपी सामग्रियों पर आपके विचारों का स्वागत है। आपके सुझाव हमारे लिए बहुत ही कीमत रखते हैं। पता-'पाठकीय पन्ना' विचार दृष्टि' 'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-800001

इसे संयोग कहें या दुर्योग

विचार कार्यालय, दिल्ली

माधव राव सिंधिया और 7 अन्य लोगों के साथ 30 सितंबर को कानपुर रवाना होते समय रंजन झा ने कहा था, **कोई दुर्घटना हो गई तो कोई यह तो नहीं कहेगा कि मैं खाली पेट था.** उनके मजकिया स्वाभाव से परिचित किसी व्यक्ति ने उनकी टिप्पणी को गंभीरता से नहीं लिया. यदि किसी ने लिया। होता तो भी इस समर्पित पत्रकार को काम पर जाने से नहीं रोक पाता। 1996 से

आजतक में विशेष संवाददाता **झा** को राजनैतिक मामलों की रिपोर्टिंग में विशेष रुचि थी. हालांकि वे कांग्रेस की बीट पर तैनात थे लेकिन दिल्ली में उनका शव पहुंचने पर सभी दलों के नेताओं की मौजूदगी इस बात का सबूत थी कि उनकी मित्रता का दायरा कितना बड़ा है. उनके सहयोगी और वरिष्ठ कैमरामैन **गोपाल बिष्ट** 1995 में शुरुआत में ही **आजतक** में आ गए। हालांकि उन्हें अपना बीटा कैमरा बहुत याद आता था लेकिन नई तकनीक से उनके कंधे का बोझ हल्का हो गया था. उनके सहयोगी उन्हें ऐसे कैमरामैन के रूप में याद करते हैं, जिसकी आंख से कुछ भी नहीं छूट पाता था. राजीव शुक्ल के रू-ब-रू के पहले प्रकरण में सिंधिया पहले अतिथि थे और बिष्ट पहले कैमरामैन. अब इसे संयोग कहें या दुर्योग। इसी प्रकार **हिन्दुस्तान टाइम्स** की विशेष संवाददाता **अंजू शर्मा** भी उस दुर्घटना में हम सबों से छीन ली गई। **अंजू** को मृत्यु के बाद **बेस्ट रिपोर्टर अवार्ड** से सम्मनित किया जाएगा। यह पुरस्कार उन्हें विधान सभा के कार्यवृत को बड़ी निष्ठा और सही-सही रिपोर्ट करती थी।

-दीपक कुमार, दिल्ली से

@PJL SET RESOLUTION=600

त्रिमूर्ति ज्वेलर्स

बाईपास रोड, चास (बोकारो)

दूरभाष 65769, फैक्स 65123

त्रिमूर्ति अलंकार

त्रिमूर्ति पैलेस, (रूपक सिनेमा के पूरब)

बाकरगंज पटना 800004

दूरभाष–662837

आधुनिक आभूषण के निर्माता नए डिजाइन, शुद्ध सोने चाँदी के तथा हीरे के गहनों का प्रमुख प्रतिष्ठान

परीक्षा प्रार्थनीय

सुरेश, राजीव एवं सुनील

Science and Ethics work together
at

PATNA BONE AND SPINE HOSPITAL

(A MODERN CENTER FOR ADVANCED ORTHOPAEDIC SURGERY)

ORTHOPAEDIC SURGERY ONLY

- All kinds of specialised **Spinal Surgery**
- Interdisciplinary Super Speciality Services like Thoracic, Vascular, Neuro, Plastic, Micro Surgery, Physiatry, Facio Maxillary Surgery etc.
- Opertion theatre equipped with Cardiac Monitor, Oxymeter, Modern Ortho Traction table, etc.
- **Economy**, uncompromised with **High Standard Quality & Care**

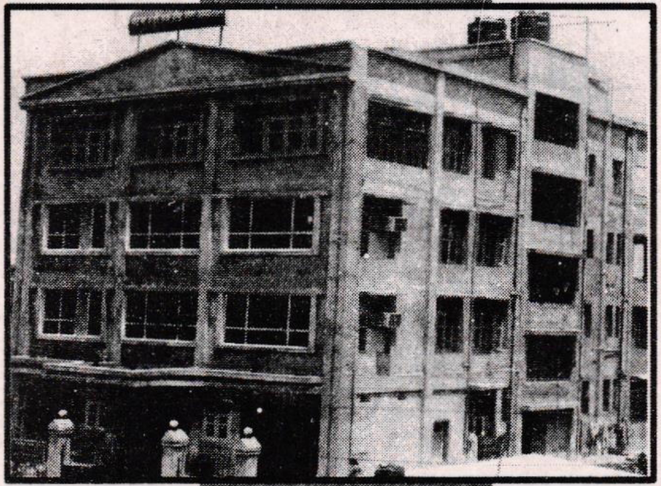

All modern procedures for trauma & fractures.

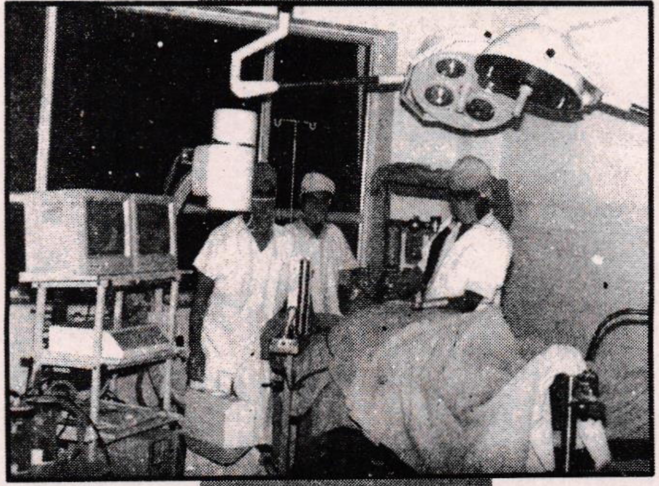

Illizarov - The ultimate for Limb Deformities, Shortening & difficult fracture andBone Gap
ESFS - The best possible for Campound Fractures
Interlocking Nails,
Gamma Nails - No plaster technique
DHS, ICS, CCS etc. for Articular Fractures
Total Joint Replacement including total elbow replacement
Total care centre for **Acute spinal Cord Injury.**
Arthroscopic Surgery.

expression

THE DEDICATED TEAM

- **Dr. V. K. Sinha.** MS, FICS, PhD
- **Dr. Shankar Acharya.** MCh, Liverpool, MS, DNB, FRCS (Glaso), FRCS (Eden), FRCS, Ortho(UK)
- **Dr. Surendra Rai.** MS, FICS, MCh (Plastic) • **Dr. Girish Sharan.** MS, MCh (Neuro) • **Dr. Birendra Kishore.** MS, MCh-MICRO
- **Dr. Q. Hoda.** MS (Ortho) • **Dr. K. P. Yadav.** MS, (Thoraco -Vascular) • **Dr. Alok Kumar.** BDS, Facio Maxillary, FFDRCSI.

A - 3, Doctor's Colony, Kankarbagh, Patna - 800 020. Tel. : 0612 - 361180

R.N.O. Regd.No. DEL HIN/1999/791

पटना शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र
के
कर्मठ एवं सुयोग्य उम्मीदवार
डॉ० (प्रो०) अर्जुन प्रसाद सिन्हा

शिक्षकों का हमदर्द और कुछ कर दिखाने की तमन्ना

चुनाव 28 अप्रैल 2002

- शिक्षा के क्षेत्र में लगभग तीस वर्षों का अनुभव
- सरदार पटेल महाविधालय में प्राचार्य पद पर कार्यरत
- 1990 के इसी चुनाव में द्वितीय स्थान प्राप्त
- सदैव जमीन से जुड़े रहे
- कर्मठ, निष्ठावान, ईमानदार तथा विश्वसनीय
- शिक्षकों की पीड़ा और उनके दर्द को नजदीक से देखा

इनके कृतित्व पर एक नजरः–

- अब तक इनके पर्यवेक्षण में आठ पीएच० डी०
- पाँच पी० एच० डी० के पंजीकृत
- चर्चित, प्रतिष्ठित व स्तरीय गणित की राष्ट्रीय/अर्न्तराष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में बारह पत्र प्रकाशित
- भारत के विभिन्न संस्थानों तथा विश्वविघालयों द्वारा आयोजित सेमिनार में आलेखों का पाठ
- मैथेमेटिकल जर्नल के सम्पादक
- विधानपरिषद् में शिक्षकों के प्रतिनिधि होने की भरपूर क्षमता
- एक भरोसेमंद और जबावदेह इन्सान
- शिक्षकों से सीधी बातचीत के आदी

आप अपना कीमती वोट देकर इन्हें विजयी बनावें यह आपकी गरिमा के अनुरूप होगा।

मतदाता
पटना शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र

सम्पर्क स्थल–पंचवटी, गुफापर, बिहार शरीफ (नालन्दा) दुरभाष: 22365

प्रकाशक, मुद्रक व स्वामी सिद्वेश्वर द्वारा ई–50, एफ. एफ सी. झंडेवालान, रानी झांसी रोड़, नई दिल्ली–55 से प्रकाशित एंव प्रोलिफिक इनकारपोरेटेड, एक्स–47, ओखला, फेज–2, नई दिल्ली–20 से मुद्रित। –सम्पादकः सिद्वेश्वर